प्रकाशक
अ० वा० सहस्रबुद्धे, मंत्री
अखिल भारत सर्व सेवा-संघ
वर्धा (म० प्र०)

दूसरी बार १५,०००
जुलाई १९५५
मूल्य : आठ आना

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

# प्र स्ता व ना

इधर कई दिनो से एक ऐसी पुस्तिका की माँग थी, जिसमें भूदान-यज्ञ-आदोलन की जानकारी सिलसिलेवार, प्रामाणिक रूप से दी गयी हो। इसके साथ यह भी आवश्यक था कि जानकारी सक्षिप्त होते हुए भी पर्याप्त हो और सरल तथा रोचक भाषा मे लिखी गई हो। यह माँग इस पुस्तिका से बहुत बडी हद तक पूरी होती है। पिछले चार वर्षो का वृतात प्रामाणिक और हृदयगम रीति से इस पुस्तिका में लिखा गया है। वर्णन मे सजीवता है, तथा आन्दोलन की सैद्धान्तिक और वैचारिक भूमिका का एव साम्ययोगी क्रान्ति की प्रक्रिया का विवेचन सारगर्भित और मूलग्राही है।

इस पुस्तक की विशेपता यह है कि वह जितनी कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी है, उतनी ही पढे-लिखे नगरवासियो के लिए तथा ग्रामीण जनता के लिए भी उपादेय है। कार्यकर्ताओ के शिविरो में तथा निर्माण के केन्द्रो में इसका पठन और अध्ययन विशेप रूप से होना चाहिए।

पुस्तिका के लेखक भूदान-यज्ञ-आन्दोलन के एक होनहार तरुण, निष्ठावान् कार्यकर्त्ता और प्रतिभावान् प्रवक्ता है। देश के जिन युवक-युवतियो ने भूदान-यज्ञ-आन्दोलन को तरुणाई के उत्साह और तेज से समृद्ध किया है, उनमें उनका एक प्रमुख स्थान है। पुस्तिका में जो कुछ उन्होंने लिखा है, उसके पीछे जितनी उनकी निष्ठा है, उतना ही प्रत्यक्ष अनुभव भी है। जो कोई भूदान-यज्ञ-आन्दोलन की सांगोपांग जानकारी निरतर अपने सग्रह में रखना चाहता हो, उसे यह पुस्तिका अवश्य रखनी चाहिए।

मुरारपुर, गया
९-३-१९५५

—दादा धर्माधिकारी

# अध्ययन के सूत्र

# सिंहावलोकन

[ विनोबा ]

अपना यह देश बहुत बडा है। यहाँ के किसी भी लडके से पूछा जाय कि तुम कितने भाई हो, तुम्हारे देशवासी कितने है, तो वह छत्तीस करोड का आँकडा सुनायेगा। सिवा चीन के किसी भी देश के नागरिक की जबान पर इतना बडा आँकडा नही होगा। यूरोप के लोगो से पूछा जाये, तो कोई कहेगा एक करोड, कोई कहेगा दो करोड, कोई कहेगा चार करोड। इस तरह छोटे-छोटे आँकडे वहाँ पर सुनाये जाएगे। पर, हम तो इतने भाई है, इतना विशाल हमारा वैभव है। यह सब क्या है? हमे इस पर सोचना चाहिए। यह इसलिए है कि जैसे असख्य नदियाँ समुद्र मे जाती है और समुद्र सब नदियो को प्रवेश देता है, किसी को इनकार नही करता, उसी तरह भरत-भूमि ने दुनिया की सब कौमों का प्रेम से स्वागत किया और सबको प्रवेश दिया। मै एक मिसाल देता हूँ। पारसी लोग ईरान से आश्रय के लिए यहाँ आये। यहाँ के सहृदय लोगो ने उन्हें आश्रय दिया। उनके जो रीति-रिवाज थे, उनके अनुसार वे अपनी उपासना करते थे, अपना भक्ति-मार्ग चलाते थे। उसमे कोई बाधा हमने नही पहुँचायी। आज भी पारसी कौम इस देश को अपना देश समझती है और यहाँ पर अपने को सुरक्षित पाती है। मै एक मजेदार बात सुनाऊँगा। यहाँ पर जो पारसी आये, वे देवो की निदा और असुरो की प्रशसा करते हुए

आये। फिर भी यहाँ के लोगो ने कोई गलतफहमी नही होने दी। यहाँ पर तो देवो की स्तुति और असुरो की निंदा की जाती है। पारसियो में असुरो की स्तुति और देवो की निंदा की जाती है। उनकी भाषा में असुर का अर्थ ही भगवान् है। शब्द उल्टा पडता है, परतु अर्थ वही है। भगवान् को वे बडा भारी असुर अहुर-मज़्द, कहते है और देवो को कहते है भूत या पिशाच, जो भ्रान्त-मनुष्यो को तकलीफ दिया करते है। ऐसे देवो की उन्होने निंदा की है। परन्तु यहाँ के लोगोने अर्थ ग्रहण किया और शब्दो को सहन किया। यह वहुत वडी बात है। पारसी कौम, जो यहाँ पर आयी, वह आक्रमणकारी वन कर नही आयी। वे जब यहा आये, तो उनके पास कोई ताकत नही थी कि जिसके वल पर वे आश्रय माँगे। फिर भी वे आश्रय के लिए यहाँ आये और यहाँ के लोगो ने आश्रय दिया। भारत ने उनके भरण-पोषण का जिम्मा उठा लिया। यहाँ की जनता तो यहाँ के ज्ञानियो के विचारो पर ही चलती थी। इसीलिए हमारा विकास हुआ।

## महा-मानवों का समुद्र : भारत

आजकल यहाँ पर कई 'वाद' चलते है। वाद तो कई प्रकार के हो सकते है। विहार-वगाल का वाद चल रहा है। परन्तु विहार वाले यह माँग नही करते कि हम अपना राष्ट्र वनाना चाहते है और भारत से अलग होना चाहते है। न वगाल वाले यह माँग करते है कि हम अपना अलग राष्ट्र वनाना चाहते है। हम सव भारतीय है, भारतवासी है और एक राज्य में रहना चाहते है। ये जो दूसरे विवाद होते है, वे मामूली फुटकर वाद है।

उनके पीछे अभिमान की वृत्ति नही है। यद्यपि आजकल कुछ अभिमान हो गया है और कुछ कटुता भी पैदा की गयी है, फिर भी वहाँ उनमें अभिमान की वह वृत्ति नही है, जो यूरोप के देशो मे होती है। फ्रांस और जर्मनी के बीच कोई ऐसा पहाड नही है जो दोनों को अलग करे। परन्तु उनको ऐसे पहाड की आवश्यकता महसूस होती है। वे दोनो देश बिल्कुल नजदीक रहनेवाले है। उनकी लिपि एक है, धर्म एक है, भाषाए भी काफी मिलती-जुलती है। उनके बीच शादियाँ भी हो सकती है। परतु फ्रॉस के लोगोंने तय किया कि हमारा एक छोटा-सा अलग देश है और जर्मनी के लोगो ने तय किया कि हमारा जर्मनी एक छोटा-सा देश है। फ्रांस, जर्मनी और इग्लैण्ड के बीच जो लडाइयाँ हुई, वे राष्ट्रीय लडाइयाँ हुई। वे लडाइयाँ राष्ट्रीय मानी जाती है, 'सिविल-वार' या आपस की लड़ाइयाँ नही। लेकिन हिंदुस्तान में जो लड़ाइयाँ हुईं, मराठो की उडीसावालो के साथ या रजपूतो के साथ, ये 'सिविल वार्स' (अन्तर्गत लडाइयाँ) मानी जाती है। ऐसी ही हमारी लडाई है। यह कुछ अभिमान की चीज है कि यहाँ पर जो लडाइयाँ हुई, ये आपस-आपस की लड़ाइयाँ मानी गयी। बाहर के लोगो ने भी वैसा ही माना और यहाँ के लोगो ने भी माना कि वे आपस-आपस की लडाइयाँ थी। रूस को छोड़कर यूरोप के बराबर बडा हिंदुस्तान देश है। यूरोप से कुछ कम विविधता यहाँ पर नही है। यहाँ कई भाषाएँ है, जैसे यूरोप मे है। वहाँ पर तो एक ही लिपि है, परतु यहाँ अनेक लिपियाँ है। वहाँ पर एक ही धर्म है, लेकिन यहाँ अनेक धर्म है। इतना अधिक फर्क होते हुए भी हम अपने को एक देश के निवासी मानते है और वहाँ के लोग अपने को

एक खड के निवासी मानते है। वहाँ के कुछ देश तो हमारे प्रातो के एक हिस्से के जितने छोटे है, फिर भी वे अपने को अलग राष्ट्र मानते है, क्योकि हरएक की अपनी एक अलग भाषा है। हिंदुस्तान में वैसी बात नही सुनी जाती। यहाँ के समाज-शास्त्र में एक व्यापक वुद्धि है। इसलिए रवीन्द्रनाथ ने गाया है कि यह—'महा-मानवो का समुद्र' है। इसमें अनेक लोग आये और अब भी आयेंगे। हमारे देश मे विविधता होते हुए भी एकता है।

## एकता अंग्रेजों की बदौलत नहीं

यह एकता अग्रेजो ने नही बनायी है, जैसा कि कुछ लोग सोचते है। अग्रेज तो चाहते थे कि इस देश के अधिक-से-अधिक टुकडे हो जायें और उन्होने वैसी कोशिश भी की। वे लका को अलग कर सके, तो उन्होने अलग किया। ब्रह्मदेश को अलग कर सके, तो अलग किया। हमने भी इसका कोई विरोध नही किया, क्योकि हम मानते थे कि अपने नजदीक वाले देश अगर अलग रहना चाहते है, तो रहने दो। अग्रेजो ने तो और भी भेद वढाये। जैसे हिंदू-मुसलमानो के। पहले से कुछ भेद तो था ही, परन्तु उन्होने उसे वढाया और उसके परिणामस्वरूप हिंदुस्तान के दो हिस्से वने। यह तो यहाँ की सभ्यता है, जिसके कारण हमने इसे एक देश माना है। अग्रेजो ने तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान वनाया। कुछ लोगो का यह खयाल है कि अग्रेजो के कारण यहाँ पर अग्रेजी भाषा चली और हिंदुस्तान के सव प्रान्तो के लोगो ने अग्रेजी सीख ली, जिससे वे एक-दूसरे के साथ वातचीत कर सके और इसी से एकता पैदा हुई, परन्तु यह

विचार ही गलत है। हम तो वेदो के जमाने से एकता की भावना पाते है, जब कि आमदरफ्त के कोई साधन मौजूद नही थे। उस समय के ऋषियो के अनुसार सिंधु से लेकर हिमालय की गुहा तक एक समूचा देश माना गया। यहाँ एक सभ्यता पली। असख्य यात्री देश के इस सिरे से उस सिरे तक यात्रा करते थे। असख्य सत्पुरुष हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक सद्विचार का प्रचार करते रहते थे। इसीलिए हमारा एक देश बना है। यह विरासत हमे मिली है। इसलिए हम श्रीमान् है।

## इतिहास की दी हुई जिम्मेवारी

पर बडी विरासत सँभालने के लिए अकल चाहिए। यदि यह अकल नही रही तो हमारी जो ताकत है, देश की जनसख्या और विस्तार, वह ताकत नही, हमारी कमजोरी साबित होगी। इसलिए इस देश के इतिहास ने हम पर बड़ी भारी जिम्मेवारी डाली है कि यहाँ पर जो मसले पैदा होगे, उनका हल हम प्रेम और शान्ति के तरीके से करे। अगर हम इस जिम्मेवारी को नही सँभाल सके, तो इस देश की विशालता हमारी कमजोरी साबित होगी और परिणामस्वरूप हमारी आजादी भी नही टिकेगी। इतिहास हमें सिखाता है कि इस देश पर दूसरो के जो आक्रमण हो सके, उसका कारण यही है कि यहा के लोगों को यहाँ की विविधता का जो अंदरूनी भान होना चाहिए था, वह नही हुआ। इसके कारण भेद बढे, फिरका-परस्ती हुई और एक-दूसरे के साथ विरोध शुरू हुआ। इसीलिए हिंदुस्तान को वर्षो तक गुलाम रहना पडा।

## शांति और प्रेम का ही एकमात्र तरीका

इसलिए हमारे देश के लिए शान्ति और प्रेम का तरीका अनिवार्य हो जाता है। मै तो यह कहूँगा कि यह हमारा सद्-भाग्य है कि परमेश्वर ने ऐसी योजना कर रखी है कि हम शाति और प्रेम से ही अपने मसले हल करे। मैने इसे 'सद-भाग्य' कहा है, क्योकि अगर हम अपने मसले शाति और प्रेम से हल न कर सकें, तो हमारी ताकत और दौलत नही बढ सकती, ऐसी योजना परमेश्वर ने की है। अगर हिंदुस्तान फौजी ताकत बढाने की सोचेगा, तो वह बिलकुल ही कमजोर हो जायगा, गुलाम हो जायगा। उसे अमेरिका की शरण मे जाना पडेगा या रूस की शरण मे जाना पडेगा। किसी-न-किसी की शरण मे जाना पडेगा। फिर हम आजाद नही रह सकेंगे। इसलिए मै इसे बडा भाग्य मानता हूँ कि इस देश के लिए यह अनिवार्य है कि सारे देश के मसले शाति और प्रेम के तरीके से हल किये जावे।

जैसे इस देश के लिए यह अनिवार्य है कि देश के मसले शाति के तरीके से हल किये जावे, वैसे ही विज्ञान के लिए भी यह अनिवार्य है कि दुनिया अपने मसलो को हल करने के लिए शाति और प्रेम का तरीका ढूंढे। आज तो जो शस्त्र है, वे मानव के हाथ मे नही है। शस्त्र-शक्ति मे चाहे जितनी बुराइयाँ हो, परन्तु यदि मानव के नियत्रण मे रहे, तो वे कुछ लाभदायी भी साबित हो सकती है। परतु आज विज्ञान का इतना विकास हुआ है कि शस्त्र-शक्ति मानव के हाथ मे रही ही नही है। मान लीजिये कि

यहाँ पर किसी ने बीड़ी पीकर बिना बुझाये फेंक दी, जिसके कारण घर को आग लग गयी, तो उसे बुझाने की शक्ति उस शख्स मे नही होती। उसने जानबूझ कर तो आग लगायी नही, फिर भी आग तो लगायी ही। उसके हाथ में आग लगाने की शक्ति है और वह आसानी से घर को आग लगा सकता है, परतु आग बुझाने की शक्ति उसके हाथ मे नही है। विज्ञान के जमाने में जो आग लगती है, उस आग की लपटो से न सिर्फ कुछ घर, बल्कि देश के देश जल जाते है। मानवता का और मानव-जाति का समूल उच्छेद करने की शक्ति विज्ञान ने निर्माण की है। इसलिए दुनिया के लिए यह जरूरी है कि दुनिया के जो मसले है, वे शाति और प्रेम के तरीके से हल हो। ऐसा आग्रह न हो कि एक देश में जो रीति या तरीका चले, वही रीति या तरीका सब देशो मे चले। आग्रह की हमारी वृत्ति नही है। हरएक देश के अपने भिन्न-भिन्न गुण होते हैं। इसलिए हर देश मे एक ही प्रकार की राज्य-व्यवस्था और समाज-रचना चलनी चाहिए, ऐसा आग्रह हम न रखे। हरएक देश अपनी खास परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग समाज-रचना कर सकता है, ऐसी अनाग्रही वृत्ति हम रखेंगे, तो दुनिया मे शाति रहेगी। नही तो सारी दुनिया के लिए अशाति की नौबत आयेगी। आज हिंदुस्तान का जो अतर्राष्ट्रीय रूप आया है, हिंदुस्तान का जो स्वभाव है और हिंदुस्तान की जो ऐतिहासिक जिम्मेवारी है, उन सबके कारण हमारे लिए शाति का तरीका अनिवार्य है, और सारी दुनिया के लिए भी विज्ञान के कारण शाति का तरीका अनिवार्य है। हमारे लिए तो अपनी परिस्थिति के कारणो से, वही विज्ञान के

कारण सारी दुनिया के लिए अनिवार्य हो गया है। अपने मसले हल करने के लिए शाति का ही तरीका अब सबको अख्तियार करना पडेगा। हमें यह देखना होगा कि आग न लगने पाये और लगे तो बुझ सके।

## लोहिया के भारतीय परंपरा के उद्गार

जब इदौर में गोली चली, तब मुझसे नही रहा गया। मैंने कहा कि स्वराज्य में इस तरह गोली नही चलनी चाहिए, और स्वराज्य मे आदोलन चलाने वालो पर भी यह जिम्मेवारी है कि वे अपने पर जब्त रखे, अकुश रखे, हिंसा न होने दे। सरकार वालो को भी यह वृत्ति रखनी चाहिए कि गोली न चले। इसलिए हमें खुशी है कि जब त्रावणकोर-कोचीन में गोली चली, तब राम-मनोहर लोहिया की आत्मा पुकार उठी। यद्यपि वहाँ पर सोश-लिस्ट पार्टी की ही सरकार थी, फिर भी उनकी आत्मा की पुकार प्रकट हुई। उस पर फिर चर्चा हुई। उसके पक्ष में और विपक्ष में जो बाते की गयी, उन सबमे मै नही पडना चाहता। परतु उनके हृदय से स्वयस्फूर्ति से जो उद्गार निकला, यद्यपि वहाँ पर उन्ही की सरकार थी, उस उद्गार को हम भारतीय उद्गार कहते है और उसके साथ हमारी पूर्ण सहानुभूति है।

## हिंसा के बारे में एक गलत खयाल

आजकल यह जो खयाल हुआ है कि हिंसा से सारे मसले हल हो सकते है और जल्द हल हो सकते है, वह गलत है। हिंसा

से सारे मसले न तो हल हो सकते हैं और न जल्द ही हल हो सकते हैं। मसले हल हुए, ऐसा आभास होता है। अगर उस आभास से हमने मान लिया कि मसले हल हो गये, तो वह गलत होगा। मान लीजिए कि कही गदगी पडी है और देर लगेगी, इस खयाल से झाड़ू नही लगायी गयी। उस पर जाजम बिछा दिया और मान लिया कि स्वच्छता हो गयी। लोग बैठ गये और सभा आरभ हुई। फिर नीचे से एक बिच्छू निकला और उसने किसी को काटा, और सभा समाप्त! झाड़ू लगाने मे देर होगी, यह सोच कर गदगी को ऊपर से ढक देने से स्वच्छता नही हो जाती। स्वच्छता के लिए कुछ करना ही होता है। सस्कृत मे एक कहावत है कि बच्चा गेहूँ बोने गया और उसने एक दाना बोया। एक दिन राह देखी, नही उगा, दूसरे दिन, तीसरे दिन, चौथे दिन राह देखी, फिर भी नही उगा। आखिर पाँचवें दिन बाहर जरा-सा अकुर उठा तो बच्चे को लगा कि जरा-सा अकुर फूटने में इतनी देर क्यों हुई? उसने उसे बढाने के लिए ऊपर से खीच लिया। पर जब दूसरे दिन देखा तो वह अकुर क्षीण हो गया था। ऊपर से खीचने से अकुर नही बढ सकता। उसके लिए तो समय लगता है। वह लगना भी चाहिए। उसमें कम समय लगे ऐसी जो कोशिश चलती है, वह टेढी कोशिश होती है। उससे तो सारा मामला ही टेढा हो जाता है। इसलिए हिसा से मसले जल्द हल होते है, यह खयाल भी गलत ही है।

## देह-प्रधान तालीम के नतीजे

आजकल लोगो का हिसा पर इतना विश्वास है कि वे

मानते है कि हिंसा से ही सारे मसले हल हो सकते है। यह खयाल गलत है। घर मे भी माँ-बाप बच्चे को तमाचा लगाते है। इसका मतलब यह है कि उनका प्रेम पर, अपनी समझाने की शक्ति पर उतना विश्वास नही है, जितना कि तमाचे पर है। स्कूल में भी यही होता है। बच्चा देर से आता है, तो उसे नियमितता सिखाने के लिए गुरू छडी मारता है। फिर क्या होता है? बच्चा नियमित स्कूल मे आने लगता है। तब वे कहते है कि देखो, काम हो गया। छडी का स्पर्श जहाँ उसकी देह को हुआ, वहाँ उसे सद्गुण की प्रेरणा हुई! अत सद्गुण की प्रेरणा के लिए छडी का स्पर्श, डडे का स्पर्श, कितना लाभदायी है! ऐसा ही कहा जाता है। परतु व्याज के कारण मूल पूंजी गँवायी। छडी मारने से बच्चा स्कूल मे नियमित तो जाने लगा, परतु उसके साथ-साथ उसने डर भी सीखा। उसको यह तालीम मिली कि तुझे किसी ने मारा तो डरना चाहिए। इस तरह उसने निर्भयता छोडी। निर्भयता छोडकर नियमितता हासिल हुई। निर्भयता की ज्यादा कीमत है या नियमितता की? आपने एक पैसा कमाया और रुपया गँवाया। इससे क्या होता है? बच्चा चद दिनो के लिए नियमित स्कूल में जाने लगता है, परतु बाद में दबाव न रहा, तो वह नियमितता भी भूल जायगा, यही सभव है। इसलिए नियमितता भी टिकने वाली नही है और साथ-साथ डर तो पैदा हुआ! इस तरह की तालीम खतरनाक है। आज तो यह बच्चा डर के मारे शिक्षक या मातापिता के वश मे है, लेकिन कल किसी जालिम के भी वश हो जायेगा। यह जो तालीम है, वह बच्चे को देह-प्रधान बनानेवाली है! उसे सिखाया जाता है कि देह पर खतरा हो,

तो फौरन सामने वाले की शरण मे जाना चाहिए। इस तालीम के माने यह है कि हम अपने सद्गुणो को खतरे मे डालते हैं। आखिर जुल्मी लोगो के पास क्या सत्ता है? यही तो सत्ता है कि वे मार सकते है, पीट सकते है, धमका सकते है। तो फिर इस तालीम से सारा-का-सारा नागरिक-शास्त्र खतम हो जाता है। इसलिए जब हम देखते है कि हमारे मसलो के हल होने में देर है, और सोचते है कि हिंसा करने से मसले जल्द हल हो जायेंगे, तो यह एक भ्रम ही है। इस भ्रम मे अनादि काल से लोग पडे है। दस हजार साल से हिंसा के प्रयोग हुए हैं और एक हिंसा से दूसरी हिंसा की तैयारी होती है, हिंसा की प्रक्रिया होती है, ऐसा अनुभव आया है। लेकिन फिर भी मनुष्य मान लेता है कि हिंसा की लडाई में हम इसलिए नही हारे कि हिंसा के तरीके मे ही दोष है, बल्कि इसलिए कि हममे हिंसा-शक्ति कम थी। मनुष्य इस तरह मान लेता है। शस्त्रास्त्र की लडाई मे जो हारते है, वे यह नही समझते कि हिंसा में कोई शक्ति नही है, बल्कि वे तो यह समझते है कि हम काफी हिंसक नही थे, इसलिए ज्यादा शक्ति बढाने की कोशश करनी चाहिए। फिर जो हारा हुआ होता है, वह शस्त्रास्त्र बढाने की कोशिश करता है और फिर जीतता है। इसके बाद जो हारता है, वह भी शस्त्रास्त्र बढाता है।

## युद्ध की गंगोत्तरी हमारे ही घर में

इस तरह एक-दूसरे को देख कर हिंसा बढाते-बढाते हम आज 'टोटलवार' संकुल-युद्ध तक आये है। अब एक व्यक्ति की या

एक जमात की दूसरे व्यक्ति या जमात के साथ लडाई नही चलती। अव तो एक राष्ट्र-समूह की दूसरे राष्ट्र-समूह के साथ लडाई चलती है। लेकिन इस युद्ध का उद्गमस्थान, इस युद्ध की गगोत्तरी कौन-सी है, जहाँ से यह गगा वह निकली है? ऐटम बम या हायड्रोजन बम तक जो मामला बढा है, उसका आरभ कहाँ से हुआ? उसका आरभ परमप्रिय माता-पिता और गुरू से हुआ है, जिन्होने अपने बच्चो को सद्गुण सिखाने के वास्ते मारने-पीटने का तरीका अख्तियार किया। ऐटम और हायड्रोजन बम की गगोत्तरी वे ही है। अगर माता-पिता और गुरू बच्चो को ऐसी तालीम दें कि यदि हमारी बात तुम्हें जंच जाय तभी उसे मानना, न जंचे तो न मानना, तब देश बचेगा। इसी तालीम से हम विचार-प्रधान बनेंगे। जो बात जँचती है, वही माननी चाहिए, जो नही जँचती है, उसको नही मानना चाहिए। लेकिन आजकल तो उलटा चलता है। बच्चो को सर्वत्र पीटा जाता है। बच्चो को सिखाना चाहिए कि जो बात तुमको नही जँचती उस पर अमल मत करो, फिर चाहे कोई तुम्हें मारे या पीटे, तो भी उसकी बात को कबूल मत करना और मार खाते रहना। यह जो मार खाने की शक्ति है, यह जो तितिक्षा, यानी शाति से मार खाने की शक्ति है, यही निर्भयता है। शस्त्रो पर विश्वास रखना निर्भयता का नही, डरपोक-पन का लक्षण है। इसीलिए यह जरूरी है कि हम शिक्षण मे यह तत्त्व दाखिल करें कि भय के वश मे नही होना चाहिए। हम बच्चो को दो बाते सिखाये (१) हम किसी से डरेंगे नही, किसी को डरायेंगे नही। (२) हम किसी से दबेंगे

नही, हम किसी को दवायेंगे नही। यही वात गीता ने कही है —

'नायम् हन्ति न हन्यते'

—यह न मारता है और न मरता है।

## अभय की सबसे पहले आवश्यकता

इसलिए हम ऐसा तरीका अख्तियार करना चाहते है कि जिससे मसले हल हो जायँ और अशांति या मनक्षोभ पैदा न हो, वृत्ति मे भय न हो। हमारे इतिहास-वेत्ताओ को यह वात मालूम थी। इसलिए हमारे समाज-शास्त्र में एक शब्द था "अभय"। लेकिन आज उसके वदले "लॉ अँड ऑर्डर" (कानून और वन्दोवस्त) आया है। वे यह मानते है कि लोग भयभीत हो कर ही क्यो न हो, पर 'लॉ अँड ऑर्डर' मानते है। इस तरह हमने व्यवस्था-देवी को परमदेवी माना है। हम उसे कहते है कि 'हे देवी, तू परमदेवी है। तू ही हमारा संरक्षण करती है। तू ही हमारा आधार है।' इस देवी पर इतना विश्वास हो गया है कि नास्तिक लोग भी इसे मानते है। कम्युनिस्ट लोग कहते है कि हम ईश्वर को नही मानते। तो हम उनसे कहते है कि आप ईश्वर को तो नही मानते, लेकिन उसके वाप को मानते है। प्रवन्ध-देवता को तो मानते है। कुछ लोग तो कहते है कि व्यवस्था करते-करते कुछ लोगों को सफा करना होगा। फिर इस तरह का सफाया करते-करते ऐसी व्यवस्था वनेगी कि जिसमे सघर्ष ही मिट जायगा। सघर्ष तो उनका परम सत्य है। जव हम पूछते है कि सघर्ष मिटेगा तो क्या होगा, तो वे कहते है कि फिर तो

सृष्टि के साथ सघर्ष आरभ होगा। यह सारा विचार ही गलत है। हम भी व्यवस्था की कीमत मानते है। अभी हमने आप लोगो को समझाया कि शात रहिए। परतु अगर हम समझाने के बदले मार-पीट शुरू कर देते, तो आप शात तो रहते, लेकिन सुन नही पाते, ज्ञान हासिल नही कर पाते, क्योकि वह तो बाहर की शाति हो जाती, अदर भय रहता। इसलिए वह शाति नही कहलाती। क्योकि अदर जो उबलता रहता है, वह क्षोभ है। अगर क्षोभ प्रकट न हो और अदर ही रहे, तो वह ज्यादा खतरनाक होता है। प्रकट हो जाये, तो कोई हर्ज नही है। पानी की भाफ अदर दबी रहती है, तो उसकी शक्ति से ट्रेनें भक-भक चलती है। क्षोभ प्रकट हो जाये, तो उसमे उतनी ताकत नही होती। लेकिन हम उसे अदर दबाये रखें, तो ज्यादा अनर्थ हो जाता है। आज आपने यहाँ पर शाति इसलिए रखी कि हमने समझाया था, धमकाया नही। लेकिन हम डर पैदा करके शाति स्थापित करें, तो व्यवस्था-देवी, देवी नही रहती है, वह तो व्यवस्था-राक्षसी बन जाती है। इस राक्षसी के पेट मे इतनी अव्यवस्था होगी कि उसकी अपेक्षा बाहर की अव्यवस्था हमे मजूर करनी पडेगी। इसलिए व्यवस्था से भी ज्यादा आवश्यक है, 'अभय'।

## एक होने की अकल

आज हमने सुना कि झरिया एक बडा कुरुक्षेत्र है। यहाँ पर लडाइयाँ चलती है। दुर्योधन, दुशासन और कितने कौरव पुत्र यहाँ है, हम नही जानते। लेकिन यहाँ पर मजदूर रहते है। उनसे काम लेना है, हर हालत में काम लेना है, ऐसा सोचा जाता

है। उनसे कोयला निकलवाना है। अगर जमीन से कोयला न निकला, तो देश का मुख काला हो जायगा। इसलिए उनसे काम करवाना है, ऐसा सोचा जाता है। लेकिन मजदूर का मतलब है, श्रमशील। जहाँ श्रमशील होते है वहाँ तो शाति होनी ही चाहिए। जहाँ आलसी लोग होते है, वहाँ अशाति होनी चाहिए। जहाँ श्रम करने वाले होते है, वहाँ तो लक्ष्मी पैदा होती है। परतु आज तो इससे उलटी बात हो रही है। जहाँ श्रम करने वाले होते है, वहाँ पर दो पक्ष खडे हो जाते है। यह माना जाता है कि उन दोनो के हित भिन्न-भिन्न है। एक के दो बनाना, दो के चार बनाना, इस तरह टुकडे-टुकड़े करना, यह अकल तो दुनिया मे सबको हासिल है। परन्तु चार के दो बनाना, दो का एक बनाना, यह अकल हासिल नही है। टुकडे करने की अकल, जिसे गीता ने राजसी-बुद्धि कहा है, जिसके कारण कई शाखाएँ फूटती है, इसका उसके साथ मिलता नही, उसका इसके साथ मिलता नही, यह अकल तो सबको हासिल है। परतु सबमे जो समान अश है, उसको ग्रहण करके सबको उस पर एक करना, यह अकल सूझनी चाहिए।

## गुंडों का राज्य क्यों है ?

मुझे बताया गया कि यहाँ पर गुडो का राज्य चलता है। लेकिन जहाँ गुडो का राज्य न हो, ऐसी जगह ढूंढने पर भी कही नहीं मिलेगी। एक गुडे वे होते है जो गुडे कहलाते है और एक गुडे वे होते है, जो सेनापति कहलाते है, कार्यकर्ता कहलाते है। सोचने की बात है कि हम सारे शिक्षित लोग अपनी रक्षा का

आधार पुलिस पर, सेना पर रखते है। इससे अधिक अनर्थ क्या हो सकता है? इससे अधिक पराधीन दशा कौन सी हो सकती है? और ये सिपाही भी कौन होते है? इनमे क्या गुण होते है? जिसकी छाती बत्तीस इच की हो, वह सिपाही बनता है। बस यही है उनका गुण और ऐसो पर हम अपने देश का आधार रखते हैं। और फिर उसके लिए क्या-क्या करना पडता है? यह सब सोचना चाहिए। उधर बबई में शराबबदी हुई, तो वहाँ पर माँग की गयी कि सेना को उससे मुक्ति मिलनी चाहिए। सेना को शराब की सहूलियत होनी चाहिए। तब हमने सोचा कि रावण की सेना मे तो सब लोग शराब पीते थे, परतु रामजी की सेना मे जो बदर थे, उन्हे शराब की जरूरत नही महसूस होती थी। हनुमान को शराब की जरूरत नही थी। इसलिए वह सेना, जो राष्ट्र की रक्षक कहलाती है, वह राजसी है या सात्त्विक है, इस पर सोचना चाहिए। लेकिन हम तो गुडो को हनुमान की पदवी देना चाहते है। हम सेना को अपनी रक्षा का आधार मानते है। तुलसीदासजी ने 'हनुमान चालीसा' लिखा। रावण भी तो ताकतवर था, पर उसने 'रावण-चालीसा' नही लिखा। क्योकि हनुमान की ताकत हमे बचाने वाली ताकत है, रावण की ताकत नही। हनुमान की ताकत से ही देश बचेगा, रावण की ताकत से नही। जिन सिपाहियो को आपको शराब पिलानी पडती है, भोग के साधन देने पडते है और रणक्षेत्र मे भेजने पर जिनके भोग-विलास के लिए कन्याएँ भेजनी पडती है, उनकी अनीति को भी नीति मानना पडता है। हमने सुना—'वॉर बेबीज' का यानी, युद्ध मे पैदा हुए बच्चो का सवाल। हम ताज्जुब मे रह गये कि युद्ध

से वच्चे कैसे पैदा होते है? वहाँ पर तो लोग मरते है। लेकिन आधुनिक युद्ध मे वच्चे पैदा होते है। ये फौजे हमारा आधार है, ऐसा कहा जाता है। अगर हमारे पवनार-आश्रम की रक्षा करनी है, तो कौन करेगा? ध्यान-योगी सोचता है कि ऊपर से वम पडेगा, तो हमारा ध्यान कैसे होगा? क्या पुलिस हमारी रक्षा करेगी? इसी तरह जव तक हमारे देश की रक्षा गुडो पर निर्भर है, जव तक यह स्थिति है, तव तक गुडो का ही राज्य चलेगा। उसे आप चाहे जो नाम दे, पर राज्य गुडो का ही चलेगा। कोई नाम देने से असलियत नही मिटेगी। इसलिए हम चाहते है कि हमारे मसले शाति के तरीके से हल हो।

## कत्ल से, कानून से या हृदय से?

कुछ लोग कहते है कि आपका जो भूदान-यज्ञ का कार्य चल रहा है, उसमे देर लगेगी, इसलिए कानून से जल्द काम क्यो नही करवा लेते? ये सोचते है कि कानून से काम जल्द हो जाता है, कत्ल से और भी जल्द हो जाता है। मै मानता हूँ कि कत्ल से काम जल्द होता है। मान लीजिए कि हमारे सारे मजदूर उठ खडे हो जायें और एक तारीख मुकर्रर करे, जैसे कि २६ जनवरी, और उस दिन सव मालिको को कत्ल कर दे, तो विनोवा जो काम दस साल मे करता, वह एक दिन मे होगा। मै मानता हूँ कि यह हो सकता है। लेकिन क्या यह कोई हल है? लोग सोचते है कि कानून से क्या नही हो सकता? लेकिन क्या कानून मे आप दयालु वन सकते है, धार्मिक वन सकते है? उधर ववई मे कानून वना कि स्कूल के वच्चो को फाउंटेनपेन इस्तेमाल नही करनी चाहिए,

क्योकि उससे अक्षर विगडते है। क्या वह काम भी हम बुद्धि से नही कर सकते ? क्या शिक्षक विद्यार्थियो को इतना भी नही समझा सकता ? आजकल तो यह बात चली है कि सब कुछ कानून से हो। ये जो सिनेमा चलते है, वे कितने गदे होते है ! वे हमारे बच्चो को विगाड रहे है। लोग कहते है कि उनको रोकने के लिए कानून वनाना चाहिए। मै यह नही कहता कि कानून न बने। कानून तो जरूर वनना चाहिए। अभी दिल्ली में माताओ ने सरकार से प्रार्थना की कि इन गदे सिनेमाओ को रोको, नही तो हमारे लडके गलत रास्ते पर जायेगे। हम नही मानते कि हुकूमत इसमें कुछ नही कर सकती। हुकूमत बहुत-कुछ कर सकती है, बशर्ते कि वह हुकूमत हो, यानी उसमे बुद्धि का भी अश हो। लेकिन यहाँ पर, जो इतने सारे शिक्षक और पालक बैठे है, जिनमें हिदू, मुसलमान, ईसाई सब है, वे देख रहे है कि हमारे बच्चे गलत रास्ते पर जा रहे है, निर्वीर्य बन रहे है, तो क्या ये उन्हे रोक नही सकते ? क्या वे नैतिक विचार का प्रचार नही कर सकते है ? हमारे देश में प्राचीन काल से नैतिक विचार का कितना प्रचार हुआ। गॉव-गॉव के अशिक्षित लोगो से पूछा जाय कि परमेश्वर कहॉ है, तो वे जवाब देते है, वह घट-घटवासी है। यह सब कैसे हुआ ? लाखो लोग धर्म के वास्ते तपस्या करके मरे। क्या यह कानून से हुआ है ? लाखो लोग कुभ-मेले मे जाते है, क्या कानून से जाते है ? हमारे जीवन की कई बाते कानून से नही हो सकती। हमारे हृदय के अदर जो चीज है, उसी मे यह सब होता है। क्या वह चीज खतम हो गयी है ? क्या लोग सिनेमा देखना बद करके गगन को आसमान में जो सिनेमा चलता है, उसे नही

देख सकते ? ऋषि कहता है कि पाप को मिटाना है, तो नक्षत्रों का दर्शन करो। उससे आँखो को ठढक पहुँचती है और मन मे उन्नत विचार आते है। क्या हम ऐसा सुदर सिनेमा नही देख सकते ? मै मानता हूँ कि कानून का भी इस बारे मे कुछ कर्तव्य है। इलाहाबाद मे हमे मानपत्र दिया गया। उसमें लिखा गया था कि वहाँ की म्यूनिसिपैलटी ने रात के सिनेमा पर रोक लगा दी थी, पर प्रातीय सरकार ने वह हटा दी। मै मानता हूँ कि सरकार का इस मामले मे बहुत बडा कर्तव्य है और अगर सरकार के लोग उस कर्तव्य का पालन नही करते है, तो दोप के पात्र है। लेकिन क्या हमारी भी कोई अपनी शक्ति नही है ?

## मसले भगवान् की कृपा हैं

भूमि का मसला कानून से हल नही हो सकता। कानून मे जमीन बँट सकती है, पर कानून दिलो को जोड नही सकता। यह जो आन्दोलन चल रहा है, वह दिलों को जोडने वाला आदोलन है। यह काम कानून नहीं कर सकता, चाहे कानून जमीन को बाँटने का स्वाग भले ही करे। इसलिए भूदान-यज्ञ की जो कीमत है, वह आप इस पर से न करे कि इसमे कितनी जमीन मिलती है और इस काम को पूरा करने मे कितना समय लगता है। ऐसा गणित न कीजिए। हम मानते है कि छह महीनो मे यह मसला हल हो सकता है, ऐसी हालत विहार मे पैदा हुई है। दान देने के लिए कोई 'ना' नही कह सकता, चाहे कोई छठे हिस्से से कम दे और छठा हिस्सा देने के लिए हमे बार-बार समझाना पड़े। परन्तु दान न देने की बात करने वाला मनुष्य दुर्लभ है। इसलिए अगर

इसी काम पर जोर दिया जाये, तो छह महीनो मे यह मसला हल हो सकता है, यह समझ लीजिए। इसकी कीमत तो, उसका जो नैतिक मूल्य है, उस पर से करनी होगी। इतना वडा मसला शाति से हल हो जावे, तो दूसरे मसले हल करने की भी शक्ति पैदा होगी। फिर हमारे हाथ में एक ऐसी कुजी आ जाती है, जिससे पचासो ताले खुल जायेंगे। हमारे देश में परमेश्वर की कृपा से काफी मसले है। मैंने 'परमेश्वर की कृपा' शब्द जानवूझ कर कहा है, क्योकि ईश्वर की अवकृपा होगी, तो देश मे मसले ही नही रहेंगे। ईश्वर की कृपा है, इसलिए मसले है और मनुष्य की वुद्धि से उन्हे हल करना है। हम तो ऐसे जमाने में जीना ही नही चाहेगे, जव मसले ही नही रहेगे। हम तो प्रभु से कहेगे कि हे प्रभु! ऐसे ही जमाने मे हमे जन्म देना, जहाँ मसलो का सामना करना हो, कुछ पुरुषार्थ करना हो। इसलिए मसलो का हल होना जरूरी है। परतु उन्हे कैसे हल किया जायेगा, इसका कारगर तरीका ढूंढना चाहिए। अव एक ऐसा तरीका हाथ आ गया है।

## युग को विचार की भूख है

जव जमीन गर्मी मे तपती है, तव वह ऊपर की वारिश की राह देखती रहती है। जव वारिश आती है, तव मिट्टी उसे पी लेती है। उसी तरह आज हिंदुस्तान को इस विचार की भूख है। इतने सारे लोग शाति से विचार सुनते है, इसका क्या कारण है? यही कि हिंदुस्तान को आज इस विचार की अत्यन्त भूख है, नही तो विनोवा की वात कौन सुनता? विनोवा के पास

कौनसी सत्ता है ? विनोबा के पास कोई सत्ता नही है । विनोबा सत्ता चाहता भी नही और विनोबा का सत्ता पर विश्वास भी नही है। इसलिए १९५७ में आप विनोबा को वोट मागते हुए नही देखेंगे। पिछले चुनाव के दिनो मे हम उत्तर-प्रदेश मे घूमते थे, तो हमसे कई लोगो ने कहा कि अभी चुनाव के दिन है, इसलिए थोडे दिनो के लिए अपनी यात्रा बद रखिये, क्योकि आपका भाषण सुनने ज्यादा लोग नही आयेगे। हमने कहा कि जितने कम लोग आयेगे, उतना ही हमें ज्यादा उत्साह मालूम होगा। हमने तो छह-सात बच्चो को ही दस-दस साल तक पढाया है। हमारा सख्या पर विश्वास नही है। लेकिन हमने उत्तर-प्रदेश मे देखा कि भूदान की मीटिग मे लोग जितनी तादाद मे आते थे, उतनी तादाद मे चुनाव की मीटिग मे भी नही जाते थे। जो चुनाव लड रहे थे, उन्होने ही हमे यह वात सुनायी । चुनाव की मीटिग मे तो तालियाँ वजती थी, शोरगुल होता था, लेकिन हमारी मीटिंग मे लोग चित्रवत् बैठे रहते थे। परितृप्त होकर सुनते थे। दान भी देते थे। मैंने यह भी कहा कि क्या गगा रुकती है ? हम भी क्यो रुकें ? जब लोग मुझे सुनाते थे कि चुनाव मे फलाना जीता और फलाना हारा, तो हम अखवार मे उसे पढते भी नहीं थे। अगर किसी ने सुनाया कि फलाना मिनिस्टर क्या वोला, आपको मालूम है ? तो मै पूछता कि मै क्या वोला, उसको मालूम है ? अगर मै क्या वोला, यह उसे मालूम नही है, तो वह क्या वोला, यह जानने की जिम्मेवारी मुझ पर नही है।

## सौ फीसदी दान-पत्र चाहिए

हम गणित के प्रेमी है, इसलिए गणित करते हैं। अबतक साढे तीन लाख लोगो ने दान दिया। अगर एक मनुष्य दान देता है, तो कम-से-कम दस मनुष्य हमारा विचार सुनते है। जितने काश्तकार है, उतने दानपत्र हमको मिलने चाहिए। हमें तो सौ फीसदी दानपत्र चाहिए। अगर देश मे छह करोड मनुष्य सपत्ति रखने वाले हैं, चाहे चार कौडी रखें, चाहे चार करोड रखे, तो हमें छह करोड सपत्ति-दानपत्र चाहिए। लोग हमसे पूछते है कि क्या किसी आदोलन मे इस तरह सौ फीसदी काम हो सकता हैं ? अभी वैद्यनाथ वाबू ने कहा कि सौ फीसदी दानपत्र कैसे हासिल कर सकते है, कुछ 'परसेंटेज' (प्रतिशत) लगाइये। तो हमने उनसे कहा कि हाँ, आप यह कर सकते है, पर हमारी माँग तो १००% दानपत्रो की रहेगी। अभी यहाँ पर जो सारे लोग बैठे हैं, वे सब-के- सब मरने वाले है। मरने में शत-प्रतिशत की बात है, तो फिर जीवन मे कम फीसदी क्यो ? यह आदोलन तो जीवन-निर्माण का आदोलन है। सारे लोग मरने वाले हैं। उस चुनाव में सारे वोट देने वाले है। यमराज की पेटी मे सब के वोट गिरने वाले है। जब मृत्यु के लिए इतना वोटिंग होता है, तो जीवन के लिए कम क्यो होना चाहिए ? जो विचार हम घुमा रहा है, हमारे पाँवो को प्रेरणा दे रहा है, वह विचार अगर आपको जॅच जाये, तो आपसे भी रहा न जायगा। विचार पर हमारी इतनी श्रद्धा है कि हम मानते है कि दुनिया मे विचार से वढकर कोई ताकत नही है।

## आत्म-शक्ति का महत्त्व

एक दफा एक भाई ने हमसे कहा कि 'जरा आपकी कुडली देखना चाहता हूँ। मगल और शनि का आप पर क्या असर पडता है, यह देखना चाहता हूँ।' तो मैने कहा कि 'मै जरा मगल की कुडली देखना चाहता हूँ कि उस पर मेरा क्या असर पडता है, क्योकि वह तो आखिर जड है और हम चेतन है।' हम ब्रह्म है। हमसे बढकर दुनिया मे कोई ताकत नही है। हम द्रष्टा है और सारी सृष्टि दृश्य है। हम इसे रूप देने वाले है। जैसे कुम्हार मिट्टी को रूप दे सकता है, उसी तरह हम इस सृष्टि को चाहे जो रूप दे सकते है। अगर यह विचार आपको जँच जावेगा तो आपमे ऐसी ताकत पैदा होगी, जो ऐटम बम मे भी नही है। जब मुझे लोगो ने सुनाया कि ऐटम बम कितना बडा है, शक्तिशाली है, तो हमने कहा कि हमारे पास 'आत्म-बम' है, आत्मा की शक्ति। आखिर ऐटम बम मनुष्य ने ही बनाया। जो उसे बना सकते है, वे उसे खतम भी कर सकते है। हम आपको बताना चाहते है कि आप कमजोर नही है। आप अत्यन्त बलवान है। आपसे बढकर बलवान दुनिया मे कोई नही है। परतु वह शक्ति शस्त्रो मे नही है, आत्मा मे है, प्रेम में है। उस शक्ति को प्रकट करने के लिए ही यह आन्दोलन चल रहा है।

सर्वोदय का यही नियम है कि पहले हमारे भाई को मिले और बाद मे हमे मिले। लेकिन जब लोग कहते है कि पहले मुझे मिले, तो वह सर्वनाश का तरीका है। इसलिए हम चाहते है कि सब लोग कहे कि पहले दूसरो को मिले। हम ऐसी सहज

व्यवस्था चाहते है। राक्षसी व्यवस्था हम नही चाहते। आप 'गीता-प्रवचन' का पठन करेगे, तो आपको आत्मा की शक्ति का भान होगा।

## गांधीजी का जन्म गुजरात में क्यों हुआ ?

अभी स्वामी आनद ने कहा कि यहाँ पर गुजराती समाज ज्यादा है, उसके लिए कुछ कहिये। हमने कहा कि हाँ, होना ही चाहिए। जहाँ गुड होता है, वहाँ चीटी होनी ही चाहिए। लेकिन गुजराती भाइयो पर वडी भारी जिम्मेवारी है। गाँधीजी गुजरात में पैदा हुए। यह कोई नसीव की वात नही है। उसके पीछे एक तत्त्व है। गुजरात ही एक ऐसा प्रदेश है, जहाँ का किसान मासाहार छोड वैठा है। सारी दुनिया में दूसरी जगह आम जनता में यह वात नही पायी जाती। यह जो अहिसा है, उसके परिणामस्वरूप वहाँ पर गाँधीजी पैदा हुए, जो कि दुनिया के लिए वहुत वडा प्रकाश है। हजारो साल के वाद भी हिंदुस्तान और सारी दुनिया इस वात को महसूस करेगी और जैसे आज भी हम वुद्ध-जयती मनाते है और मानते है कि उनसे कितना वडा प्रकाश मिल रहा है, उसी तरह गाधीजी के वारे में भी सोचा जायेगा। इसलिए हम गुजरातियो से आशा करते है कि गाधीजी के विचारो का दर्शन उनके जीवन के द्वारा प्रकट हो। वैसे, हम खास किसीके लिए कभी कुछ कहते नही। जैसे मेघ वरसता है, वैसे ही हम भी वरसते जाते है। पर आज स्वामी आनद ने कहा, इसलिए गुजरातियो के लिए खास वातें कह दी।

भरिया, (मानभूमि)
२७-१२-'५४

# भूदान-आरोहण

## : १ :

## यज्ञ के अध्वर्यु

बिनोवा ने एक दिन एक सुशिक्षित आदमी से कहा—"कृपा कर मुझे स्टेशन तक जाने के लिए रास्ते का एक नक्शा खीच दीजिए।" उन सज्जन ने राह चलते उत्तर दिया—"मै नक्शा नही खीच सकूंगा, क्योकि मै भूगोल का प्रोफेसर नही हूँ, मै तो विज्ञान का प्रोफेसर हूँ।"

आज ज्ञान के इस कदर टुकड़े हो गये है कि विज्ञान सिखाने वाले आदमी को अपने घर से स्टेशन तक का नक्शा खीचने लायक भी भौगोलिक ज्ञान नही है। यह हुई ज्ञान के टुकड़े-फरोशी की बात। लेकिन आज तो मनुष्य के ही टुकड़े हो गये है। आदमी के दिल, दिमाग और हाथो का आज एक-दूसरे से सम्बन्ध नही रहा। जो हाथ का काम करता है, वह दिमाग का काम नही करता। जो दिमाग का काम करता है, वह हाथ का काम नही करता। हाथ या दिमाग का काम करने वाले का हृदय मानो उसके साथ ही नही रहता।

विनोवा जिस साम्ययोगी समाज के बारे में कहते है, उसमें दिल दिमाग और हाथ का सम्बन्ध साबित रहेगा। उसमें ज्ञान,

कर्म और भक्ति का समन्वय होगा। उसमे आदमी के जीवन के टुकडे नही होगे।

विनोवा का जीवन ज्ञान, कर्म और भक्ति का त्रिवेणी-सगम है। इन तीनो के साम्य मे से ही साम्ययोगी विनोबा ने हमे भूदान-यज्ञ का विचार दिया है। इसलिए इस यज्ञ की बुनियाद समझने के लिए हमें विनोबा के जीवन के आधारभूत मुख्य विचार और उनका आचरण, जो दुनिया के सामने है, उसे समझना जरूरी है।

विनोवा ने ज्ञानयोग की जो साधना की है, वह सिर्फ बुद्धि की दृष्टि से नही, धर्म को जीवन में बुद्धिपूर्वक उतारने की दृष्टि से की है। उन्होने उतनी ही ज्ञान-साधना की है, जितनी धर्म को जीवन में लाने के लिए जरूरी है। मसलन, विनोबा इक्कीस भापाएँ जानते है। लेकिन "मै इतनी भापाएँ सीखा हूँ"—ऐसी मुहर लगवाने के लिए उन्होने ये सारी भाषाएँ नही सीखी है। दुनिया के सभी धर्मो के मूलग्रन्थ को पढने के लिए उन्होने सस्कृत, पालि, अर्धमागधी, अरबी, फारसी, लेटिन वगैरह भापाएँ सीखी है। भारत के सब सन्तो की वाणी का प्रसाद उनकी मूल भापा में ही चखने के लिए सारी भारतीय भापाएँ सीखीं। दक्षिण की तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड लिपियाँ वे वर्णमाला के तख्ते देखकर नही सीखे। उन लिपियो मे प्रकाशित गीता की प्रतियाँ सामने रखकर विनोवा ने अभ्यास किया। "धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे" किस प्रकार लिखा गया होगा? उस श्लोक के एक-एक वर्ण को पहचान कर लिपियो का ज्ञान प्राप्त किया।

विज्ञान और इतिहास विनोबा के प्रिय विषय है। वे मानते है कि ज्ञान के दो पख है एक आत्मज्ञान और दूसरा विज्ञान। इन दोनो के बिना ज्ञान सम्पूर्ण ही नही होता। "गीता के बाद गणित मुझे सबसे अधिक प्रिय है", ऐसा वे बार-बार कहते है। विनोबा को बचपन मे जब सिरदर्द होता था, तब गणित में एकाग्रता सध जाने के कारण उनका यह गणित सिरदर्द की औषध बन जाता था। बडी उम्र मे वही गणित आध्यात्मिक विचार समझाने का साधन बना। वे कहते है "काम कम होगा, फिर भी उसका अभिमान यदि नही होगा, तो कम काम भी ज्यादा हो जायगा। लेकिन यदि काम अधिक किया हो और थोडा भी अभिमान मन मे आया, तो उसका मूल्य घट जायगा। चार सेर सेवा की हो और अभिमान चालीस हो, तो सेवा का मूल्य आठ तोले हो जायगा। लेकिन शून्य अभिमान से की गयी एक तोला सेवा भी भाग मे शून्य होने के कारण अनत तोले होगी, यानी सेवा की शक्ति अनन्त हो जायगी।" विनोबा की गणित-प्रियता आज इस यज्ञ मे पूरी सहायक हुई है। देश के भूमिहीनो के लिए कितनी भूमि चाहिए, उतनी भूमि के लिए कितने दानपत्र चाहिए और इन दान-पत्रो के लाने के लिए कितने कार्यकर्ता चाहिए— यह सारा मथन बराबर चलता रहता है। इस प्रकार विनोबा के ज्ञान-योग का वर्णन बहुत हो सकता है।

उन्हे सगीत और चित्रकला का भी शौक और परख है। यह सारा ज्ञान हासिल करने में विनोबा को एकाग्रता से बडी मदद मिली है। एकाग्रता के कारण वे घटो तक अटूट कातते है। जब पढते है तब बहुत देर तक उन्हे पता भी नही चलता

कि पास में कोई खडा है। एकाग्रता के समान ही उनकी मदद अविद्या* ने भी की है । वे मानते है कि ज्ञान के लिए जिस प्रकार स्मरणशक्ति की जरूरत है, उसी प्रकार उन चीजो को भूलने की कला की भी जरूरत है जो साधना के लिए निरुपयोगी है। उनका सग्रह क्यो ? इस कला पर भी उन्होने अधिकार पाया है।

यह सब कहने का मतलब यह नही कि विनोबा निरे ज्ञानयोगी ही है। वे सतत कर्मयोगी भी है। उनके कर्मयोग का एक मूलसूत्र है—'तुम जिसकी सेवा करते हो, उसके जैसे बनो। माँ यदि बच्चे को उठाना चाहती है तो सीधी खडी रह कर नही उठा सकती। सेवक यदि जनता को ऊँचा उठाना चाहता है, तो जनता से—दरिद्रनारायण से—समरस हुए बगैर वैसा नही कर सकेगा'। इसी सूत्र मे से विनोबा का ज्ञानयोग खडा हुआ है और इसी आधार पर जीवन के बत्तीस साल की ग्राम-सेवा खडी है। इसके माध्यम से ही स्वावलम्बन, ऋषिखेती और काचन-मुक्ति के प्रयोग हुए है। उन्होने सोचा—'मेरे इर्दगिर्द सबसे गरीब कौन है ?' चरखा चला कर उदरभरण करने वाली कुछ मुसलमान विधवाओ पर उनकी नजर गयी। उन्होंने तय किया, तकली चलाकर गुजारा क्यो न किया जाय ? सम्पूर्ण एकाग्रता से, आसन पर से जरा भी खिसके बिना, वे सुबह से शाम तक तकली चलाने लगे। तकली मे छिपी सारी शक्तियो का उन्होने आविष्कार किया। लेकिन उसके फलस्वरूप दिनभर

---

*अविद्या—'ईशावास्य वृत्ति' पुस्तक में विनोबा ने 'अविद्या' शब्द का अर्थ किया है अनावश्यक ज्ञान का अज्ञान।

मे उन्हे पॉच से सात पैसे रोजी मिलती थी। उन्होने तय किया था कि यदि पॉच पैसे कमाऊँगा तो सवा पाँच पैसे खर्च नही करूँगा। रोटी और नमक ही खाया। सूखी रोटी और साग खाया, जिससे शरीर तो क्षीण हुआ, लेकिन प्रयोग नही क्षीण होने दिया।

तकली पर कातने मे परिश्रम पूरा नही हो पाता था। तो फिर सबसे अधिक मेहनत करनेवालो के साथ तादात्म्य कैसे साधे, यह चिन्तन शुरू हुआ। जेल मे उन्हे उसका मौका मिल गया। पत्थर फोडने का काम उन्होने हाथ मे छाले पडने और खून निकलने तक किया। एक घटा नही, दो घटे नही, कई घटो तक और लगातार कई महीनो तक किया। उसी प्रकार सबसे नीच माने जानेवाले भगियो के साथ वे स्वय भगी बने। वर्षो तक उन्होने अकेले अपने हाथो पवनार-आश्रम के पडोस के गॉव, सुरगाँव, की सफाई की। काम को ही उन्होने पूजा माना।

हाथ और मस्तिष्क के ऐसे अपूर्व सयोग के साथ हृदय भी भक्ति के रूप मे उमड़कर आ मिला। भक्ति से मतलब तिलक, माला, आरती, धूप, दीप नही। भक्ति माने भूतमात्र के लिए सम्यक्दृष्टि। हरएक मे अपना रूप देखना, सबमे अपना राम निहारना। फूल की गध मे तो ईश्वर हर किसी को दीख सकता है लेकिन जिसे कॉटे के नुकीलेपन मे भी ईश्वर दीखे वही सच्चा भक्त है। सज्जन की सज्जनता मे तो ईश्वर सबको दीख सकता है, लेकिन दुर्जन की दुर्जनता मे भी जिसे ईश्वर की इच्छा पूरी होती हुई दिखाई दे, उसकी ही सही भक्ति है।

—विनोबा की उत्तरप्रदेश यात्रा चालू थी। एकदिन

पास मे कोई नही था। सब भोजन के लिए गये थे। उस समय एक नौजवान विनोबा के पास आया। त्योरियाँ चढाकर बोला—"विनोबा! हिन्दुस्तान के टुकडे होने देने के कारण गाधीजी का जो हाल हुआ, वही हाल आपका भी होनेवाला है। क्योकि आप भी भूमि के टुकडे करवा रहे है। आज तो मै आपके पास पहली और आखिरी सूचना देने के लिए आया हूँ। लेकिन अब आपकी जान खतरे मे है।"

विनोबा ने उस आदमी मे भी अपने राम देखें और मन ही मन उसे प्रणाम किया। मौत की धमकी देने वाले आदमी मे भी जिसे अपने राम के दर्शन हो, वह भक्तियोगी कैसा होगा? इस प्रकार विनोबा के जीवन मे ज्ञान, कर्म और भक्ति का त्रिवेणी-सगम हुआ है। यहाँ जीवन-चरित्र की बाते नही कहनी है। क्योकि चरित्र से चारित्र्य महान् है।

: २ :

# आन्दोलन का क्रमिक विकास

भूमिदान-यज्ञ साम्ययोगी विनोवा की जीवन-तपस्या का फल है। उसके पीछे ज्ञान, कर्म और भक्ति की सस्कृति है, जमाने की माँग है। उसमे दुनिया ने मानव तथा मानव-समाज को साथ-साथ वदलने का प्रेममय मार्ग पाया है। आज जव कि वच्चा-वच्चा 'भूदान-यज्ञ सफल करेंगे' के उद्घोप से आसमान गुजायमान कर देता है, जव कि भूदान-यज्ञ का अभिनव प्रकरण अपनी आँखो से देखने के लिए दुनिया के हर कोने से वच्चे-वूढे, स्त्री-पुरुषो का एक अखण्ड ताँता-सा लगा रहता है, तव भूदान-यज्ञ के विभिन्न पहलुओ का सम्यक् दर्शन कर लेना अत्यन्त आवश्यक है।

—स्वराज्य का उप काल भारतवर्ष के लिए अत्यन्त गभीर पर्व था। हमारी लोकधानी दिल्ली मे जव स्वतन्त्रता समारोह की रोशनियाँ जल रही थी, तव जिनकी तपस्या के कारण हमे आजादी हासिल हुई थी, वे राष्ट्रपिता नोआखाली मे कौमी-झगडो की आग वुझाने के लिए अकेले पहुँच गये थे। देश के टुकडे हुए थे, लाखो भारतवासी अपने परिवारो को साथ ले अत्यन्त दु ख के साथ स्थानान्तरित हो रहे थे। मतवाली धर्मान्धता ने नग्न नृत्य शुरू किया था। भाई-भाई एक-दूसरे का विनाश

करने में लगे थे। माँ-बहनो की लाज लूटी जा रही थी और इसी पागलपन की लहर ने हमारे राष्ट्रपिता को भी हमसे छीन लिया। मानवता का चिराग मानो बुझ गया। चारो ओर अँधेरा ही अँधेरा छा गया। बापू का समग्र जीवन एक प्रकार से अत्यन्त करुणान्त नाटक-सा दीख पडता है। उनकी प्राय एकाकी तपस्या से हमे स्वराज्य तो मिला, लेकिन उसमे बापू की कल्पना का स्वराज्य नही दिखा। उस पर खून के दाग थे, अविश्वास की कालिख थी, और असमानता का कलक था।

बापू के साथियो की हालत भी उस समय कुछ अजीब-सी थी। उनके कुछ अत्यन्त निकट के साथी सत्ता की बागडोर सँभालने की ओर मुडे। लेकिन उनकी पूरी शक्ति देश के सामने खडी बडी-बडी समस्याओ को किसी कदर थोपकर रखने में ही खतम होने लगी। गाधीजी की तरह समस्याओ को सुलझाने के लिए उनके पास कोई नया अहिसक मार्ग नही था। इसलिए उन्होने उन्ही पुराने तरीको—लाठी, जेल, गोली, का इस्तेमाल चालू किया, जिनका प्रयोग अगरेज सरकार उनके खिलाफ करती आयी थी।

गाधीजी के अन्य कुछ अनुयायी अपने सरकारी साथियो की नुक्ताचीनी करने लगे थे और इसीके स्वप्न देखते रहते थे कि सरकार मे हम होते तो क्या करते? लेकिन उनके पास भी जनता के लिए विधायक पुरुषार्थ की प्रेरणा देनेवाला कोई कार्यक्रम नही था। गाधीजी के वे अनुयायी जो अपने आपको रचनात्मक कार्यकर्ता कहलाते थे, अपनी-अपनी सस्था खोले बैठे थे, उनमे से कुछ को अपने मौजूदा काम से असन्तोप

था, लेकिन उन्हे आगे का मार्ग सूझ नही रहा था। कुछ रचनात्मक कार्यकर्ताओ को अपने काम से सन्तोष भी था, किन्तु उससे देश की ताकत बढती हुई नजर नही आती थी।

देश जब इस असमजस की हालत मे था, तब विनोबा अपने परधाम के आश्रम मे काचनमुक्ति और ऋषिखेती के प्रयोग कर रहे थे। उन्होने इतना तो देख लिया था कि देश की सारी समस्याओ के मूल मे असमानता है। असमानता की जडो को काटने के लिए अपनी छोटी-सी प्रयोगशाला मे प्रयोग करना काफी नही था। उसे सामूहिक रूप से देशव्यापी प्रयोगशाला मे चलाना जरूरी था। इतिहास की दृष्टि से देश के सामने मूल सवाल यह था कि गाधीजी के अहिसा के जिस मत्र ने देश को नवजीवन दिया, चेतना दी और स्वातत्र्य-प्राप्ति मे बहुत बडा हिस्सा लिया, वह अहिसा का मत्र क्या गाधीजी के शरीर के साथ ही लुप्त हो गया? जिस अहिसा को बुद्ध, महावीर, ईसामसीह आदि सन्त-महात्माओ ने अपनी तपस्या से व्यक्तिगत जीवन मे सफल किया, राजनीति के क्षेत्र मे जिसका प्रवेश गाधीजी ने कराया, वह अहिसा क्या इतनी दूर आकर रुक जायगी? समग्र मानव-जीवन को स्पर्श करनेवाले इस मूलभूत प्रश्न के उत्तर की खोज में विनोबा लगे हुए थे। भूदान-यज्ञ मे उन्हे इस प्रश्न का उत्तर मिल गया। इसीलिए विनोबा ने तेलगाना के उस प्रसग को, जहाँ से भूदान-यज्ञ का आरभ हुआ, "अहिसा का साक्षात्कार" कहा।

पोचमपल्ली! हैदराबाद के तेलगाना विभाग के इस छोटे-से गाँव को १८-४-१९५१ से पहले बाहर का कोई आदमी जानता

भी नही था। उस प्रदेश में चारो ओर आतक छाया था, दिन में सरकारी अफसरो का, रात को साम्यवादियो का। विनोबा शिवरामपल्ली के सर्वोदय-सम्मेलन के बाद पैदल वर्धा लौटते हुए तेलगाना पहुँचे। जहाँ पुलिस भी भरी बन्दूक के साथ जाती थी, वहाँ रामनाम के सिवा उनके पास कोई रक्षण नही था। घर-घर जाकर जनता को कायरता छोडकर प्रेमभाव बढाने की उन्होने सीख दी।

—दोपहर को हरिजनो की एक सभा थी। विनोबा जिस गाँव में पहुँचते वहाँ ऐसी सभाएँ हुआ करती। उन्होने गाँव के उन गरीबो से उनका सुख-दुख पूछा और उनकी माँग पूछी। वे जमीन के भूखे थे। उन गरीबो ने ८० एकड जमीन की माँग रखते हुए कहा—हमें इतनी जमीन मिल जाय तो हमारी आवश्यकता पूरी हो सकती है। विनोबा ने कहा—"ठीक है, हम आपको जमीन दिलाने की कोशिश करेगे।" यह कोशिश सरकार के पास जाकर ही करने की कल्पना पहले उनके मन में आई। लेकिन उन्होने सोचा, यहाँ गाँववालो से भी पूछ ले, और उसी सभा में पूछा कि क्या इस गाँव में से कोई इन गरीबो को जमीन देगा? विनोबा का पूछना ही था कि एक भाई, रामचन्द्र रेड्डी, उठ खडे हुए और उन्होने कहा—"मेरे पिताजी ने कुछ जमीन दान करने के लिए अलग निकाली है। वह मै देना चाहता हूँ।" उनके मुंह से ईश्वर बोल उठा। विनोबा ने यह चीज पकड ली। भगवान् को सकेत करना था, यह अपने मन मे अनुभव किया। अगर वह सकेत विनोबा नही पकडते तो अहिंसक क्रान्ति के सामूहिक आविष्कार का यह

नया अध्याय शायद ही लिखा जाता। यही भूदान-यज्ञ की गगोत्तरी है।

स्वतत्रता-प्राप्ति के बाद कुछ निर्वासितो को सरकार से जमीन दिलाने में कितनी कठिनाई हुई है, इसका अनुभव खुद उन्हे था। इसलिए उन्होने पोचमपल्ली मे जनता से ही जमीन की माँग की।

घटना यों तो छोटी-सी थी। लेकिन विनोवा ने उसमे ईश्वर का सकेत देखा। आज तक देवालयो, विद्यालयो या अन्य सार्वजनिक उपयोग के लिए जमीने माँगी गयी थी। लेकिन दरिद्रनारायण के लिए जमीन माँगने का, देश की भूमि-समस्या दान माँगकर सुलझाने का, यह दुस्साहस विचित्र ही था। लेकिन भगवान् का सकेत मिल चुका था। विनोवा अगर माँगने से झिझकते, तो अपने आपको कायर समझते। उन्होने माँगा और जमीने मिली। मानो चमत्कार ही हुआ। वर्षो से लडनेवाले भाई एक-दूसरे से गले मिले। धरती के लालो ने सदियो के बाद अपनी माँ वसुन्धरा को माँ कहने का अधिकार प्राप्त किया। पोचमपल्ली से सेवाग्राम पहुँचने तक, दो महीनो मे, विनोवा को बारह हजार एकड भूमि दान मे मिल चुकी थी।

लोगो ने कहा कि तेलगाना मे जमीन मिल सकती थी; क्योकि वहाँ लोग हिंसक लोगो के आतक से डर गये थे। जमीन अपने हाथ मे रहेगी या नही, यह वे जानते ही नही थे, इसलिए उन्होने विनोवा को जमीन दे दी। जलता घर कृष्णार्पण किया।

विनोवा ने इस आक्षेप का मौखिक उत्तर नही दिया। उनकी उत्तर-भारत यात्रा ने ही इसका उत्तर दे दिया। पंचवार्षिक

योजना के बारे मे परामर्श के लिए पण्डित नेहरू ने विनोबा को दिल्ली बुलाया। १२ सितम्बर '५१ को पुन पद-यात्रा मे पवनार से निकल पडे। जहाँ लोगो में साम्यवाद के आतक का प्रश्न नही था, जहाँ असमानता थी, लेकिन हिसा का नाम नही था, उन मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के देहातो से विनोबा को दो महीनो मे करीब अठारह हजार एकड जमीन मिली। देश ने यह सिद्ध कर दिया कि उन्हे "सर्वोदय से पहले सर्वनाश" का रास्ता नही चाहिए। बुद्ध, महावीर और गाधी ने जो अहिसा का दीप भारतीय जनता के हृदय मे जलाया था वह अभी बुझा नही था। उसे जरूरत थी अन्तस्तल मे पैठकर हृदयशायी भगवान् को जगानेवाले भक्त की। विनोबा की पावन वाणी ने भारतीय आत्मा को जगा दिया।

२ अक्तूबर, '५१ के दिन विनोबा मध्यप्रदेश के सागर शहर-मे पहुँचे। वहाँ मध्यप्रदेश के कार्यकर्ताओ का एक सम्मेलन हुआ। भूदान-यज्ञ के इतिहास मे इस सम्मेलन का एक खास स्थान है। इसी सम्मेलन मे विनोबा ने देश के सामने पाँच करोड एकड भूमि-प्राप्ति का अपना विचार प्रकट किया। लोग हक्के-बक्के-से रह गये। जिन्होने यह आँकडा अखबारो मे पढा उनमे से कुछ ने तो यह समझा कि गलती से दो शून्य अधिक छप गये है। विनोबा को अभी तक पूरी पाँच हजार एकड जमीन भी नही मिल सकी थी। लेकिन उनकी माँग पाँच करोड एकड तक पहुँच गयी। गणिती विनोबा ने तो अपना गणित तेलगाना मे ही कर रखा था। देश के सात-आठ कोटि भूमिहीनो को काम देने के लिए कम से कम पाँच कोटि एकड भूमि तो चाहिए ही। भूदान-

यज्ञ कुछ लोगो के लिए भीख माँगने का काम नही है, बल्कि वह तो देश के सम्पूर्ण भूमिहीनो के लिए गुजारे के लिए काफी जमीन प्राप्त करने का क्रान्तिकारी आन्दोलन है, यह साबित करना था। इसलिए पाँच कोटि एकड से कम की माँग हो ही नही सकती थी। कोई कह सकता है कि अभी विनोबा को तो जमीन बहुत थोडी मिली थी, इतनी अधिक जमीन माँगने का साहस क्यो किया ? बात यह है कि जिसने शुरु मे ही ईश्वर का सहारा समझकर माँगा था, उसके लिए हिचकिचाहट का प्रश्न ही कहाँ उठता है ? विनोबा तो कहते थे कि जो ईश्वर बालक को भूख देता है, वह माँ को दूध भी देता है, जिसने मुझे माँगने की प्रेरणा दी, वही लोगो को देने की प्रेरणा भी देगा। रविबाबू के साथ मानो उन्होने यह गीत गा लिया था —

"तोमार पताका जारे दाओ
तारे बहि बारे दाओ शक्ति"

जिसे तुम अपनी पताका देते हो, उसे उसके उठाने की ताकत भी दो।

पोचमपल्ली से सागर तक भूदान-आन्दोलन का पहला कदम कहा जा सकता है। इसे हम सिद्धान्त-निरूपण का काल कह सकते है। यो तो विनोबा के चिन्तनशील और नित्य-विकासशील स्वभाव के कारण उनके व्याख्यानो मे नित्य नया विचार मिल जाता है। फिर भी पोचमपल्ली से सागर तक के व्याख्यानो मे भूदान-यज्ञ का विचार-निरूपण सक्षेप मे, किन्तु प्राय समग्र दृष्टि से, विनोबा ने किया है। भूदान-यज्ञ के शेष इतिहास को हम नीचे लिखे कालखण्डो में बाँट सकते है—

१ सागर से सेवापुरी तक—जनहृदय प्रवेश काल
२ सेवापुरी से बिहार तक—जन-आन्दोलन काल
३ बिहार यात्रा—एकाग्र प्रयोग काल
४ बिहार के बाद—भूमि-क्रान्ति के पथ पर

सन् '५२ के अप्रैल १३ से १६ तक काशी के पास सेवापुरी मे सर्वोदय-सम्मेलन हुआ। सागर से सेवापुरी तक की विनोबा की यात्रा को हमने-जनहृदय प्रवेश काल-कहा है। इन छह महीनो मे भूदान देते समय देनेवालो के तथा उसका स्मरण करनेवालो के जीवन को पावन करनेवाले जितने पवित्र प्रसग हुए उतने शायद और किसी काल मे नही हुए। छोटे-छोटे लोगो का हृदय उँडेलकर दान देना, अपनी सारी-की-सारी सम्पत्ति न्यौछावर कर देना, हृदय-परिवर्तन के अपूर्व नमूने पेश करते है। इन पावन प्रसगो में से एक-एक का महत्त्व पुराणो के किसी प्रसग से कम नही है। गोवरी से अन्न निकालनेवाला मगरू हरिजन, जिसने अपनी पूरी-की-पूरी २१ डेसिमल जमीन दे दी, नैनीताल की वह वुढिया, जो अपनी थोडी-सी जमीन देने के लिए रात भर जाडे में वैठी रही, वह बूढा रामचरण जो आँखो से नही देखता था, लेकिन जिसे ज्ञानचक्षु थे, किसी से वैलगाडी चलवाकर आया और रात को अपनी जमीन दे गया। यह एक-एक प्रसग हमे विदुर के शाक, शवरी के वेर और सुदामा के तण्डुलो का स्मरण करा देता है। उन दिनो विनोवा गाँव-गाँव और घर-घर पहुँचते थे। इस समय उनके पीछे आज जैसी अपार भीड नही रहती थी। इसलिए वे लोगो के हृदय तक पहुँच कर व्यक्तिगत रूप मे उनके हृदय मे स्थित राम को जगा सकते थे।

जन-हृदय के साथ कवि-हृदय भी जाग उठा। झाँसी मे हिन्दी के प्रमुख कवियो ने भूदान-यज्ञ में अपनी लेखनी द्वारा सहायता करने का वचन दिया। इस काल की दो प्रमुख घटनाओ की ओर सकेत करना जरूरी है। पहली विनोवा का देहली निवास और दूसरी घटना मथुरा का कार्यकर्ता सम्मेलन। दिल्ली मे आयोजन-पच के साथ विनोवा ने कई घटो तक मत्रणा की तथा अपने विचार साफ-साफ शब्दो मे उनके सामने रखे। उस समय बे-रोजगारी के सवाल पर विनोवा ने जो सुझाव दिये थे, उन्हे केन्द्रीय सरकार ने आगामी पचवर्षीय योजना मे मद्दे-नजर रख-कर काम करने का सोचा है, ऐसा कहा जाता है।

मथुरा-सम्मेलन मे उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओ ने अपने प्रान्त में एक करोड एकड भूमि-प्राप्ति के अन्तिम लक्ष्य की पहली किस्त के तौर पर आगामी एक वर्ष मे पाँच लाख एकड भूमि प्राप्त करना तय किया। एक निश्चित अवधि और निश्चित परिमाण मे जमीन प्राप्त करने के सकल्प का यह प्रथम प्रसग था।

सेवापुरी-सम्मेलन भूदान-यज्ञ की दृष्टि से वड़े महत्त्व का था। गाधीजी के निर्वाण के वाद सर्वोदय समाज की स्थापना की गयी थी। प्रति वर्ष एक वार सर्वोदय सेवक एकत्र होकर अपने काम के विषय मे सह-विचार करते थे। इस प्रकार का यह तीसरा सम्मेलन था। लेकिन दूसरे सम्मेलनो से इस सम्मेलन मे यह अन्तर था कि इस वार सह-विचार के साथ सह-कार्यक्रम भी निश्चित किया गया। सेवापुरी मे सर्वोदय सम्मेलन के मंत्री श्री शंकरराव देव ने एक महत्त्वपूर्ण संकल्प प्रस्तुत किया, जिसमें देश के पाँच लाख गांवो मे से हर गाँव मे एक भूमिहीन परिवार वसाने के

बाहर निकलना नही चाहते थे। स्थिति गभीर होती जाती थी। लेकिन विनोबा घूमते ही रहे—और सतत घूमते रहे। समुद्र की लहरे चट्टानो से टकराती और टूट जाती, फिर उठती और बार-बार टकराती और टूटती रहती। इस प्रकार सतत उठने, टकराने, टूटने और फिर उठने की क्रिया ने आखिर चट्टानो को टूक-टूक कर दिया। पहले छोटे किसानो ने दान दिया। किसीने एकड दिया, किसीने बीघा दिया, किसीने कुछ कट्ठे दिये और किसीने कुछ धूर ही दिये सही! लेकिन लोग सोचने लगे, इस कट्ठे-कट्ठे के दान का क्या होगा? छोटे लोगो से दान क्यो लिया जाता है? इस प्रश्न पर हम आगे विस्तार से चर्चा करेंगे। लेकिन यहाँ एक कारण का जिक्र कर लें। छोटो के दानो से बडो को प्रेरणा मिलती है। जैसा कि ऊपर कहा है—छोटे-छोटे किसानो ने हजारो की तादाद में जो दान दिये उन छोटे-छोटे दानो से जो वातावरण पैदा हुआ—उसके नैतिक दबाव से बडे लोगो की आँखें भी खुली। जब यज्ञ किया तब लाख-लाख लोगो ने हविर्भाग दिया और जब दान मिले तब भी लाख-लाख एकडो के दान मिले।

'चाण्डिल-सम्मेलन' से पहले विहार मे दो बडी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटी। पटना मे विनोबा ने सम्पत्ति-दान-यज्ञ का आरम्भ किया। भूमि के साथ सम्पत्ति के बँटवारे की कल्पना तो पहले मे थी, पर नये भूमिहीनो को बसाने की आवश्यकता सम्पत्ति-दान के आरम्भ का निमित्त बनी। इस यज्ञ का प्रारभ भी बेजमीनो की समस्या से जुडा हुआ है। 'निधि' का नाम सुनते ही 'निधन' का स्मरण करनेवाले और 'ट्रस्ट' की बात सुनते ही

'डिस्ट्रस्ट' (अविश्वास) करनेवाले विनोबा ने यह कोई नया 'फण्ड' नही शुरू किया। बल्कि जिस प्रकार भूदान-यज्ञ मे उत्पादको की मालिकी का सकेत था, उसी प्रकार सम्पत्ति-दान-यज्ञ मे अस्तेय और अपरिग्रह के समाजीकरण द्वारा अर्थ-शुचित्व का सकेत था। प्रत्येक दाता अपना हिसाब अपने आप रखेगा और अपनी कमाई मे समाज का हिस्सा स्वीकार करते हुए एक निश्चित हिस्सा—निश्चित रकम नही—विनोबा की सूचना के अनुसार खुद खर्च करेगा, यह है उसकी प्रक्रिया। इसमे धन इकट्ठा करने की योजना नही है। यह थी पहली महत्त्वपूर्ण घटना।

दूसरी महत्त्वपूर्ण घटना थी—श्री जयप्रकाश नारायण जी का इस आन्दोलन मे प्रवेश। वर्षों से वे आत्म-परीक्षण कर रहे थे। गाधीजी का 'ट्रस्टी-शिप' का अमली स्वरूप उन्हे इस काम मे दीख पडा। चाण्डिल मे जब विनोबा जी मलेरिया से पीडित थे, जीवन-मृत्यु के बीच उनकी नाव डोल रही थी, तब श्री जयप्रकाश नारायण का यह कहना कि—आप चिन्ता-मुक्त रहिए, हम लोग आपका काम उठा लेगे, एक नयी आशा की किरण बन गया। गया जिले से विनोबा पहले एक लाख एकड की माँग कर चुके थे। वहाँ गाँव-गाँव मे श्री जयप्रकाश नारायण सचार कर रहे थे। छोटे-छोटे किसानो ने सैकडो-हजारो की सख्या मे दान दिया। बीसो ने अपना सर्वस्व समर्पण किया।

चाण्डिल का सर्वोदय-सम्मेलन भूदान-यज्ञ के इतिहास मे सस्मरणीय रहेगा। अगले ही दिन रामगढ के राजा ने एक लाख एकड भूमि का दान दिया था। बडे जमीदारो के सहयोग का यह नया युग आरभ हुआ। इसी सम्मेलन मे विनोबा के प्रवचन ने

रचनात्मक कार्यकर्ताओ की वैचारिक-भूमिका स्पष्ट कर दी। उनके एक भाषण को तो लोगो ने सर्वोदय का 'घोषणापत्र' कहा।

चाण्डिल के बाद भूदान की जैसी बाढ आयी, वैसी कभी पहले नही आयी थी। पलामू जिले मे रका के राजा विनोवा के साथ घूमे। उन्होने पहले दो हजार पाँच सौ एकड का और फिर बारह हजार एकड का दान दिया था। यह दान कार्यकर्ताओ के माँगने पर दिया था। जब विनोवा ने पूछा—"आपने ऐसा क्यो किया ?" उन्होने कहा—"जिसने जितना माँगा उसे उतना दिया।" विनोवा ने फिर कहा—"अब मै आपके पास आया हूँ, मुझे कितना देंगे?"

"मेरे पास जो जमीन है, उसमे से जितनी आप माँगें उतनी दूंगा।" विनोवा ने कहा—"आपके पास खुदकाश्त की जितनी जमीन है उसका छठा अश और जितनी पडती जमीन है वह पूरी-की-पूरी दे दीजिए।" राजा साहब ने मजूर कर लिया और एक लाख दो एकड जमीन दे दी। महात्मा वुद्ध की जयन्ती का वह पावन दिन था। विनोवा ने इस दान को पूर्ण दान माना और भगवान् वुद्ध के नाम पर उसे समर्पित किया। एक पखवारा और वीता। राँची जिले मे पालकोट के राजा ने चौवालीस हजार पाँच सौ एकड जमीन दी।

एक दिन विनोवा ने कहा—"मुझे जो दान देता है, उसे मैं विष्णु समझता हूँ। लेकिन अव मुझे विष्णु सहस्रनाम सुनने की इच्छा है, इसलिए एक दिन में मुझे एक हजार दानपत्र चाहिए।" विनोवा को कई दफा विष्णु सहस्रनाम भी सुनाये गये। एक ओर गरीवो से हजारो दानपत्र मिलते थे और दूसरी ओर एक-एक जमीदार से हजारो एकड जमीन मिलती थी। इस प्रकार क्रान्ति ने

दोनो मोरचे सँभाल रखे थे। हजारीबाग जिले ने तो हद कर दी। वहाँ की कुल खेती-लायक जमीन करीब अठारह लाख एकड है। इसलिए पूरी भूमि-समस्या हल करने के लिए विनोबा ने तीन लाख एकड जमीन माँगी। मतलब यह था कि अगर उतनी जमीन पूरी हो जाय तो एक जिले मे यह बात सिद्ध हो जायगी कि भूमि-समस्या प्रेम से हल हो सकती है। हजारीबाग जिले ने सात लाख एकड़ जमीन दान मे दी। यहाँ केवल भूमि-समस्या ही हल होने की बात नही रही, बल्कि यह भी सिद्ध हुआ कि यहाँ अन्य भूमिहीनों को बसाने का काम भी हो सकता है। परन्तु हजारीबाग जिले में तो पडती जमीन अधिक है। इसलिए यहाँ अधिक जमीन मिली। ऐसे जिलों का क्या जहाँ जनसख्या अधिक और जमीन कम है? इस प्रश्न का जवाब गया जिले मे देने की चेष्टा की गयी। यहाँ जमीन महँगी है, मालिक छोटे-छोटे है और भूमि-समस्या भी कठिन रही। विनोबा ने गया जिले को अपना प्रयोग-क्षेत्र बनाया। तीन बार गया जिले में भ्रमण किया—यह स्वीकार करना होगा कि गया जिले का लक्ष्याक अभी पूरा नही हुआ है। फिर भी समस्या हल होकर रहेगी, इसमें शका नही। यह जरुर है कि कार्यकर्ताओ को सतत जागरुक रहकर निष्ठापूर्वक काम मे लगे रहना होगा।

बोधगया के सर्वोदय-सम्मेलन की केन्द्रवर्ती घटना जीवन-दान मे कार्यकर्ता जुटाने की दिशा मे एक बडा काम था। घटना जितनी विलक्षण उतनी ही स्फूर्त थी। श्री जयप्रकाश नारायण जब बोलने के लिए खडे हुए तब शायद उन्हे भी पता नही था कि वे एक नये यज्ञ के अध्वर्यु बनने जा रहे है। इस काम के लिए पूरा जीवन समर्पण करनेवाले कार्यकर्ताओं की माँग करते हुए

सबसे पहले उन्होने अपने आप को ही अर्पण कर दिया—यह एक बहुत बडी घटना थी। देश का एक समर्थ राजनीतिज्ञ राजनीति छोडकर लोकनीति की ओर कदम बढा रहा था। वातावरण में बिजली-सी दौड गयी। दूसरे दिन विनोबा ने एक पत्र द्वारा 'भूदान-यज्ञ-मूलक ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसात्मक क्रान्ति' के लिए अपना जीवन समर्पण किया। जिनका पूरा जीवन सेवा के लिए ही था, उन्होंने भी अपने काम को 'भूदान-यज्ञ-मूलक' बनाने का निश्चय किया। अपनी सारी शक्ति इस काम पर केन्द्रित करने का सकल्प किया। इन बुजुर्गों के लिए जीवन-दान-यज्ञ की प्रतिज्ञा को दुहराना, शक्ति बढाने का तथा चित्त-शुद्धि का एक साधन बना। नौजवानो ने नयी क्रान्ति के उत्साह से जीवन-दान किया।

मार्च १९५४ के बाद बिहार में सात लाख एकड जमीन मिली। भूमि-प्राप्ति के साथ भूमि-वितरण की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक था। देश भर मे भूमि-वितरण के कार्यक्रम जगह-जगह आरभ हुए। भूमि-प्राप्ति और वितरण के अब तक के आँकडे इसी पुस्तक मे अन्यत्र दिये गये है।*

बोधगया सम्मेलन से ही विनोबा ने तय कर लिया था कि वे बिहार छोडकर कुछ दिन बगाल में बितायेंगे और फिर उत्कल की ओर अग्रसर होगे। उडीसा के लिए विनोबा ने भूमि-क्रान्ति का मत्र दिया। अभी उस मत्र का सगुण-साकार स्वरूप देश के सामने प्रकट होना बाकी है। लेकिन अब तक उडीसा ने जिस दिशा में

---

*परिशिष्ट १ देखिये।

कार्य आरभ किया है, उससे भविष्य के कुछ आसार दिखाई देने लगे है। वहाँ का सबसे बडा काम है समग्र ग्राम-दान। जहाँ विनोवा गये भी नही थे और जहाँ शायद कोई लब्धप्रतिष्ठ कार्यकर्ता भी नही पहुँच सका हो, वहाँ के लोगो ने भी ऐसा काम कर दिखाया जैसा और कही नही हुआ था। उडीसा के कुछ हिस्सो मे, विशेपकर कोरापुट जिले, मे समग्र ग्राम-दान का सिलसिला शुरू हो गया। आज तक देश भर मे जितने ग्रामदान हुए है, उनमे सबसे अधिक ग्राम-दान उडीसा मे हुए है। तीन सौ ग्रामो के सबके सब भूमिवान् लोगो का अपनी चप्पा-चप्पा जमीन दे देना कोई साधारण बात नही है। उडीसा ने अब तक जितने ग्रामो का दान दिया है, उनसे एक तहसील तो आसानी से बन सकती है। यदि ऐसी पूरी तहसीलें या जिले के जिले अपनी पूरी की पूरी भूमि का पुनर्वितरण करने लगे तो हमे समझना चाहिए कि भूमि क्रान्ति की अवश्यम्भावी प्रक्रिया शुरू हुई है।

यहाँ हमने भूदान के इतिहास की सामान्य पृष्ठ भूमि आपके सामने रखी है। लेकिन उससे अधिक महत्त्व की चीज है, भूदान-यज्ञ की वैचारिक-भूमिका।

: ३ :

# वैचारिक-भूमिका—१

वैदिक ऋषि ने पृथ्वी को प्रणाम करते हुए कहा—"माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या"—पृथ्वी माता है और मै उसका पुत्र हूँ। पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पच महाभूतो का वना हुआ यह शरीर उन्हीके आधार पर टिकता है। सृष्टि की रचना ही इस प्रकार की है कि मनुष्य को जिस चीज की जितनी अधिक जरूरत हो, उतनी ही विपुल परिमाण में वह प्रकृति मे पायी जाती है। वायु और आकाश के विना मनुष्य कुछ क्षण भी जीवित नही रह सकता। प्रकृति ने उनकी देन भी इतनी विपुल की है कि किसीको उसकी कमी का अनुभव नही होता।

मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताओ मे जल और अन्न ये दो वस्तुएँ और है। आम तौर से जल भी इतने परिमाण मे है कि हर किसी को मनचाहा मिल जाता है। रहा प्रश्न अन्न का। जल, तेज, वायु और आकाश की तरह अन्न भी प्रत्येक व्यक्ति को यथेष्ट मिलना चाहिए। भोजन पर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। लेकिन मनुष्य का यह अधिकार मनुष्य द्वारा ही छीना जा रहा है। वैज्ञानिको का आज भी कहना है कि पृथ्वी पर इतनी खाद्य सामग्री है कि आज जितनी आवादी है उससे कई गुनी वढ जाने पर वह कम पडनेवाली नही है। लेकिन फिर भी दुनिया

की कुल आवादी मे से तीन चौथाई हिस्सा अधभूखा या दुर्भिक्ष की सीमा पर रहनेवाला वनता जा रहा है। इस वैषम्य के कई कारणो मे से एक प्रमुख कारण यह भी है कि हमने जल, तेज, वायु और आकाश की तरह पृथ्वी को भी मुक्त नही रखा है। जिसे साँस लेनी है, वह हवा लेता है। जिसे प्यास लगी है, वह पानी पीता है। उसी प्रकार जिसे भूख लगे, उसे खाना मिलना चाहिए। यह तभी हो सकेगा जब धरती पर काम करने की इच्छा रखनेवाले हर व्यक्ति को काम करने का अवसर मिले। आज का जो असमान बँटवारा है उसे समान करे। जिस पृथ्वी को वेदकाल से हमने माँ कहा है, उसका आज मनुप्य स्वामी वनना चाहता है। माँ जब तक दासी रहेगी, पुत्र सुखी नही रहेगा। हवा कभी यह नही कहती कि मै छोटे वच्चे के फेफडे मे नही जाऊँगी। नदी कभी यह नही कहती कि मै शेर को ही पानी पिलाऊँगी, वकरी को नही। सूर्य-किरणे कभी यह नही कहती कि हम राजप्रासादो मे ही प्रवेश करेगी, झोपडियो मे नही। चूंकि ये जल, वायु, तेज भगवान् की देन है, वे सवके लिए समान है। इसी प्रकार भूमि भी भगवान् की देन होने के कारण हर जोतनेवाले को मिलनी ही चाहिए। हरएक भूमिपुत्र का अपनी माँ पर समान अधिकार है। भूदान-यज्ञ मे जो भूमि माँगने और बाँटने की प्रक्रिया है उसके पीछे यही मूलभूत विचार है। भूमिदान-यज्ञ भूमि के न्याय्य बँटवारे की माँग है। हर मनुष्य मे छिपी हुई सज्जनता को जगाकर भूमि-न्याय की स्थापना करने का वह कार्यक्रम है।

यह तो हुई भूदान-यज्ञ की वाह्य प्रक्रिया। भूदान-यज्ञ का कार्यक्रम तो सागर जैसा है। वह सागर के समान विशाल और

सागर के समान गहरा भी है। हमें उसकी विशालता और गहराई में भी प्रवेश करना चाहिए।

विनोवा ने भूदान-यज्ञ को 'प्रजासूय-यज्ञ' कहा है। प्राचीन परम्परा को आधुनिक जरूरत के साथ जोड देना, विनोवा की एक खूबी है। उन्होने जिस प्रकार अपने इस आन्दोलन मे प्राचीन दान, यज्ञ और तप आदि की परम्परा को आधुनिक आवश्यकता—भूख की समस्या, के साथ जोड़ दिया है, उसी प्रकार इस प्रजासूय-यज्ञ में राजसूय-यज्ञ की प्राचीन परम्परा को प्रजातत्र की आज की विचारधारा के साथ जोडकर एक अनोखा समन्वय किया है। यह प्रजासूय-यज्ञ प्रजा के द्वारा किया जाता है, प्रजा के लिए किया जाता है और उससे प्रजा ही ऊपर उठती है। इसलिए भूदान-यज्ञ का प्रजासूय-यज्ञ नाम देना उपयुक्त भी है।

'प्रजासूय-यज्ञ' शब्द को अच्छी तरह समझने के लिए हमें 'गीता-प्रवचन' पढना चाहिए। इस पुस्तक मे विनोवा का सम्पूर्ण जीवन-दर्शन गीता के आधार पर दिये गये प्रवचनो के रूप में आ जाता है। यो तो भूदान-यज्ञ आरभ होने से बीस वर्ष पहले ये प्रवचन दिये गये थे। लेकिन विनोवा मानते है कि जो इस पुस्तक का अध्ययन करेगा, उसकी समझ मे भूदान-यज्ञ की सारी विचारधारा सरलता से आ जायगी और उसे इस यज्ञ मे अपना हिस्सा देने की प्रेरणा भी अवश्य मिलेगी। 'गीता-प्रवचन' के १७वे अध्याय मे विनोवा ने 'यज्ञ' शब्द के उद्देश्य वताये है। सृष्टि मे रहने के कारण सृष्टि का जो छीजन मनुष्य करता है, यानी सृष्टि की जो हानि करता है, उसे पूरा करना—यह यज्ञ का पहला उद्देश्य है। दूसरा हेतु है शुद्धीकरण—हम कुँए का

उपयोग करते है, उसके आसपास जो सृष्टि खराव हो जाती है उसे साफ करना—यह यज्ञ का दूसरा उद्देश्य है। क्षतिपूर्ति करने और सफाई करने के साथ ही कुछ प्रत्यक्ष निर्माण करना—यह यज्ञ का तीसरा उद्देश्य है।

अव हम यह देखे कि 'गीता-प्रवचन' की इस व्याख्या के अनुसार भूदान-यज्ञ मे ये तीनो उद्देश्य किस प्रकार सधते है। अर्थात् इससे देश के कौन-से छीजन की पूर्ति होती है, कौन-सा शुद्धीकरण होता है और कौन-सा नवनिर्माण, यानी फल-प्राप्ति होती है?

आज हमारे ग्रामो का छीजन चल रहा है। हमारी ग्राम-लक्ष्मी आज क्षीण होती जाती है। आज से वीस साल पहले ग्रामों मे जितने उद्योग-धन्धे थे, धीरे-धीरे वे मिटते जा रहे है। पुतली-घर की चिमनियाँ ज्यो-ज्यो ऊँची होती जा रही है, वुनकर की झोपडियाँ त्यो-त्यो नीचे धँसती जा रही है। देश का मुख्य सवाल वेरोजगारी का है। विषमता यह है कि जिसे भूख है, उसके पास अन्न नही है और जिसके पास अन्न है, उसके पास भूख नही है। तेल निकालने की मिले खडी होती है, तो तेल-घानियाँ वन्द होती है। जूते वनाने के कारखाने खुलते है तो मोचियो का धन्धा जाता रहता है। यहाँ तक कि आजकल कुछ ऐसे कारखाने भी वन गये है, जिनमे एक साथ कई कुर्तो की सिलाई हो सकती है। यह स्वाभाविक है कि जहाँ एक साथ कई कुर्ते सिये जायेगे, वहाँ एक साथ कई दर्जी भी वेकार वनेगे। जहाँ एक तरफ से जन-सख्या की वृद्धि के कारण जमीन पर वोझ वढ रहा है, वहाँ दूसरी तरफ से अन्य धन्धो से वेकार हुए लोगो का वोझ भी वढता

जा रहा है। चूंकि हमारे मुल्क के लोगो के लिए खेती का धन्धा एक प्रकार से सबसे सरल है, इसलिए जिसका धन्धा छूटा, वह भूमि पर मजदूरी करने की फिक्र करता है। इस प्रकार जिसे काम चाहिए, उसे काम न मिलने के कारण धरती माँ का पहला छीजन—हमारी ग्राम-लक्ष्मी का छीजन—होता है।

दूसरा छीजन उससे कुछ सूक्ष्म है। वह है विद्यादेवी का। हमारी शिक्षा आज नगराभिमुख बनी है। जिस भारत मे राम-कृष्ण आदि राजवशी बालको को नगर छोडकर वन-उपवन या ग्रामो मे जीवन की प्रत्यक्ष शिक्षा लेने के लिए जाना पडता था, उसी भारतभूमि के ग्रामो में शिक्षा अब नामशेष-सी रह गयी है। ग्रामो में जो चतुर विद्यार्थी होते है, उनका या तो विकास ही रुक जाता है या फिर उन्हें शहरो मे जाना पडता है। विश्व-विद्यालयो की स्थिति का अध्ययन करने के लिए डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् की अध्यक्षता में जो कमीशन नियुक्त किया गया था, उसकी रिपोर्ट के ग्राम-विद्यापीठवाले भाग मे इस बात पर अच्छी तरह ध्यान आकर्षित किया गया है। उसमें अमरीकन शिक्षा-शास्त्री डॉ० मार्गन ने बताया है कि इतिहास की शिक्षा यह है कि जो देश अपनी ग्राम-शिक्षा और ग्राम-सस्कृति की चिन्ता नही करता, उसकी सस्कृति कुछ पीढियो मे खतम हो जाती है। इधर हमारी सारी शिक्षा ही मानो ग्रामो से विमुख हो गयी है। यह हमारे ग्रामो का दूसरे प्रकार से छीजन हो रहा है।

तीसरा छीजन राजलक्ष्मी का है। जनतत्र और मजबूत मध्यवर्ती सरकार, ये दोनो चीजे सुसगत नही है। सच्ची लोकशाही मे तो सत्ता का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए।

जनतंत्र की छोटी-छोटी इकाइयो मे स्वतंत्र ताकत जब होगी, तभी वह जनतंत्र यथार्थ जनतंत्र कहा जा सकता है। आज हमारे देश मे कम से कम सत्ता ग्रामो के पास है।

भूदान-यज्ञ हमारे ग्राम-जीवन के—उसी ग्राम-जीवन के जो भारत के ९⁄१० हिस्से का जीवन है—त्रिविध शोषण को रोकने के लिए है। जो बेजमीन है, उन्हे भूदान-यज्ञ मे जमीन दी जाती है। इस प्रकार उन्हे काम करने के लिए सदा के लिए साधन मिल जाता है। आज जो सचमुच खेतिहर मजदूर है, उन्हें काम करने का अवसर मिलता है। आज बेजमीन मजदूर ही हमारे देश के सबसे अधिक गरीब, सबसे अधिक शोषित और दलित मानव है। उन्हे स्वतंत्र काम मिल जाने के कारण उनमे नया जीवन और नयी ताकत पैदा होती है। जंजीर की मजबूती उतनी ही समझी जाती है जितनी उसकी सबसे कमजोर कड़ी की होती है। भूदान के जरिये हम देश की सबसे कमजोर कडी को ताकतवर बनाते है। इससे सारे देश की ताकत बढती है। इस बढती हुई ताकत मे से जो वातावरण पैदा होता है, उससे ग्रामोद्योग, नयी तालीम आदि देश-निर्माण के कार्यो के लिए रास्ते खुलते है। भूदान-यज्ञ से विनोबा हमारी व्यक्तिगत परिवार की भावना को व्यापक बनाकर ग्राम-परिवार की भावना बढाना चाहते है। "सबै भूमि गोपाल की" इसका प्रथम सोपान है। 'सभी भूमि गांव की' यह मानकर तीन सौ से अधिक ग्रामों ने अपनी पूरी जमीन दान मे देकर पहला कदम उठाया है। इसीमे से नये ग्राम-निर्माण की नींव पडेगी, नया मनुष्य बनेगा और फिर नया समाज बनेगा। अपने गांव मे क्या पैदा करना है, कितना

वाहर से लाना है, हम अपने वच्चो को शिक्षा किस प्रकार की दे, आरोग्य, न्याय आदि का आयोजन कैसा हो, सभी वातें इस वुनियाद के आधार पर सोचेंगे और उनका अमल और विकास करेंगे।

यज्ञ का दूसरा उद्देश्य होता है वातावरण की शुद्धि। आज भी भग्नावशेप के रूप मे जो यज्ञहवनादि चलते है, उनके प्रति भी लोगो की यह श्रद्धा है कि उनसे पापमुक्ति तथा वायु-शुद्धि होती है। वनस्पति घी के डिव्वे जलाने से जो धुँआ पैदा होता है, उससे वायु-शुद्धि क्या होती होगी—यह हम नही वतला सकते। मगर भूदान-यज्ञ से वातावरण की शुद्धि की जो वात है—वह है अत - शुद्धि की वात। इस यज्ञ की खूवी यह है कि इसमें देनेवाले, लेने-वाले तथा दिलानेवाले तीनो की चित्त-शुद्धि की सभावना है। शुद्ध नीयत से देनेवाले की चित्त-शुद्धि तो जाहिर है। वह भोग की ओर से मुँह मोडकर त्याग की ओर आगे वढता है। वह जव देता है तव भूमि को माँ समझकर भूमिपुत्रो को उनका हक देता है। वह दूसरो को भिक्षा नही देता, स्वयम् प्रेम और श्रमनिष्ठा की दीक्षा लेता है। आज तक वह अपने लिए सग्रह करता था, आज वह दूसरो को अपना समझकर उनके लिए कुछ छोडता है। मोह में अशुद्धि है त्याग मे शुद्धि। अपने हृदय के तारो को दरिद्रनारायण के हृदय के तारो से जोडकर वह अपनी सर्वोत्तम अभिव्यजना व्यक्त करता है।

"जो भूमि लेता है, उसकी चित्त-शुद्धि कैसे होती है? मेतमेत मे जमीन पाने से उसकी लोभवृत्ति वढने की सभावना है न? नही तो वह दीन-भिखारी वनेगा।" भूदान-यज्ञ की प्रक्रिया

को केवल ऊपर-ऊपर से देखने के कारण कई वार इस प्रकार के आक्षेप उठते है। लेकिन वस्तुत ऐसा नही है। भूमि-वितरण की प्रक्रिया को समझ लेने पर यह अच्छी तरह समझ मे आ जायगा। यहाँ हम इतना समझ ले कि भूमिदान-यज्ञ से भूमि पानेवाले भूमिहीनो की चित्त-शुद्धि की क्या सभावना है। जो पराधीन है, उनकी चित्त-शुद्धि की गुजाइश कहाँ? दूसरे की जमीन पर खटनेवाला अक्सर अत्यधिक काम के वोझ से चूर मन के भावो को दवाकर चुपचाप वैठ जाता है। पर चित्त-शुद्धि सयम मे है, परवशता से मन को दवाने मे नही। उपवास मे जो शक्ति है, वह विना अन्न के भूखे रहने मे नही। भूमि-प्राप्ति तो वेजमीन को स्वाभिमान के साथ खडा होने की हिम्मत दिलाती है। स्वावलम्वन की इस निर्भयता मे ही कायरो की चित्त-शुद्धि है। यदि वनी-वनायी, पकी-पकाई रोटी भूमिहीन को दी जाती तो वह जरूर दीन वनता। लेकिन भूमिदान-यज्ञ उसे रोटी नही देता, रोटी कमाने का साधन देता है। अपनी मेहनत का अन्न खाने का मौका देता है। जो भूमिहीन मजदूर दूसरे की जमीन पर मेहनत करने मे जी चुराता है, उसे भूदान-यज्ञ श्रम-निष्ठा की दीक्षा देता है। उसकी मेहनत से जो अन्न पैदा होगा—वह सस्कृत कवि के "घर्मजानि कुसुमानि" (पसीने से पैदा हुए फूल) की तरह दस दिशाओ को सुगधित करता है। चित्त-शुद्धि का सवसे रोमाचकारी दर्शन भूमि-वितरण के समय होता है। जव जमीन थोडी रहती है, तव भूमिहीनो से निर्णय करवाया जाता है कि कौन भूमि छोडेगा और कौन भूमि लेगा। जव भूमिहीन लोग पच वनते है, तव उनके मुँह से परमेश्वर की वाणी

निकल आती है। पन्द्रह मिनट पहले जो आदमी यह कहता था कि हमें जमीन चाहिए, हम उस पर काश्त करेंगे—वही फिर कहता है कि हमे जमीन जरूर चाहिए, लेकिन मुझसे अधिक जरूरत उसकी है, पहले उसे दीजिए। जब सारी दुनिया में 'पहले मुझे, फिर उसे' की आवाज सुनाई देती है तब भूदान-यज्ञ मे विनोबा भूमिहीनो के मुँह से भी 'पहले उसे, तब मुझे' की आवाज निकलवाते है। चित्त शुद्धि का इससे बढकर दूसरा उदाहरण कहाँ मिलेगा ?

जो सेवक भूमिदान-यज्ञ मे जमीन दिलाने का काम करते है, उनके चित्त-शुद्धि की सभावना देनेवाले और लेनेवालो की चित्त-शुद्धि से कही अधिक है। भूमिदान-यज्ञ की सबसे बडी विशेषता यह है कि उसमे यात्री की नित्य प्रगति होती रहती है। यात्री से यहाँ मतलब विनोबा नही है। विनोबा तो भूमिदान-यज्ञ से पहले भी नित्य विकासशील रहे है। लेकिन हम तो उन सैकडो प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध सेवको का जिक्र कर रहे है, जो देश के कोने-कोने में विनोबा के कदम से कदम मिलाकर चल रहे है। यह सच है कि यात्रियो की इस यात्रा मे नाजायज प्रसिद्धि, सफलता के कारण पैदा होनेवाला अहभाव, पक्षो की दलदल मे फँसने की सभावना, त्वरित परिणाम लाने की चेष्टा में सत्य से हटने की अधीरता आदि खतरे भी है। लेकिन इनसे सुरक्षा की ठोस दीवारे भी काफी है। इन सामान्य सेवको के मार्ग मे सर्वदा सफलता के फूल नही बिछे रहते। अक्सर उन्हे असफलता के काँटो को रौंदकर चलना पडता है। प्रसिद्धि की बात तो दूर रही, सेवक कभी-कभी हफ्तो तक चिट्ठी, अखबार, रेल, मोटर आदि तमाम चीजो से बिछुडा हुआ द्वार-द्वार भटकता फिरता

रहता है। उसका नाम भी कोई नही जानता, उसे खाना भी मुश्किल से मयस्सर होता है। पक्षातीत जनतन्त्र के विचार का सदेश-वाहक होने के कारण उससे अक्सर विभिन्न पक्ष के बुद्धि-जीवी लोग भी खिचे रहते है। भूमि के बँटवारे का मौका प्रत्यक्ष आ जाने के समय भूमि-प्राप्ति मे उसने कितनी सत्यनिष्ठा रखी है, इसकी भी परीक्षा हो जाती है।

सेवक की चित्त-शुद्धि मुख्यत उसने जिस वृत्ति से यह काम उठाया है उस पर निर्भर है। विनोवा के कथनानुसार उसने यदि जन-जन के हृदय मे सोये हुए राम को जगाने की वृत्ति रखी है तो उसकी चित्त-शुद्धि अवश्य होगी। वह इस श्रद्धा से चलता है कि हर मनुष्य मे भलाई पडी हुई है। आज के सामाजिक वातावरण और वर्तमान विपम अर्थव्यवस्था के कारण वह प्रकट नही हो पाती—दवी पडी है। कारण ढूंढने का काम सेवक का है। वह यदि नही ढूंढ सकता, तो पहले अन्यत्र नही, अपने मे ही वह ढूंढेगा। इसीसे उसकी चित्त-शुद्धि होगी। विलकुल अनजाने कोने से अगर अचानक कही मानवता की थोडी-सी झाँकी मिली, तो सेवक के मन मे ऐसा विश्वास पैदा होता है जो उसके जीवन पर गहरा असर करता है। मानवता का दर्शन, उसका स्पर्श, उसे मानव बनने और बनाने मे बहुत बडा सहायक होता है। मनुष्य के अन्तर मे उसके सद्गुणो की राह से प्रवेश करना सेवक को स्वय सद्गुणो की ओर ले जाने वाला है। इसके अतिरिक्त भी सेवक की चित्त-शुद्धि के लिए इस यज्ञ मे अनेक अवसर है। रोज अनेक प्रकार के लोगो से मिलते रहने के कारण सहज ही उसमे विनय, शील एव धैर्य

के गुणो का विकास होता है। दरिद्रनारायण से सहानुभूति रखनेवाला कार्यक्रम उठाने के कारण उसे सादगी की सहज प्रेरणा होती है। पदयात्रा आदि साधनो के कारण उसकी परिश्रम-निष्ठा और चिन्तनशीलता भी बढती है।

भूदान-यज्ञ में देनेवाले, लेनेवाले तथा दिलानेवाले की त्रिविध अन्त शुद्धि होती है। इस अन्त शुद्धि की छूत दूसरो को भी लगे विना नही रहती। इस प्रकार यज्ञ का दूसरा हेतु, वातावरण-शुद्धि, भूमिदान-यज्ञ में उत्तम रीति से परिपूर्ण होता है।

यज्ञ का तीसरा हेतु है, फल-प्राप्ति। भूदान-यज्ञ से जो फल प्राप्त करना है उसका तात्कालिक स्वरूप तो जाहिर है—गाँव की सारी भूमि का ग्रामीकरण करना, देहातो में प्रेमभाव स्थापित करना, परिवार-भावना व्यापक करते हुए "वसुधैव कुटुम्बकम्" की ओर पहला कदम उठाना। लेकिन भूदान-यज्ञ से जो फल-प्राप्ति करनी है वह केवल भूमि के पुनर्वितरण से ही सम्पन्न नही हो जाती। भूदान-यज्ञ के पीछे मूल विचार साम्य-योग का है। साम्ययोग तथा भूदान-आन्दोलन के राजनैतिक, तथा सास्कृतिक पहलुओ की आगे एक अध्याय मे चर्चा होगी। यहाँ हम केवल एक ही शब्द की चर्चा कर लेगे जिसे विनोवा वार-वार इस्तेमाल करते हे, जिसे गाधीजी भी अक्सर अपने सपने के स्वराज का चित्र खीचने के लिए इस्तेमाल करते थे। वह शब्द है 'रामराज्य'। कुछ लोगो को रामराज्य शब्द में प्राचीनता की वू आती है, कुछ को साम्प्रदायिकता की। लेकिन हमे यह नही भूलना चाहिए कि हमारे भारत की आम जनता 'रामराज्य' शब्द को जनतत्र, गणतत्र, समाजवादी तत्र आदि शब्दो की वनिस्वत

कही अधिक अच्छी तरह जानती है। गाधीजी देश की नब्ज (नाडी) पहचानते थे और जनता की समझ मे आनेवाली भाषा मे बोलते थे। भूदान-यज्ञ मे जो फल प्राप्त करना है, उसे विनोबा ने 'रामराज्य' कहा है। तुलसीदासजी के शब्दो मे हम उस राम-राज्य की व्याख्या देखे। उन्होने "पराधीन सपनेहु सुख नाही" का जो महामत्र दिया, उसे देशवासियो ने कठस्थ कर लिया। इस मत्र मे हमारे देश की पहली माँग, स्वतत्रता, की आवाज गूँज उठी। उसी प्रकार गोस्वामीजी ने रामराज्य का वर्णन इन पक्तियो मे किया है —

"बैर न करहि काहु सन कोई
राम प्रताप विषमता खोई"

इस पद के पूर्वार्द्ध का फ्रासीसी क्रान्ति की भाषा मे अनुवाद करे, तो 'बन्धुता' होगा और उत्तरार्द्ध का अर्थ होगा 'समानता'। इस प्रकार उस क्रान्ति की भाषा मे रामराज्य का मतलब होता है स्वतत्रता, समानता और बन्धुता। फ्रास देश ने ये तीनो शब्द दिये। लेकिन उनकी क्रान्ति से सिर्फ एक ही चीज सिद्ध हुई, स्वतत्रता। समानता और बन्धुता पीछे छूट गयी। इसके बाद दुनिया ने एक दूसरी क्रान्ति देखी—रूस की, जिसमे समानता कुछ हद तक सिद्ध हुई। लेकिन बन्धुता उससे दूर रही और स्वतत्रता कुचली गयी। लेकिन आज हमारे देश मे जो क्रान्ति हो रही है, उसका आरभ ही बापू ने बन्धुता के द्वारा किया। बन्धुता के जरिये स्वतत्रता की प्राप्ति उन्होने की—विनोबा उन्ही के कदमो पर चलकर बन्धुता के जरिये स्वतत्रता को टिकाये रखना चाहते है तथा समता कायम करना चाहते है। इस प्रकार हम देखते है

कि भूदान-यज्ञ जगत् के इतिहास का एक अनोखा पृष्ठ बन जाता है। वास्तव में इस प्रेममयी क्रान्ति के जरिये विनोबा ने अहिंसा की दिशा में ससार को एक कदम आगे बढाया है। बुद्ध, महावीर, ईसा ने जगत् को अहिसा दिखाई, लेकिन वह अहिसा व्यक्तिगत क्षेत्र तक सीमित थी। गाधीजी ने एक कदम आगे उठाया, उन्होने राजनीतिक क्षेत्र मे अहिसा का प्रवेश सत्याग्रह के अपने अमोघ अस्त्र के द्वारा कराया। विनोबा आज उसी अहिसा का प्रवेश अर्थनीति के क्षेत्र में भूदान-यज्ञ के जरिये करा रहे है।

पृष्ठ वन जाता
ने अहिंसा
। वुद्ध, महावीर,
अहिंसा व्यक्ति-
आगे उठाया,
के अपने
उसी अहिंसा का
करा रहे है।

: १

# वैचारिक-भू

कभी-कभी विनोवा ऐसी
धक्का-सा लगता है। कुछ शिक्षित
के शब्दो मे अभिमान की ध्वनि
एक वचन के पीछे दीर्घकालीन
वल रहता है। जब जड और चेत
ने यह कहा:—जड चाहे जितना
छोटा हो, फिर भी चेतन का म
महान् है लेकिन जड है, विनोवा
चाहे तो हिमालय को उत्तर से
सुनकर लोग हक्के-वक्के रह गए
ने इस वाक्य का जब मर्म सम
पैदा हुई। तुलना हिमालय अ

भारतीय सस्कृति में समाज-रचना के लिए जिस वर्णाश्रम व्यवस्था की कल्पना की गयी थी—भूदान-यज्ञ उस कल्पना के भी अनुकूल है। चारो वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में वैश्य को छोडकर शेष तीन के लिए सम्पत्ति-सग्रह की कल्पना ही नही है। वैश्यो के लिए भी ब्रह्मचर्याश्रम, वानप्रस्थाश्रम और सन्यास आश्रम मे सम्पत्ति का सग्रह निषिद्ध है। गृहस्थाश्रम में भी सम्पत्ति-सग्रह की अनुज्ञा अन्य वर्णो के पोषण के लिए है। गृहस्थाश्रम का आदर्श तो शीघ्रता तथा सहजता से वानप्रस्थाश्रम तक जाने का ही है। भारतीय सन्तो ने भी यही त्याग की वाणी सदियो से कही है। सन्त शिरोमणि कबीर साहब कहते है—

"पानी बाढो नाव मे घर मे बाढो दाम,
दोनो हाथ उलीचिए यही सयानो काम।"

कबीर साहब की यह उपमा तो विनोबाजी को अत्यन्त प्रिय लगती है। बार-बार इस उपमा को विस्तार से समझाते हुए उन्हें आप पायेंगे। इसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदास के "सबै भूमि गोपाल की" तथा "सम्पति सब रघुपति कै आही", भूदान-यज्ञ तथा सम्पत्तिदान-यज्ञ के मूलमत्र बन गये हैं। तो क्या विनोबा इन सन्तो की वाणी की रट और एक बार लगा रहे है? यह सच है कि विनोबाजी सन्त-परम्परा के है, इसलिए कई बार उनकी वाणी में आप पुराने सन्तो की वाणी ही सुनेंगे।

---

आत्मोपम सभी को जो सर्वत्र समबुद्धि से,
सुख हो दुःख हो देखे, योगी परम है वही ॥३०॥

गीता सवाद अध्याय-६

लेकिन विनोवाजी की वाणी मे एक विशेषता है, जो गाधीजी की वाणी मे थी। सत्य, अहिसा, अस्तेय और अपरिग्रह आदि इन सन्तो की वाणी मे व्यक्तिगत गुण के रूप मे दिखलायी पडते थे, उनका गाधीजी ने और विनोवा ने सामाजिक मूल्यो मे परिवर्तन किया। इस तरह जव व्यक्तिगत गुण सामाजिक मूल्य वन जाते है तव उनमे समाज-क्रान्ति की शक्ति आती है। सत्य-अहिसा व्यक्तिगत गुण थे, लोग अपने निजी जीवन मे उनका अमल करना जरूरी समझते थे। लेकिन राष्ट्र-राष्ट्र के वीच असत्याचरण राजनीतिक विशेषता समझी जाती थी और हिसा को युद्ध के नाम से पूजकर कविगण उस पर महाकाव्य लिखते थे। लेकिन गाधीजी के सत्याग्रह ने सत्य-अहिसा को सामाजिक मूल्य वनाया और उसमे महान् ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा लेने की ताकत आयी। गाधीजी ने सत्याग्रह के द्वारा भय-निरसन कर जो सेवा की, वही सेवा विनोवा भूमिदान-यज्ञ के द्वारा लोभ-निरसन करके कर रहे है। अपरिग्रह और अस्तेय के गुणो के सामाजिक विनियोग का आशय यह है कि जिस प्रकार समाज मे चोरी को सामाजिक गुनाह माना जाता है, उसी प्रकार नाजायज सग्रह को भी समाज गुनाह समझे। जो काचनमुक्ति स्वामी रामकृष्ण ने अपने निजी जीवन मे सफल की उसीको विनोवा के स्वप्नो का साम्ययोगी समाज सामाजिक जीवन मे सफल करेगा।

क्या वेद, क्या उपनिषद्, क्या गीता, क्या सन्त, सभी के मुंह से जो अपरिग्रह का मत्र निकला उसका सामाजिक स्वरूप आज भूदान-यज्ञ के रूप मे हम देख रहे है। वास्तव मे विनोवा के

मुंह से आज भारतीय सस्कृति बुलन्द आवाज से बोल रही है।

भूदान-यज्ञ के बारे में विनोबा का दूसरा दावा यह है कि इसमे आर्थिक और सामाजिक क्राति के बीज है। इस बात को समझने के पहले हमे यह देख लेना चाहिए कि हमारी आर्थिक समस्या क्या है? यही न, कि जिसे भूख है उसके पास अन्न नही और जिसके पास अन्न है उसे भख नही। यह समस्या हमारे अर्थतत्र ने खडी की है। हमारा अर्थतत्र पूंजीवादी अर्थतत्र है, जिसका सिद्धान्त है कि हरएक व्यक्ति अपना उत्कर्ष साधे तो समाज की उन्नति अपने आप हो जायगी। पूंजीवाद 'ज्यादा से ज्यादा काम और कम से कम दाम' के सिद्धान्त को चातुर्य समझता है। उपर्युक्त सूत्र का परिणाम यह आता है कि समाज का हरएक व्यक्ति अपनी-अपनी उन्नति, अपनी परिस्थिति, बुद्धि तथा शक्ति के अनुसार कम से कम काम करके अधिक से अधिक दाम पाने की दृष्टि से करता है। फलत एक-दूसरे के स्वार्थ टकराते है। जिसमें मेरी उन्नति हो, सभव है उसमे आपकी अवनति हो। डाक्टर की उन्नति यदि पैसा कमाने से होती है और मरीजो की सख्या के अनुसार उसकी कमाई बढती है तो उसका स्वार्थ इसीमे है कि लोग अधिक से अधिक बीमार हो। मरीज का स्वार्थ बीमार न पडने मे है और डाक्टर का स्वार्थ दूसरो की बीमारी मे है। अत इन दोनो के स्वार्थ आपस मे टकराते है, एक का अवसर दूसरे की आफत और एक की आफत दूसरे का अवसर है। यही है पूंजीवाद का अन्तर्गत विरोध, जो उसे खतम करेगा। पूंजीवाद को खतम करने के लिए बाहरी किसी कारण की जरूरत नही

रहेगी। वह अपने अन्तर्गत विरोध के कारण ही खतम होगा। हमारे सामने प्रश्न यह है कि जो पूंजीवादी समाज-रचना अपने अन्तर्गत विरोधो के कारण आत्महत्या करनेवाली है, उस आत्मघाती समाज-रचना से हम क्यो चिपके रहे? यदि हम इस सामाजिक आत्महत्या से बचना चाहते है तो हमे यह समाज-रचना ही बदलनी होगी। आज की समाज-रचना के मूल्यो मे जडमूल से परिवर्तन करने होगे और ऐसे नये मूल्य कायम करने होगे, जिससे कोई किसीका शोपण न करे, जहाँ व्यक्ति और समाज के स्वार्थ एक-दूसरे के विरोधी नही—पूरक हो। इसी मूल्य-परिवर्तन की प्रक्रिया को कहते है क्राति। भूदान-यज्ञ मे पूंजीवाद के दो मूलभूत मूल्यो के परिवर्तन का सकेत है। पूंजीवाद के दो मूल्य है—मुनाफा और मालिकी की भावना। इन्ही मूल्यो के आधार पर यह खडा है। विनोवा ने हमे मुनाफे के स्थान पर एक नया मूल्य दिया, जिसका नाम है दान, और मालिकी के नाम पर दूसरा मूल्य दिया, जिसका नाम है यज्ञ। विनोवा के 'दान' और 'यज्ञ' मे मुनाफे और मालिकी के विसर्जन का सकेत है। मेरे पास यदि पच्चीस रोटियाँ हो और पाँच से मेरा पेट भरता है, इसलिए मै बाकी बीस रोटियाँ बाँट देता हूँ, तो मैने अपना मुनाफा बाँटा। यह हुआ दान। अमीर जो देता है वह दान है। लेकिन मेरे पास यदि तीन रोटियाँ ही है और मेरी भूख पाँच रोटियो की है फिर भी यदि किसी भूखे के लिए मै अपनी तीन रोटियो मे से डेढ रोटी दे देता हूं, तो मैने अपने मालिकी के हक मे से बँटवारा किया। यह हुआ यज्ञ। गरीब जो करता है वह यज्ञ करता है। क्रान्ति मे तीन चीजे जरूरी है—क्रान्ति का मकसद, मूल्य-परिवर्तन तथा क्रान्ति का

प्रतीक। मूल्य-परिवर्तन का विचार हमने ऊपर सक्षेप में किया। अब कुछ विचार इस क्रान्ति के उद्देश्य, कार्यक्रम तथा प्रतीको के बारे में करे।

हमारी क्रान्ति का मकसद साफ है। हम अमीरी-गरीबी को खतम कर अमीर-गरीब को बचा लेना चाहते है। प्रश्न उठता है कि क्या अमीर को खतम किये बिना अमीरी खतम हो सकेगी? जमीदार को मारे बिना जमीन बँट जायगी? अग्रेजो को मारे बिना अग्रेजी हुकूमत जा चुकी है। राजाओ को मारे बिना रियासतें भी गयी। फिर अमीर को खतम किये बिना अमीरी और जमीदार को मारे बिना जमीदारी नही जा सकती—यह विचार ही एक अपसिद्धान्त है। इस सिद्धान्त को आप अपने जीवन के दो क्षेत्रो मे लागू करके देखिये। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक से जाकर क्या यह कहेंगे कि अज्ञानी को खतम किये बिना अज्ञान खतम नही होगा? आरोग्य के क्षेत्र मे डाक्टर से क्या यह कहेगे कि रोगी को खतम किये बिना रोग खतम नही होगा? शिक्षा और आरोग्य के क्षेत्र मे शिक्षक और डाक्टर का पुरुपार्थ अज्ञान और रोग को खतम कर अज्ञानी और रोगी को उबार लेने में है। ठीक इसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र मे क्रान्तिकारी का पुरुपार्थ गरीबी को खतम कर गरीब को बचा लेने और अमीरी को खतम कर अमीर को बचा लेने में है—यही उद्देश्य, शोपणहीन समाज-रचना, सर्वोदय या साम्ययोग का है।

साम्ययोगी समाज-रचना के लिए कार्यक्रम यह है कि जिसे भूख है उसके पास अन्न पैदा करने के साधन हो और जिसे भूख नही है उसके पास अन्न-उत्पादन के साधन न हो। अर्थात् उत्पा-

दन के साधन उत्पादको के हाथ मे पहुँचाना तथा अनुत्पादक की मालिकी खतम करना, यह क्रान्ति का कार्यक्रम है।

इस कार्यक्रम को अमल मे लाने के लिए कौन-से साधन इस्तेमाल किये जायँ, इसकी चर्चा जव छिडती है तभी मतभेद की गुजाइश रहती है। वरना यहाँ तक तो सभी विचारक सहमत है कि क्रान्ति जरूरी है और क्रान्ति का कार्यक्रम यही हो सकता है कि जरूरत की चीजे जरूरतमन्दो के पास हो, उत्पादन के साधन उत्पादको के पास हो तथा अनुत्पादको की मालिकी खतम हो।

साधनो की चर्चा करते हुए विनोवा ने अच्छा मार्ग-दर्शन किया है। वे कहते है कि आज तक क्रान्ति के लिए जो साधन इस्तेमाल किये गये है उन्ही मे मै क्रान्ति कर रहा हूँ। आज तक दुनिया ने दो रास्ते आजमाये एक कत्ल का, दूसरा कानून का। विनोवा आज तीसरा रास्ता आजमा रहे है—करुणा का, प्रेम का। कत्ल, कानून और करुणा के रास्ते क्रमश तामसी, राजसी और सात्त्विक है। यहाँ पर इन तीनो की तुलना सक्षेप मे कर लेना अप्रस्तुत नही होगा।

भूदान-यज्ञ कत्ल के रास्ते का निषेध करता है। सिर्फ इस-लिए नही कि बुद्ध, महावीर, ईसा और गांधी ने हमे अहिसा का उपदेश दिया था। क्रान्तिकारी कभी अतिम पैगम्बरवादी नही होता। मुहम्मद साहव कह गये वह आखिरी शब्द—उसके वाद कुछ नये विचार नही उठ सकते, कार्ल मार्क्स ने जो वताया वही क्रान्ति का अन्तिम मार्ग, उसमे कोई सशोधन नही हो सकता, गांधी कह गये वही शेष विचार वह आगे नही वढ सकता,

ऐसा मानना दकियानूसी रूढिग्रस्त वृत्ति है। क्रान्तिकारी तो नित्य विकासशील जीवन के साथ अपने विचारो का भी विकास करता रहता है। क्रान्ति की इष्ट देवी सरस्वती है। क्रान्ति का विचार की शक्ति पर भरोसा है, किसी एक व्यक्ति के शब्द को क्रान्तिकारी अन्तिम नही मानता।

फिर भी भूदान-यज्ञ मे कत्ल के रास्ते का निषेध है। क्यो? क्योकि कत्ल के रास्ते से समस्या सुलझती नही, एक के बदले में दूसरी समस्या खडी हो जाती है। दिमाग बदलने की जगह सिर ही काट लेने का वह मार्ग है। कत्ल के रास्ते की दूसरी त्रुटि यह है कि कत्ल से शान्ति नही होती, हिंसा से हिंसा उत्तरोत्तर बढती है। आग से आग नही बुझती। कत्ल के रास्ते की तीसरी त्रुटि यह है कि हिंसा से जो क्रान्ति होती है, उसमें प्रति-क्रान्ति की संभावना बनी रहती है। दुनिया भर की हिंसक क्रान्तियो का यही अनुभव है। हमारी क्रान्ति ऐसी होती है कि उसमे जिस वर्ग का परिवर्तन करना है उसका सहयोग हमे मिलता है। इसलिए उसमे प्रति-क्रान्ति की संभावना ही नही रह जाती है। कत्ल के रास्ते की सबसे बडी त्रुटि यह है कि वह जनतंत्र का मार्ग नही बन सकता। हिंसा कभी सभीका शस्त्र नही बन सकती। वह हमेशा कुछ चुने हुए सैनिको का हथियार रहेगी। कत्ल के रास्ते से जो क्रान्ति होगी उसमे से आखिर लश्करशाही (मिलिटरिज्म) ही पैदा होती है—लोकशाही नही। कत्ल के रास्ते के खिलाफ इससे ज्यादा दलीलें पेश करने की जरूरत नही है। आजकल जो कत्ल के रास्ते की बात करते है वे भी शान्ति के नाम पर ही उसकी हिमायत करते है।

लेकिन कानून का रास्ता उससे कही अधिक लुभावना है। जो काम कानून की एक कलम से हो सकता है उसे करने के लिए विनोबा इस प्रकार दर-दर क्यो फिरते होगे? यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि विनोबा कत्ल के रास्ते का जैसा निषेध करते है, वैसा कानून के रास्ते का निषेध नही करेगे। दिल्ली की पार्लियामेट मे यदि ऐसा कानून बने कि जमीन की मालिकी अब गाँव की होगी, तो उसके खिलाफ विनोबा भूख-हडताल या पिकेटिग करने नही जायेगे। वे उसका स्वागत ही करेगे। लेकिन वे कानून के रास्ते की मर्यादाएँ जानते है। इसलिए उन्होने ऐसा रास्ता लिया है जो सबसे अधिक कारगर है और सबसे अधिक गहराई मे जाने-वाला है।

कानून की मर्यादाएँ क्या है? कानून अधिक से अधिक कुछ करे, तो बुरी प्रवृत्ति से आदमी को रोक सकता है। लेकिन वह उसे सत्प्रवृत्ति की प्रेरणा नही दे सकता। कानून बुराई से रोक सकता है, लेकिन भलाई की प्रेरणा वह नही दे सकता। कानून की दूसरी मर्यादा यह है कि वह अधिकार देता है, लेकिन उस अधिकार का उपयोग करने की ताकत नही दे सकता। कानून की और एक कमजोरी यह है कि जनमत के आधार के बिना चाहे जितना अच्छा कानून हो, तो भी वह कारगर नही होता। पूंजीवाद मे कानून का अधिष्ठान (आधार) पैसा बनता है। लश्करशाही मे कानून का अधिष्ठान शस्त्रबल बनता है। पर जब तक उसके पीछे जाग्रत जनमत का अधिष्ठान नही होता, तब तक कानून निष्फल होता है। यह जनमत जाग्रत कैसे हो? भूदान-यज्ञ जैसे जन-आन्दोलन से ही वह जाग्रत होता है।

जव भारत का बच्चा-बच्चा यह कहने लग जायेगा कि जमीन पर मालिकी सिर्फ भगवान् की (या समाज की) है, तब व्यक्तिगत मालिकी के निरसन का कानून बनने में कोई देर नही लगेगी।

कानून के मार्ग मे कानूनी दलदल मे फँस जाने की भी सभावना है। कानूनवाजी का दलदल भूलभुलैया जैसा होता है। उसमें प्रवेश करने पर सामान्य मनुष्य उसमें से आसानी से नही निकल सकता। इस कानूनबाजी का दुरुपयोग होने की, एक के वाद एक मुकदमा दाखिल करने की, सविधान बदलने की चेष्टा होने की भी सभावना रहती है। इसी को कहते है कानूनी क्षेत्र में प्रतिक्रान्ति। (Counter revolution in the legal sphere)

हमारी सारी शक्ति उस हालत में ऐसी कानूनी प्रतिक्रान्ति का मुकावला करने में खप जायगी। और भी एक कठिनाई कानून के रास्ते में है। कानून दोनो पक्षो में कलह पैदा करता है, प्रेम नही। हमे गरीबी-अमीरी खतम कर आदमी को आदमी के निकट लाना है, उन्हें दूर नही करना है। कानूनी मार्ग से हमारा यह मुख्य अभिप्राय ही नष्ट हो जाता है।

अमीरी-गरीवी को खतम कर वर्ग-निराकरण करने का जो रास्ता विनोवा ने लिया है, वह है करुणा का मार्ग। करुणा के माने सिर्फ दया के नही है। दया के साथ जव अनुरूप क्रिया मिलती है तव करुणा वनती है। करुणा की इस प्रक्रिया का आधार आदमी का मन वदलने पर है। इस क्रान्ति को केवल वस्तु-परिवर्तन से सतोप नही है, वह चाहती है, मन-परिवर्तन, वृत्ति परिवर्तन। इतिहास मे आज तक दो प्रकार की चेष्टाएँ हुई है। केवल समाज

को बदलने की तथा केवल आदमी को बदलने की। केवल समाज के बदलने की कोशिश में आदमी तानाशाही (Dictatorship) तक पहुँच गया। केवल मनुष्य बदलने की कोशिश में वह समाज छोड़कर गिरि-कदराओ तक पहुँच गया। दोनो एकांगी मार्ग हुए। भूमि-दान-यज्ञ आदमी और समाज को साथ-साथ बदलना चाहता है। इसीलिए उसकी क्रान्ति विचार-परिवर्तन, हृदय-परिवर्तन तथा परिस्थिति-परिवर्तन के तिहरे कार्यक्रम पर निर्भर है। यह एक ऐसा त्रिकोण है जिसकी भुजाओ का असर एक-दूसरे पर होता है। विचार-परिवर्तन से परिस्थिति बदल सकती है और परिस्थिति बदलने से विचार बदल सकता है। भूमिदान-यज्ञ मे कुछ लोग जमाने के प्रवाह को समझकर विचारपूर्वक दान देते है, कुछ लोग दरिद्रनारायण के प्रति प्रेम-भाव के कारण देते है। ऐसे अनेक लोगो के दान के कारण वाता-वरण पर एक ऐसा नैतिक प्रभाव पडता है कि दूसरे लोग भी उसमे देते है। हजारो किसानो के छोटे-छोटे दानो के कारण जो नैतिक प्रभाव पडा उसे देखते हुए कई बड़े जमीदारो ने जमीने दी है। यह परिस्थिति-परिवर्तन के कारण हुए मन-परिवर्तन का उदा-हरण है।

करुणा के मार्ग पर जानेवाला इस श्रद्धा से चलता है कि मनुष्यमात्र मे कही न कही अच्छाई का अंश छिपा पडा है। उसे खोजने की वह अखड़ कोशिश करता है। करुणा का मार्ग सफल होगा या नही यह अब तर्क का विषय नही रहा। उसकी सफ-लता अब सिद्ध हो चुकी है। लाखो लोगो के दान ने, तीन सौ से अधिक ग्रामो के ग्रामदान ने और अनेक पावन प्रसंगो ने इसे

सिद्ध कर दिया है। इस क्रान्ति का प्रतीक है जमीन, जिस पर परिश्रम कर परिश्रम करनेवालो के युग का आरम्भ होगा।

भूदान-यज्ञ के लिए विनोबा ने तीसरा दावा यह किया है कि इससे दुनिया में शान्ति-स्थापना के लिए मदद मिल सकती है। कितना बुलन्द दावा! मुट्ठी भर जमीन की लेन-देन के साथ कितनी बडी बात जोड दी है? इस दावे को समझने के लिए हमें जगत् के रगमच को सक्षेप मे तथा नम्रता के साथ समझ लेना चाहिए। साम्यवादी और पूँजीवादी देश आज एक-दूसरे के डर के कारण उत्तरोत्तर अधिक सहारकारी शस्त्रास्त्रो की खोज करते रहे हैं। इन देशो में से पहला वर्ग तानाशाही (Dictatorship) में विश्वास रखता है और दूसरा वर्ग जनतत्र में। तानाशाही शीघ्र परिणामदायिनी होती है, इसलिए वह आकर्षक भी मालूम होती है। लेकिन हम उसे स्वीकार नही कर सकते। क्योकि तानाशाही मानवता मे विश्वास नही रखती। आधुनिक तानाशाही के जनक हिटलर ने अपनी आत्मकथा में अपने जीवन का मूलमत्र बतलाया है—बीस गधे मिलकर एक आदमी नही बनता। यानी अपने इर्दगिर्द के बीस गधो पर शासन करने के लिए वह खुद पैदा हुआ है, ऐसा हिटलर मानता था। अपने इर्दगिर्द के देशो पर शासन करना जर्मनी का हक है, अपने इर्दगिर्द की जातियो पर शासन करने का आर्यजाति का जन्मसिद्ध अधिकार है, ये सारे सिद्धान्त मानव को मानवीय स्वतत्रता न देने के उपर्युक्त सिद्धान्त मे से फलित हुए हैं। जो सिद्धान्त मानव को मानव नही मानता वह चाहे जितना शीघ्र परिणाम देनेवाला क्यो न हो

हम उसको स्वीकार नही कर सकते। अव रह जाता है जनतंत्र। आज परिस्थिति यह है कि जो जनतंत्रवाले देश है उनमे क्रांति की शक्ति नही दीख पडती। गरीवी-अमीरी को खतम करने की ताकत जिस लोकशाही मे नही उस लोकशाही का मतलव भी क्या है? इसलिए आज दुनिया के तमाम जनतत्रात्मक देशो के सामने प्रश्न यह है कि जनतत्र मे क्राति की शक्ति कैसे आये? इसी प्रश्न का उत्तर भूदान-यज्ञ देता है। वह कहता है कि जव तक हमारी लोकशाही सख्या-वल पर (Quantative) निर्भर रहेगी—आकारात्मक रहेगी—तव तक उसमे क्राति की शक्ति पैदा नही होगी। उसके लिए जनतत्र की वुनियाद वदलकर हमें उसे गुणात्मक (Qualitative) वनाना होगा। जो जनतत्र मानवीय गुणो पर खडा नही होगा, केवल सख्या-वल पर खड़ा होगा, उसमे क्राति की ताकत पैदा नही होगी। आकारात्मक जनतत्र मे सत्ता केन्द्रवर्ती होगी, सेवा नही। तो मानवीय गुणो का वीजारोपण होगा कहाँ से? यही पर विनोवा का चाण्डील का वह भव्य प्रवचन हमे प्रकाश देता है, जिसमे उन्होने हिंसा-शक्ति की विरोधी, दडशक्ति से निरपेक्ष ऐसी स्वतत्र जनशक्ति के निर्माण का आवाहन किया था*। जहाँ इस प्रकार की जनशक्ति विकसित होती है वही गुणात्मक जनतत्र कायम हो सकता है। और ऐसी जनशक्ति पैदा करने का एकमात्र उपाय है त्याग-मूलक जन-आन्दोलन। इसीलिए भूदान-यज्ञ विश्वशान्ति की दिशा मे मार्गदर्शक वनता है। भूदान-यज्ञ से भारतीय जनता की जन-

* देखिये, 'सर्वोदय का घोषणा-पत्र'—विनोवा

शक्ति बढेगी, उसका गुण-विकास होगा, जिसके कारण हमारे देश में ऐसा जनतत्र कायम होगा जिसने जनतत्र के यक्ष-प्रश्न गरीबी-अमीरी के सवाल को हल किया होगा। यदि जनतत्र मे क्राति की शक्ति आती है, तो जनतत्र बच जाता है। और यदि जनतत्र बच जाता है, तो मानवता बच जाती है।

एक दूसरे दृष्टिकोण से इसी मसले को देखे। आज रूस और अमेरिका दोनो शान्ति की बाते करते है। रूस शान्ति के लिए स्टेलिन इनाम निकालता है, शान्ति के लिए प्रतिनिधि-मडलो को विदेश भेजता है। लेकिन देश के आन्तरिक मामले को सुलझाने मे उसकी वर्गविग्रह की नीति जाहिर है। बाह्यशान्ति, अतर् अशान्ति। अमेरिका देश के आन्तरिक मामलो में शान्ति की हिमायत करती है। लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय मामलो में उसके ऐटम बम के प्रयोग जारी है। अन्तर् शान्ति, बाह्य अशान्ति। भारत की विदेश नीति इन दोनो विचारो से स्वतत्र है। श्री जवाहरलाल नेहरू ने शान्ति की जो आवाज उठायी है उसकी ओर सारी दुनिया आशा से टकटकी लगाये देख रही है। लेकिन नेहरूजी को इस आवाज को ताकत कहाँ से मिलेगी ? देश के प्रश्न यदि हम शान्ति से सुलझा सकेगे तभी अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे हम शान्ति की बात कह सकेगे। जिस पूंजीवाद और साम्यवाद से स्वतत्र रहने का हम दावा करते है उसके दूत तो क्रमश अमीरी और गरीबी के रूप में हमारे देश मे मौजूद है। इन दोनो को जब तक हम हटाते नही तब तक हमारी अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति-नीति मे कोई ताकत नही आती। भूदान-यज्ञ यही ताकत हमे देता है।

भारतवर्ष के इतिहास को देखने से पता चलता है कि हमारे देश की दो खूबियाँ है—भारत ने कभी किसी देश पर राजनैतिक आक्रमण नही किया है और भारत मे बाहर से जितनी सस्कृतियाँ आती गयी वे सारी की सारी इस देश ने अपने महान् हृदय-सपुट मे समा ली है। भारत मे उत्तर भारत की पहाडी आर्य सस्कृति तथा दक्षिण भारत की सामूहिक सस्कृति का समन्वय हुआ। उत्तर भारत के बुद्ध-महावीर की आत्मज्ञान की विचारधारा दक्षिण मे रामेश्वर तक जा पहुँची। दक्षिण से शकराचार्य, रामानुज, माधवाचार्य ने उत्तर भारत की आत्मज्ञान की विचार-धारा मे दक्षिण भारत की भक्तिधारा मिला दी। भारत मे राज्य तो अनेक थे, लेकिन सास्कृतिक राज्य हमेशा आसेतु-हिमालय एक ही रहा। उसके बाद मुसलमान आये। उनमे से कुछ ने युद्ध का रास्ता लिया। कुछ ने प्रेम का। प्रेम के रास्ते-वालो का परिणाम हमारे देश पर काफी पडा। इस्लाम ने हमारी भेदमूलक जाति-व्यवस्था पर काफी आघात किये। अब तक भारत मे जो सस्कृति का रसायन तैयार हो रहा था उसमे विज्ञान का अभाव था। योरप मे उस समय विज्ञान की अनेक खोजें हुई। इन वैज्ञानिक खोजो का लाभ उठाते हुए अग्रेज भारत मे आये और उन्होने हमे पराधीन बनाया। सघर्ष शुरू हुआ। और सघर्ष के माध्यम से ही सम्मिश्रण पैदा हुआ। वह थी सामूहिक अहिसा। विज्ञान की प्रगति के कारण आज दुनिया इतनी छोटी बन गयी है कि उसमे कोई आन्दोलन निरा एकान्तिक रह नही सकता। वह सामूहिक बन जाता है। वैसा ही हमारी अहिसा का हुआ। जमाने की माँग स्वतंत्रता की थी। हम नि.-

शस्त्र थे, अग्रेज जबर्दस्त सेनावाले थे। परिस्थिति हर तरह से अहिंसा धर्म के अनुकूल थी। जमाने की माँग जब धर्म के साथ मिल जाती है तब धर्म-चक्र-प्रवर्तन होता है। युग की माँग जब एक महापुरुप के मुँह से निकलती है तब वह युग-पुरुष कहलाता है। गाधीजी हमारे बीच मे युग-पुरुष के रूप में आये। उन्होने जमाने की माँग, स्वतत्रता, को अहिंसा के साथ जोडकर धर्म-चक्र-प्रवर्तन किया। जगत् को सामूहिक अहिंसा की महान् भेंट मिली। जगत् के इतिहास मे अब भारत की वेला आयी है। जिस सामूहिक अहिंसा का प्रवेश राजनीति के क्षेत्र मे कर उसने स्वतत्रता पायी उसी सामूहिक अहिसा का प्रयोग आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में कर वह जगत् के सामने सर्वोदय समाज का आदर्श रखने जा रहा है। मनु महाराज ने हजारो वर्ष पहले कहा था "स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवा"—पृथ्वी के सब लोग भारत के श्रेष्ठ व्यक्तियो से चरित्र की शिक्षा लेंगे। हमारा और आपका यह परम सौभाग्य है कि पृथ्वी को आत्मज्ञान और विज्ञान के सयोग से निष्पन्न सामूहिक अहिसा की प्रत्यक्ष शिक्षा देनेवाले दो युग-पुरुप हमने देखे—एक महात्मा गाधी और दूसरे विनोबा।

: ५ :

# थोड़ा-सा शंका-समाधान

भूदान-यज्ञ की वैचारिक भूमिका हमने देख ली है। देश तथा जगत् के इतिहास मे भी वह किस प्रकार एक आवश्यक आन्दोलन बन गया है यह भी हमने देख लिया। भूदान-यज्ञ के व्यावहारिक पहलू पर हम आगे विचार करेगे। यहाँ हम कुछ प्रश्नो को लेगे जो कि अक्सर लोग इस आन्दोलन के विषय में पूछते है। यह स्वाभाविक है कि इतने बडे आन्दोलन के विषय मे नित्य नये प्रश्न उठते रहे। आज तक वैसे सैकडो प्रश्नों के उत्तर विनोवा अलग-अलग प्रसगो पर दे चुके है। इस छोटी-सी पुस्तिका मे उन सब प्रश्नो का समावेश करना शक्य भी नही है, जरूरी भी नही है। यहाँ तो उनमे से कुछ चुने हुए प्रश्नो को प्रश्नोत्तरी के रूप मे ले लेते है।

प्रश्न : आप जमीन से आरम्भ क्यो करते है, कारखाने आदि से क्यो नही ?

उत्तर : हमारे देश मे जो विषमता है उसका स्वरूप शहरो मे तीव्र रूप मे दीखता है। कारखाने के मालिक और मजदूर के बीच का अन्तर साफ नजर आता है। इसलिए यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है। लेकिन यह कार्यक्रम जमीन से आरम्भ करने के कई जोरदार कारण है। पहला कारण यह है कि हमारी

सबसे बडी समस्या भूख है। भूख का जवाब अन्न है और अन्न उपजाने का साधन जमीन है।

दूसरा कारण यह है कि हमारे देश की अधिकाश जनसख्या जमीन पर जीती है। इसलिए हमारे देश मे वही क्राति राष्ट्र-व्यापी हो सकती है, जिसका सम्बन्ध कृषको से है भारत की क्राति की विभूति किसान ही होगा।

तीसरा कारण यह है कि उत्पादन के सारे साधनो का कच्चा माल धरती से निकलता है। कपास, कोयला, तेल, लोहा आदि सारी उत्पादन की सामग्री वसुधरा धरित्री से ही निकलती है। इसलिए उत्पादक की मालिकी का आरभ हम जमीन से करते है।

जमीन हमारी प्राथमिक आवश्यकता पूरी करती है। दूसरी विषमता कुछ देर तक सही जा सकती है, लेकिन जमीन की नही।

भूमि का प्रश्न कारखानो, उद्योग आदि से एक और अर्थ में भिन्नत्व रखता है। ये सारे कारखाने, उद्योग आदि तभी चल सकते है, तथा कायम रह सकते है, जब किसान की खेती अच्छी चले। जमीन से जो उत्पादन होता है, उस पर शेष उत्पादन अवलवित है। जमीन ही यदि न रहे, तो वाकी चीजें बहुत बढी या न वढी, तो भी उनका जीवन की आवश्यकताओ से बहुत अधिक सम्बन्ध नही रहता। अत एक वार जमीन का विषम-विभाजन दूर हुआ, तो शेप विपमताओ को तोडने की चावी हाथ में आ जाती है। क्या यह सभव है कि भूमि का तो समान वितरण हो जाय पर और सपत्ति का न हो ? प्रश्न किसे पहला स्थान दे, इतना ही है।

प्रश्न   इस प्रकार माँगने से काम कब तक पूरा होगा ?

उत्तर ' इसका जवाब हम और आप पर निर्भर है। यदि हम सब अपनी पूरी ताकत लगाये तो कोई कारण नही कि देश के भूमिहीनो को जमीन दिलाने मे विशेष देर लगे। लेकिन यदि हम उदासीन रहे और पूछते रहे कि यह आन्दोलन कब सफल होगा तो देर भी लग सकती है। क्रान्ति के आन्दोलनो की गति अकगणित से नही नापी जाती, बीजगणित से नापी जाती है क्या। हम यह हिसाब कर सकते है कि घास की गजी का एक तिनका जलने मे एक सेकेण्ड लगा तो पूरी गजी जलने मे कितना समय लगेगा ? आपका हिसाब पूरा भी नही होगा, तब तक गजी भस्मीभूत हो जायगी। गाधीजी ने जब नमक बनाया था तब कुछ गणिती लोग यह हिसाब करने लगे थे कि इस तरह समुद्र कब खाली होगा और नमक का भण्डार कब भरेगा। लेकिन इधर वे हिसाब कर रहे थे, उधर दिल्ली की राजधानी का सिहासन डोल उठा था। अकगणित मे आँकडे होते है। बीजगणित मे सकेत। संकेतो की कीमत उतनी बढ सकती है जितनी हम उनके पीछे भावना भरे। गाधीजी के नमक बनाने मे सकेत था, अन्यायी कानून के भग का। उसी प्रकार भूदान-यज्ञ मे मुनाफे और मालिकी के विसर्जन का सकेत है। हम यह हिसाब नही करते कि एक साल में एक लाख एकड जमीन मिली तो पाँच करोड एकड जमीन प्राप्त करने मे कितने साल लगेगे। पहले साल एक लाख एकड जमीन मिली थी, दूसरे साल सात लाख एकड जमीन मिली, तीसरे साल बाईस लाख एकड जमीन मिली।

श्री राममनोहर लोहिया ने एक निवेदन मे कहा था कि इस

मार्ग से जमीन का प्रश्न हल करने में तीन सौ साल लगेंगे। विनोबा ने उसके जवाब में कहा था कि मेरे हिसाब से तो पाँच सौ वर्ष लगने चाहिए, क्योकि एक साल मे एक ही लाख एकड जमीन मिली है। लेकिन लोहियाजी कहते है कि यह काम तीन सौ वर्ष मे पूरा होगा। इसका मतलब यह है कि पाँच सौ के तीन सौ वर्ष करने मे मुझे लोहियाजी की मदद मिलेगी। लोहियाजी की मदद से यदि पाँच सौ के तीन सौ साल हो सकते है, तो जयप्रकाशजी की मदद से नीन सौ के तीस क्यो नही हो सकते? और जयप्रकाशजी की मदद से यदि तीस हो सकते है तो जनता की मदद से तीस के तीन क्यो नही हो सकते? विनोबा ने तो इस काम के पूरे होने के लिए १९५७ के साल की ओर इशारा भी कर दिया है। असल मे यह प्रश्न हमारे विधायक पुरुषार्थ का है—गणित और अनुमान का नही।

प्रश्न वडे जमीदारो से जमीन माँगना तो ठीक है, मगर जिनके पास थोडी सी जमीन हो, ऐसे लोगो से क्यो माँगते है?

उत्तर विनोबा ने इसके चार कारण वताये है (१) वे समाज में हर किसीको अपने से बुरी हालतवाले आदमी के लिए कुछ-न-कुछ त्याग करने की प्रेरणा देना चाहते है। गगा का पानी भी ऊपर से नीचे जाता है। छोटी-सी कटोरी मे से जो पानी गिरता है वह भी ऊपर से नीचे ही जाता है। जिस प्रकार पानी का धर्म ऊपर से नीचे जाना है उस प्रकार मनुष्य का धर्म अपने से नीचेवालो की ओर देखना है।

(२) हमे मालिकी की भावना ही खतम करनी है। मालिकी की भावना अमीर की तरह गरीब में भी रहती है। वावाजी को

अपनी लगोटी की आसक्ति हो सकती है। आसक्ति-निरसन का कार्यक्रम छोटे-वडे सबके लिए समान रूप से लागू होता है।

(३) छोटे लोगो के दान से एक नैतिक वातावरण पैदा होता है। छोटे लोगो की झोपडी मे वडे लोगो की तिजोरी की कुंजी होती है। झोपडी का द्वार खुलने से तिजोरी खुल सकती है।

(४) गुलामी के खिलाफ गुलाम लोग लडे थे, गरीवो के खिलाफ गरीव लोग लडेगे। छोटे लोगो के दानपत्रो द्वारा गरीवों की सेना तैयार हो रही है। इसमे वर्ग-विग्रह की भावना नही है। क्योकि दान देने वाले वडे भी हमारी त्यागी सेना के सैनिक वन जायेगे।

गरीव से दान लेने का एक कारण यह भी है कि हम गरीव को दीन नही वनने देना चाहते। वह थोडा-सा भी देगा तो वंटवारे के समय सिर ऊँचा रखकर भाग ले सकेगा।

और एक कारण यह भी है कि हम गरीव आदमी को दूसरे गरीवो से मिलाना चाहते है। आज तो दो वीघावाले का स्वार्थ, पाँच वीघावाले के स्वार्थ से टकराता है। गरीव भी गरीव का प्रतिस्पर्धी वनता है। यदि एक गरीव दूसरे गरीव के लिए कुछ-न-कुछ देने के लिए तैयार हो, तो गरीवो के वीच हृदय की एकता कायम होगी और गरीवो की ताकत पैदा होगी।

प्रश्न गरीव अपने पूर्वजन्म के कर्मो के कारण गरीव है, उसके नसीव को आप कैसे वदल सकेगे ? क्या समानता की कल्पना ही कुदरत-विरोधी नही है ?

उत्तर . पूर्वजन्म के पाप से जो अंधा पैदा हुआ है, उसे क्या आप लकडी नही देते ? आप यदि पूर्वजन्म मे विश्वास रखते है

आखिरी कदम समग्र ग्राम-दान है। उस हालत मे जमीन के टुकडो का सवाल इतना तीव्र नही रहेगा।

प्रश्न क्या अनपढ भूमिहीनो को जमीन देने के कारण उत्पादन नही घटेगा ?

उत्तर भूमिहीन अनपढ है, लेकिन इसका मतलब यह नही कि वे खेती करना नही जानते। आज भी सारी दुनिया की खेती तो ये अनपढ मजदूर ही करते है, और अच्छी तरह करते है। उनमे यदि कोई कमी है तो वह योजना-शक्ति की। किस समय क्या काम करना यह शायद उन्हें नही सूझेगा। इसका सबसे वडा कारण तो यह है कि आज तक उन्होने कोई जिम्मेवारी नही सभाली। जमीन मिलते ही उन्हे जिम्मेवारी का भान होगा। आज जो वृत्ति है उसके वदले मे काम को अपना समझकर नया उत्साह आयेगा। आज से पहले कई वार कुछ भूमिहीनो को राजा के द्वारा जमीन देने के कार्यक्रम हुए है और कभी-कभी वे निष्फल रहे है। शायद इसीके अनुभव पर से यह प्रश्न उठा हो। ऐसे प्रसगो में अक्सर हुआ यह है कि जमीनें अपर्याप्त मात्रा में दी गयी है, तथा साधन भी नही दिये गये। इसलिए भूमिहीन अपनी रोजी.की फिक्र मे जमीन पर पूरा समय काम भी नही कर सकता, न पूरे सावन ही जुटा सकता है। लेकिन भूमिदान-यज्ञ मे आप जिसे जमीन देगे उसे तो आप भूखा रखना नही चाहेंगे न ? आप शायद उसे साधन भी जुटा देंगे। आपसे यदि वह न हो सके तो, सपत्तिदान या साधन-दान में से उसे साधन मिल सकते है। और आपके पास योजना-शक्ति हो तो क्या उसका लाभ भूमिहीन को नही देगे ? वह तो आपके परिवार का एक सदस्य वन जायेगा

न? आपकी योजना-शक्ति और उसकी उत्साह-भरी कार्य-शक्ति मिलकर तो शायद आज तक उस जमीन पर जितना उत्पादन होता था उससे अधिक ही होगा। लेकिन फिर भी मान लीजिये कि कुछ जगह अनुभवहीन भूमिहीनो को जमीन देने के कारण उत्पादन घटा। तो उतनी जोखिम उठाकर भी गैर जिम्मेदार और अनुत्साही काश्तकारो को—जिनका अस्तित्व समाज के लिए एक खतरा-सा है—जिम्मेदार तथा समाजोपयोगी बनाना चाहिए।

प्रश्न सहकारी खेती की तरफ भूदान-यज्ञ का रुख कैसा है?

उत्तर वह उसका विरोध नही करता, लेकिन उसे अनिवार्य शर्त के तौर पर नही रखता। अत मे गॉव मे किस प्रकार की खेती हो, उसका निर्णय ग्रामजन ही करेगे।

परिस्थिति के अनुसार-जगह जगह अलग-अलग तरह की खेती हो सकती है। सहकार करने मे जहॉ ज्यादातर किसान अनपढ हो वहाँ मैनेजर के हाथ मे सारा कारोबार चले जाने का सभव रहता है। लेकिन अगर भूमिहीन स्वय सहकारी खेती करना चाहेगे तो उनको कोई रोकेगा नही। बैल, सिंचाई आदि की व्यवस्था मे तो शुरू से सहकार का प्रबध सोचा जा सकता है।

प्रश्न भूमि-वितरण के बाद जो आबादी बढेगी उसका क्या ?

उत्तर जनसख्या का सवाल सिर्फ भूदान-यज्ञ के लिए ही नही लागू होता। वह हर प्रकार के आयोजन के लिए लागू है। एक बार भूमि का बटवारा कर दिया, इससे भूमि का प्रश्न सदा के

लिए हल हो गया, ऐसा मत मानिये। आज का भूमिदान-यज्ञ आज का सवाल हल करने के लिए है। इस ससार मे सत्य के सिवा और कोई चीज शाश्वत नही है। इसलिए जब वह प्रश्न खडा होगा तब उस जमाने के लोग उसका उचित हल ढूंढेगे। फिर भी आज की योजना मे उसके उपाय के बीज मौजूद है। भूमिदान-यज्ञ की अतिम कल्पना तो यह है न, कि जमीन गाँव की होगी। गाँव मे हर पद्रह-बीस साल में एक बार फिर जमीन का बँटवारा किया जायेगा। और जनसख्या बढेगी तो साथ ही काम करने-वालो की सख्या भी तो बढेगी। कृषि-विज्ञान भी प्रगति करेगा। पानी तथा खाद की व्यवस्था भी बढेगी। उस हालत में आनेवाले कई वर्षों तक तो उत्तम प्रकार की खेती के जरिये हम ज्यादा लोगो को काम और खाना दे सकेगे। खेती के साथ ही ग्रामोद्योग के विकास की भी कल्पना है। उसके कारण खेती पर से काफी बोझ घट सकता है।

प्रश्न दान में मिली जमीन मे से अधिकाश जमीन खराब होती है। ऐसी जमीन भूमिहीनो को देने से क्या फायदा?

उत्तर दान मे मिली जमीन किस प्रकार की है उसका पता बँटवारे के समय चलता है। आज तक जो जमीन बाँटी गयी है उस पर से यह नही कहा जा सकता कि अधिकाश जमीन खराब मिलती है। अक्सर बडे जमीदार जब जमीन के बडे चक देते है, तब उनमे अच्छी-बुरी दोनो प्रकार की जमीन मिलती है। छोटे जमीन मालिको ने लाखो की सख्या मे जो दानपत्र दिये है उनमे से अधिकाश ने उत्तम जमीन दी है। विनोबा जब सब की सब जमीने माँगते है तब उसमे अच्छी-बुरी सब प्रकार की जमीन

का समावेश होता है। ऐसा पाया गया है कि जमीन खराब दी जाती है यह अफवाह अक्सर ऐसे लोग शुरु करते है, जिनके पास जमीन है, लेकिन जो स्वय नही दे सके है। दूसरे का दान निम्न स्तर का है, ऐसा सिद्ध करने की उनकी चेष्टा होती है। हाँ, यह सभव है कि दाता वह जमीन देता है जो उसके रहने के स्थान से दूर हो या जो टुकडा उसकी अधिकाश जमीन से अलग दिशा मे हो। यह जरूरी नही कि वह जमीन खराब ही हो। जो टुकडा देनेवाले के लिए आर्थिक दृष्टि से कम आमदनी का हो, सभव है कि लेनेवाला उसे खुशी से ले, क्योकि उसके लिए तो वह जीवन-निर्वाह का आलम्बन बन जाता है।

अक्सर बडे जमीन मालिक अपनी पूरी जमीन को सँभाल नही रख सकते। ऐसी हालत मे जो टुकडा भूमिहीनो के पास जाता है उस पर पहले से अधिक उत्पादन होने की सभावना बढती ही है।

इस विषय मे और भी एक मुद्दे पर विचार करना चाहिए। भूमि यदि प्रेम से माँगने के बदले कानून से जबरदस्ती छीन ली जाती तो लोग अपने पास सबसे बढिया जमीन रखकर सबसे घटिया जमीन कानून के लिए अलग कर देते। आज भूदान-यज्ञ के जरिये उत्तमोत्तम जमीने भी मिलती है। वह तो कानून के जरिये मिलती ही नही। और भूमिदान-यज्ञ जमीन के साथ जो सद्भावना ले आता है वह कानून के जरिये आती ही कहाँ से?

यह भी स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी ऐसी जमीन भी मिलती है जिसे कोई भूमिहीन लेने के लिए तैयार नही होता। उस हालत मे भूदान सेवक यह सोचता है कि दाता ने ऐसी जमीन

दी क्यो ? यह जाहिर है कि दाता ने प्रतिष्ठा की लालच से जमीन तो दी है। लेकिन उसके दिल मे भूमिहीनो के प्रति प्रेमभाव नही पैदा हुआ। ऐसी अवस्था मे भूदान-सेवक वह जमीन दाता को उसकी प्रतिष्ठा के साथ प्रेमपूर्वक लौटा देता है। ऐसे प्रसगो में यदि दाता को प्रतिष्ठा की कुछ परवाह होती है, तो वह खराब जमीन के वदले में अच्छी जमीन भी दे देता है।

कई जगह ऐसी जमीने भी मिली है जिन पर खेती नही हो सकती। लेकिन इस पर पत्थर तोडने का कायमी धधा भूमिहीनो को मिल जाता है। यह धधा कई वार कृषि से भी अधिक अच्छे उपार्जन का साधन वन जाता है।

जहाँ जरूरत हो वहाँ कुछ जमीन का गोचर, खाद के गड्ढे वनाने मे या अन्य कोई सामाजिक काम मे भी उपयोग होता है।

प्रश्न एक ओर से आप जमीन माँग रहे है, दूसरी ओर से जमीदार लोग किसानो को वेदखली कर रहे है। आप बेदखली का विरोध क्यो नही करते ?

उत्तर हम बेदखली का विरोध करते ही है। उत्तर प्रदेश के किसानो को तो विनोवा ने यहाँ तक कह दिया था कि आपको कोई जवरदस्ती से वेदखल करना चाहे तो आप मार खाइये, लेकिन खेत पर से मत हटिये। विनोबा की इस सलाह का वहुत अच्छा परिणाम हुआ था। विहार मे भी विनोवा ने वेदखली का जाहिर विरोध किया है। विनोवा तो कहते है कि वे किसीके काजी वनने नही जायेंगे। कानून जिसे चाहे जमीन की मालिकी दे। हम तो जमीदार से इतना ही कहेंगे कि किसान को भूमिहीन मत वनाओ। आप यदि वेदखली में मिली हुई जमीन हमें देंगे तो

उसे भी दान के तौर पर स्वीकार करेंगे। देनेवाले का पापच्छेद होगा और जमीन हम उसी को लौटा देंगे जिससे वह छीनी गयी है। झगड़ा यदि मिट जाता है तो हमें जमीन-मालिक को दान की प्रतिष्ठा देने में कोई हर्ज नही है।

भूदान के कार्यकर्ताओ से विनोबा यही कहेंगे कि यदि उनके प्रदेश में बेदखलियाँ चल रही है तो उनका फर्ज है कि वे इस विषय में दिलचस्पी ले। कई बार मामला भूमिदाताओं को जाकर नम्रता से समझाने से हल हो जाता है।

प्रश्न यदि भूदान-यज्ञ सफल नही हुआ तो विनोबा क्या करेंगे ?

भूदान-यज्ञ सफल नहीं होगा, ऐसा मानकर आगे का विचार करना भी अश्रद्धा का सूचक है। विनोबा इस प्रकार सोच ही नही सकते। वे तो कहते है कि मैं किसी आप्तजन की बीमारी में जब औषधोपचार करता हूँ तब साथ-साथ यह नही सोचता कि यदि यह प्रयोग सफल नही हुआ तो अन्त्येष्टि क्रिया के लिए लकड़ी का भी इन्तजाम कर रखूं।

असल मे भूदान-यज्ञ के आज तक जो परिणाम हुए है, उनको देखते हुए उसके सफल होने की आशा अधिक दीख पड़ती है। यदि कही असफलता हुई है तो वह कार्यकर्ताओ की कमी के कारण, इस तरीके की सदोषता के कारण नही। बिहार में विनोबा भूमि-समस्या हल करना चाहते थे। बिहार छोड़ने से पहले वे अपने लक्ष्यांक तक नही पहुँच सके। ३२ लाख एकड़ जमीन की माँग थी। उसके बदले मे २२ लाख एकड़ से कुछ अधिक जमीन मिली है। इससे निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि बिहार में

भूदान-आदोलन सफल नही हुआ। लेकिन हमे इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि विहार के कुल देहातो में से केवल एक-तिहाई देहातो तक भूदान का सदेश पहुँच पाया है। फिर भी इतना वडा परिणाम आया है। इससे यही पता लगता है कि यदि त्रुटि है तो हमारे प्रयत्न मे है, तरीके मे नही।

फिर भी यदि सन् १९५७ तक भूमि-समस्या हल नही होती तो अहिसा की मर्यादा मे रहते हुए जितने भी और उपाय किये जा सकते है, उनसे विनोवा हिचकिचायेंगे नही। लेकिन असहयोग, सत्याग्रह आदि साधन अतिम है। उससे पहले समझाने के पूरे प्रयत्न तो हो जाने चाहिए न? और सत्याग्रह के लिए सत्याग्रही की अपनी भी तो कुछ तैयारी चाहिए? भूमिदान यज्ञ के लिए जो कोशिशे होती है, उनसे यह तैयारी भी सहज ही हो जाती है। लेकिन वहुत सभव है कि उसका मौका ही न आवे।

प्रश्न भूमिदान तो आप माँग रहे है, परतु कभी षष्ठाश की माँग करते है, कभी पूरे गाँव की, कभी कुछ। एक वार आप अपना भूमि-वितरण सवधी स्पष्ट चित्र हमे वता दीजिये कि वह कैसा रहेगा?

उत्तर विनोवा ने यह कहा है कि 'भूमि भगवान् की है, उसकी ओर से समाज की है और वह रहेगी जोतनेवाले के पास।' यानी भूमि का स्वामित्व हमने व्यक्तिगत नही माना है। भूमिदान-यज्ञ का भूमि सवधी अतिम ध्येय है, गाँव की सारी जमीन गाँव-समाज की मालकियत की वनाना। लेकिन यह कदम हम एकदम नही उठा रहे है। क्योकि हमारी प्रक्रिया विचार-क्रान्ति की प्रक्रिया है। इसलिए पहला प्रश्न हमने हाथ में लिया, गाँव के

वेजमीन मजदूरो का, जिन्हे सर्वप्रथम आवश्यक जमीन मुहैया करानी है। सारे देश से औसतन छठा-हिस्सा प्राप्त हो जाने पर वेजमीनो का प्रश्न हल हो जाता है। यह हमने पीछे के प्रकरणो मे देखा है। इस प्रश्न के हल करने मे ही हमने यह भी भूमिका रखी है कि हर घर एक अधिक व्यापक परिवार का अगरूप-में माना जाय, और व्यापक परिवार के लिए उसके हक का छठा हिस्सा प्राप्त हो।

इसके वाद की हमारी मॉग है कि जितनी आप स्वय जोत सकते है, उतनी ही जमीन रखे। वाकी जमीन गाँव-समाज को अर्पण हो, जिसमे से गाँव-समाज कम जमीनवालो को पर्याप्त जमीने देगा और उन वेजमीनो को भी देगा, जिन्हे अव तक न मिली हो। यह माँग अर्थात् उन्ही लोगो से ही है, जिनके पास षष्ठाश देने के वाद भी पर्याप्त जमीनें वच जाती है। परन्तु यह माँग भी हम विचार-परिवर्तन द्वारा ही उनके सामने रखते है और कहते है कि जहाँ आपने भूमि का निजी स्वामित्व तज दिया, वहाँ जरूरत के मुताविक ही जमीन रखने की भी स्वीकृति दे दी। षष्ठाश के वाद की यह प्रक्रिया है। आज ही इसका भी आरभ कई जगह हो चुका है।

हमारी अतिम माँग है, सर्वप्रथम सारी की सारी जमीन गाँव की मालकियत की वनाकर गाँव-समाज को वह अर्पित कर दें। यह गाँव-समाज सारे गाँव का अविरोधी सर्वसम्मति से चुना हुआ प्रतिनिधि मडल होगा। सवका प्रतिनिधित्व उसमे वरावर और अनिवार्यत रहेगा।

फिर यह गाँव-समाज या सर्वोदय-मडल प्रत्येक को आव-

श्यकता देखेगा कि उसके घर में कितने प्राणी है, कितने जोत सकते है, कितनी भूमि गाँव में है। फिर गाँव की भूमि के अनुपात में वह प्रत्येक खेतिहर को, जो खेती करना चाहेगा, जमीन बाँट देगा। यह जमीन प्रति व्यक्ति एक एकड होगी—ऐसा हमारा अदाज है। कही दो एकड भी हो सकती है, कही अधिक भी। कही ज्यादा जमीन बचे, तो अन्यत्र के भूमिहीनो को भी आमन्त्रित किया जायेगा, जहाँ उनके लिए जमीन बच ही न सकी हो।

इस प्रकार सवकी व्यक्तिगत आवश्यकता और जमीन का परिमाण देखकर जमीन बाँटी जायगी, परन्तु उसमें दो शर्तें रहेगी। एक तो कुछ जमीन गाँव के सामूहिक उपयोग के लिए रख ली जायगी, जिसमें सवको अपना श्रमदान देना होगा और फलप्राप्ति भी सवके लिए होगी, जिसमें से गॉव के सामूहिक खर्च चलेंगे। दूसरे, चरागाह आदि के लिए भी कुछ जमीन छोड दी जायगी।

एक वात यहॉ स्पष्ट है कि जो जमीन दी जायगी, वह जोतने और खाने के लिए दी जायगी, जिसमें १५-२० साल के बाद कमी-बेशी भी हो सकेगी। किसी घर में प्राणी वढेगे, तो गाँव-वालो को सामूहिक जमीन मे से देनी पडेगी। प्राणी घटेंगे, तो उनसे जमीन लेनी और दूसरो को देनी होगी या सामूहिक जमीन मे मिला देनी होगी। यानी एक तरह से यह सामूहिक जमीन हमारी भूमि-वैक होगी, जिसमें से आवश्यकतानुसार कोई जमीन ले-दे सकेगा—अर्थात् हर पद्रह या बीस साल के बाद सवकी सम्मति से। इस भूमि में वहुत छोटे-छोटे टुकडे न पडें, इसका ध्यान तो रखा जायेगा ही।

एक प्रश्न यह भी खडा होता है कि यदि जमीन अपर्याप्त हो, तो आप क्या करेगे ? हमने ऊपर कहा है कि जहाँ वेजमीन ज्यादा हो और जमीन कम हो, वहाँ से वेजमीनवालो को अन्यत्र भी भेजना होगा, जहाँ वहुत जमीने पडी हो। और पडती जमीन भी तो हमे तोडनी होगी। कभी नये गाँव भी वसाने होगे। पीलीभीत (उ० प्र०) मे ७॥ हजार एकड का एक पूरा चक मिला है, वहाँ दूसरी जगह के भूमिहीनो को वसाने के सिवा कोई मार्ग ही नही है, क्योकि वहाँ के भूमिहीनो की आवश्यकता से अधिक वहाँ जमीने है।

फिर इसके साथ हमने ग्रामोद्योगो को भी इस योजना का एक अनिवार्य अग माना है, क्योकि एक या आध-एकड़ जमीन प्रतिव्यक्ति देने से ही किसान का काम नही चलेगा, उसका जीवन स्वावलम्बी वनाने के लिए ग्रामोद्योग भी देने होगे। ग्रामोद्योग क्या, कैसे होगे आदि की चर्चा का यह स्थान नही है, परन्तु ग्रामोद्योग एक अनिवार्य आवश्यकता है, यह स्पष्ट है।

इस प्रकार—

(१) षष्ठाश, प्रथम कदम,

(२) जो जोते वही जमीन रखे, यह दूसरा कदम और

(३) अत मे सारी जमीन गाँव-समाज को अर्पित करके, फिर उससे अपनी आवश्यकतानुसार लेना—गाँव की जमीन के अनुपात मे—यह तीसरा कदम। अर्थात् यह सव अहिंसक प्रक्रिया द्वारा ही होगा।

यह आवश्यक नही कि पहले के वाद दूसरा और फिर तीसरा, ऐसे क्रम से ही ये कदम उठे। कही तीसरा कदम ही सर्वप्रथम

उठ सकता है, जैसे उडीसा मे अब तक ३०० के करीब पूरे गाँव के गाँव विनोबा को मिल चुके है। वहाँ तो तीसरे कदम के प्रकाश में ही जमीन का वितरण होगा।

हमने यह भी माना है कि प्रथम कदम मे तो मजदूरो की गुजाइश है, पर दूसरे और तीसरे कदम मे मजदूर नाम का कोई प्राणी नही रहेगा और सहयोग तथा सहकार की भावना से आवश्यकतानुसार प्रत्येक को मदद मिलेगी। ग्राम-जीवन मे मदद तो हर किसी को मिलेगी। अत ग्राम-जीवन मे सहकार और सहयोग हमे अनिवार्य रूप से दाखिल करना होगा।

: ६ :

# भूमि सम्बन्धी कुछ आँकड़े

भूदान-आन्दोलन का आरभ तेलगाना की विपम अवस्था में हुआ। लेकिन तेलगाना मे भूमि के वॅटवारे की जो विपमता थी, वही कमवेशी मात्रा मे देश भर मे मौजूद है। यह सच है कि तेलगाना मे जो स्फोटकता थी, वह सव जगह नही है, लेकिन जमीन का अन्यायपूर्ण वितरण तो हर जगह है। वैसे ही भारत मे जनसख्या के अनुपात से जमीन का परिमाण वहुत कम है। उसमे भी चद लोगो के पास ज्यादा जमीन है, अधिकाश के पास कम। करोडो लोग ऐसे है, जो साल भर भूमि पर मेहनत करते है, लेकिन जो अन्न को खुद पकाते है उसके वे मालिक नही है। हजारो ऐसे भी है जो जमीन के मालिक तो है, लेकिन जिन्हे यह भी पता नही कि उनकी जमीन किस जगह है। आइये, हिन्दुस्तान की भूमि-समस्या के कुछ आँकडो का अध्ययन करे।

भारत का कुल क्षेत्रफल १२,६९,६४० वर्गमील है। लेकिन उसमे से २६,६३,७२,००० एकड भूमि पर आज खेती होती है। वजर या पडती जमीन मे से खेती के लायक जो जमीने है उनको हम उसमे मिला ले, तो भारत के प्रत्येक नागरिक के लिये औसत ७ एकड, याने करीव पौन एकड, जमीन आती है। लेकिन इस गणना मे वे लोग भी शामिल है, जो खेती पर निर्भर नही है।

सन् १९५१ की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसख्या ३५,६६,९४३,८९ है। इनमें से २४,९१,२३,४४९ लोग खेती पर निर्भर हे। यानी कुल जन-सख्या के ६९ ८ प्रतिशत लोग खेती पर निर्भर हे। खेती पर निर्भर लोगो की सख्या दूसरे उद्योगप्रधान देशो की तुलना मे कही अधिक है। १९२१ में ग्रेट-ब्रिटेन मे २० ७ प्रतिशत, जर्मनी में ३७ ८ प्रतिशत और फ्रान्स मे ५३ ६ प्रतिशत लोग खेती पर निर्भर थे। यह भी देखा गया है कि जब कि अन्य औद्योगिक राष्ट्रो मे भूमि पर जनसख्या का भार उत्तरोत्तर घटता जाता है, भारत मे वह बढ रहा है। १८७० में ब्रिटेन में ३८ २ प्रतिशत, जर्मनी में ६१ ० प्रतिशत, फ्रास में ६७ ६ प्रतिशत लोग खेती पर निर्भर थे। १९२१ के बाद के वहाँ के आँकडे अभी उपलब्ध नही हो सके है। उद्योगो के बढने के कारण इन देशो में खेती पर जनसख्या का भार घट रहा है। भारत में सन् १८८१ में ५८ ० प्रतिशत लोग खेती पर निर्भर थे, सन् १९५१ में ६९ ८ प्रतिशत निर्भर थे। ये आँकडे बताते है कि ग्रामोद्योगो के टूट जाने के कारण हमारे देश में खेती पर बोझ और भी बढ रहा है।

जो जनसख्या खेती पर निर्भर है, उसका बॅटवारा नीचे लिखे अनुसार है

| | |
|---|---|
| अपनी जमीन खुद जोतनेवाले | १६८० लाख, ४६ ९ प्र० श० |
| दूसरो की जमीन जोतनेवाले | ३१६ लाख, ८ ९ प्र० श० |
| भूमिहीन मजदूर | ४४८ लाख, १२ ५ प्र० श० |
| जमीन-मालिक जो खुद काश्त नही करते | ५३ लाख, १ ५ प्र० श० |

इन आँकडो से यह पता चलता है कि हर छह भूमिवानो के

पीछे एक भूमिहीन मजदूर है। इसीलिए विनोबा छठे भाग की माँग करते है। यह भी समझ लेना चाहिए कि दूसरे की जमीन पर काश्त करनेवाले ८ ९ प्रतिशत किसान भी प्राय भूमिहीन ही है। किसी भी समय उनकी जमीन छीनी जाने का भय उनके सिर पर सवार रहता है। जो भूमिवान् समझे जाते है, उनके पास भी जमीन समानता से नही बंटी है। अधिक लोगो के पास कम जमीन है। उदाहरणार्थ उत्कल मे जमीन जोतनेवाले किसानो के २६ ७ प्रतिशत परिवारो के पास तो १ एकड से कम जमीन है। कम-ज्यादा परिमाण मे देश भर मे परिस्थिति वैसी ही है। नीचे का तख्ता देखिये

# भारत के कुछ बडे राज्यों में जमीन के विभाजन की वर्तमान स्थिति

| राज्य | ५ एकड से कम जमीन वाले किसान | | ५ से २० एकड जमीनवाले किसान | | १० से ज्यादा एकड जमीनवाले | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | जनमख्या % | जमीन % | जनसख्या % | जमीन % | जनसख्या % | जमीन % |
| आसाम | ६६ ० | २६ ० | २५ ५ | ३३ | ११ ५ | ४१ |
| उडीसा | ७४ ० | ३० ० | २२ ५ | ४३ | ३ ५ | २७ |
| उत्तर प्रदेश | ८१ ० | ३९ ० | १६ ५ | ३९ | २ ५ | २२ |
| ववई | ५२ ० | १४ ० | २९ ० | ४४ | ९ | ४२ |
| मध्य प्रदेश | ५१ ० | १० ० | ३५ ० | ३१ | १४ | ५९ |
| मद्रास | ८२ ० | ४१ ० | ११ ० | २७ | ७ | ३२ |
| त्रावणकोरकोचीन | ६४ ० | ४४ ० | ५ ० | २२ | १ | ३४ |
| मैसूर | ६६ ० | २५ ० | ३३ ० | ५९ | १ | २६ |

हमे अफसोस है कि 'अ' वर्ग के राज्यो मे विहार, पजाव, तथा पश्चिम वगाल के पूरे ऑकडे हमे मिले नही है । लेकिन जो ऑकडे है वे भी वहाँ की भूमि-समस्या की कल्पना कराने के लिए काफी है, विहार मे ५ एकड से कम जमीन रखनेवाले किसान ८३% है, ५ से ५० एकड तक के १६% और ५० से ज्यादा-वाले सिर्फ ७% है । पश्चिम वगाल मे २ एकड से कम जमीनवाले किसान ३४% है, २ से ४ एकड वाले २८% है और ४ से अधिक एकडवाले ३८% है । पजाव मे खेती पर निर्भर लोगो में से करीव ७० लाख भूमिहीन मजदूर है ।

सारे देश की भूमि-समस्या का कुछ ख्याल नीचे दिये भूमि-हीन मजदूरों की संख्या के आँकडों पर से भी आ सकता है।

| राज्य | खेती पर निर्भर जनसंख्या | खेती-मजदूरी पर निर्भर जनसंख्या |
|---|---|---|
| आसाम | ७२,४१,१७२ | १,५९,०२३ |
| बिहार | ३,४६,११,२५४ | ८७,९५,२०२ |
| उडीसा | १,१६,१२,३६[illegible] | १८,०३,९८८ |
| उत्तर प्रदेश | ४,६८,९६,६७२ | ३६,१२,२०९ |
| पश्चिमी बंगाल | १,४१,९५,१६१ | ३०,४१,८८१ |
| पूर्वी पंजाब | ८०,६८,५९७ | १,६२,६७७ |
| बंबई | २,२०,९८,२९३ | ३२,५७,५४६ |
| मध्यप्रदेश | १,६१,४८,८७९ | ४३,३६,२८२ |
| मद्रास | ३,७०,२२,७९० | १,०३,९३,३६२ |
| त्रावणकोर कोचीन | ५०,९०,३०६ | १८,७१,०६७ |
| मैसूर | ६३,४३,३६० | ६,१५,८५३ |
| हैदराबाद | १,२७,१४,८२४ | ३२,९९,७७३ |
| मध्यभारत | ५७,४४,४०६ | ८,८४,६१८ |
| राजस्थान | १,०८,३६,९३९ | ८,७४,९९६ |
| पेप्सू | ३५,३४,६८४ | ३,५८,६७६ |
| सौराष्ट्र | १९,२९,१२० | १,५५,५८५ |
| विंध्यप्रदेश | ३२,१४,३६४ | ६,२९,८१३ |
| हिमाचल प्रदेश | ९,१४,२३८ | ६२,०९८ |
| दिल्ली | १,७२,१८६ | २९,२७६ |
| अजमेर | ३,१४,९०५ | १९,५६८ |
| त्रिपुरा | ४,८०,८९२ | ३०,८८६ |
| कुर्ग | १,३२,३०३ | २४,५२३ |
| कच्छ | २,३८,५८१ | १६,८९५ |
| भोपाल | ५,४८,३३[illegible] | १,६७,४२५ |
| बिलासपुर | १,१४,३९८ | १,९८६ |

: ७ :

# व्यावहारिक पहलू

पोचमपल्ली में भूदान-यज्ञ का जो बीज बोया गया उसका अब तो एक विशाल वृक्ष बन गया है। उस वृक्ष से अनेक शाखाएँ भी निकली है, तथा फूली-फली हैं। भूदान-यज्ञ के व्यावहारिक पहलू का अध्ययन हम इन्ही शाखाओ के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करके करेंगे।

इस आदोलन में जो भिन्न-भिन्न दान लिये जाते है वे निम्न प्रकार के है भूमिदान, सपत्तिदान, श्रमदान, साधन-दान, कूप-दान, अलकार-दान, बुद्धि-दान और जीवन-दान।

**भूमिदान में** उत्पादन के साधन की मालिकी उत्पादक के हाथ में देने की प्रक्रिया और अनुत्पादक की मालिकी खतम होने की प्रक्रिया है। जमीन-मालिक किसी भूदान-सेवक के पास, या आम सभा मे या पत्र द्वारा जमीन का दान देने का अपना सकल्प जाहिर करता है। वहाँ से भूदान की प्रत्यक्ष प्रक्रिया शुरू होती है। आम तौर से जमीन मालिक उस समय एक दानपत्र पर अपने दस्तखत कर देता है। इस दानपत्र का एक नमूना इस पुस्तक में परिशिष्ट (२) के रूप में अत में दिया गया है। सकल्प जाहिर करते समय दानपत्र की कुछ शर्तें छूट गयी हो, तो बाद में वे भरवा ली जाती है। दानपत्र भरने के बाद, जब तक उस भूमि का वितरण

न हो, तब तक दाता उस जमीन पर उसी प्रकार खेती करता है, जैसी वह पहले करता था। उस जमीन के वितरण से पहले यदि वह कोई फसल लेता है तो अपना खर्च निकालकर जो मुनाफा उसे उस खेत मे से हुआ हो, उसे वह भूमिदान-समिति को दे सकता है। दानपत्र भरने के बाद दाता को विशेष कुछ करने को नही रहता। हाँ उससे यह अपेक्षा जरूर रखी जाती है, कि वह भूदान का साहित्य पढे और नये दान पाने मे मदद भी करे। भूमि-वितरण की क्रिया का वर्णन इसी अध्याय मे आगे दिया जायगा।

**संपत्तिदान** पैसे का दान नही है। उसमे दाता अपनी कमाई का एक निश्चित हिस्सा हर साल नियमित रूप से देने का सकल्प करता है। यह रकम भी वह भूदान-समिति को या विनोबा को दे नही देता। वह उसे अपने ही पास अलग रखता है और विनोबा की सूचना के अनुसार उसका उपयोग करता है। सपत्ति-दान की रकम का उपयोग फिलहाल तीन मदो मे होता है.

(१) भूमिहीनो को बसाने के लिए जरूरी साधन आदि खरीदने मे।

(२) त्यागी सेवको के निर्वाह के लिए।

(३) सत्साहित्य-प्रचार मे मदद के रूप मे।

सपत्तिदान-यज्ञ में अपरिग्रह और अर्थ-शुचित्व का सकेत है। इस विषय मे अधिक जानकारी श्री जाजूजी की "सपत्ति-दान-यज्ञ" नामक पुस्तिका मे मिल सकती है। सपत्ति-दान-पत्र का नमूना परिशिष्ट (३) मे दिया है।

जो लोग भूमि और सपत्ति नही दे सकते वे **श्रमदान** दे सकते है। भूमिहीनो को पडती जमीनें मिलती है, तब उन्हें तोडकर

खेती के लायक बनाने के लिए श्रम की जरूरत होती है। कुएँ, तालाब आदि खोदने मे भी श्रम की जरूरत होती है। आज तक कई भूमिहीनो ने, विद्यार्थियो तथा मध्यवित्त लोगो ने श्रमदान यज्ञ मे प्रत्यक्ष हिस्सा लिया है। श्रमदान-यज्ञ मे श्रम की, श्रमिक की प्रतिष्ठा का सकेत है। इसके बारे मे अधिक जानकारी श्री शिवाजी भावे की "श्रम-दान" पुस्तिका से मिलेगी।

जिन भूमिहीनो को नयी जमीन दी जाती है उन्हें कार्य आरभ करने के लिए हल, बैल और खेती के अन्य सारे साधन चाहिए। इसमें मदद करने के लिए **साधनदान** दिये जाते है। आम तौर पर ये साधनदान भी दानपत्र के रूप मे ही लिये जाते है। वितरण के समय दाता से कहा जाता है कि आप अपने हल का दान इस भूमिहीन को दीजिये—आदि। कुछ भूमिदान समितियाँ साधनदान के लिए नकद रकमे भी स्वीकार करती है। लेकिन यह नियम नही, अपवाद है।

जिन भूमिहीनो को जमीन दी जाती है उनकी जमीन में कुएं खुदवा देना भी भूदान-यज्ञ के नवनिर्माण का एक अग है। कुओ के लिए लोगो से खास दान लिया जाता है, जिसे **कूपदान** कहा जाता है। वास्तव में यह दान साधनदान का ही एक अग है। कुएं के लिए दान तीन प्रकार से लिया जाता है—सीमेण्ट, लोहा आदि साधन के रूप में, अलकारो के रूप मे (जो बाद में बेचकर उस नकद रकम का उपयोग कुएं खुदवाने में होता है), और पैसे मे।

कूपदान के लिए **अलकार-दान** का उल्लेख अभी किया गया। इस यज्ञ मे बहने विशेष हिस्सा ले सकती है और लेती भी है। इस

आन्दोलन मे स्वर्गीय जमनालाल जी बजाज की धर्मपत्नी जानकी-देवी बजाज बहुत दिलचस्पी ले रही है। विनोबा तो अपनी लाक्षणिकता से कहते ही है कि "गहनो ने बहनो को दबा दिया है। मै उन्हे अलकार-दान के द्वारा भयमुक्त करना चाहता हूँ।"

इतने विवरण से ही पाठको को पता चला होगा कि भूमि-प्राप्ति से भी कही अधिक कठिन काम भूमि-वितरण का है तथा उससे भी अधिक धैर्य तथा सावधानी का काम नवनिर्माण का है। पाँच करोड एकड जमीन प्राप्त करना छोटा काम नही है। उसे भूमिहीनो मे न्याय-पुरस्सर बाँटना भी कठिन काम है। और देश भर मे जमीन के लिए साधन प्राप्त करने मे सिचाई का प्रबन्ध करना, जहाँ नये गाव बसाने हो वहाँ ग्राम-रचना करना, ग्रामोद्योग नयी तालीम, ग्राम-आरोग्य, न्याय-व्यवस्था आदि का प्रबन्ध करना तो भगीरथ काम है। देश के सामने नवनिर्माण का यह एक अद्वितीय काम है। वह कठिन है, इसीलिए उत्साहवर्धक भी है।

यही पर **बुद्धिदान** और जीवनदान का महत्व समझ में आता है। बुद्धिदान के सिलसिले मे विनोबा ने एक-दो जगह वकीलों से भूमिहीन लोगो के लिये मुफ्त मे वकालत करने के लिए कहा था। बुद्धिदान का यह भी एक प्रकार है। यहाँ बुद्धिदान समाप्त नही हो जाता न विनोबा वैसा कहते ही है। वास्तव मे नव-निर्माण के महान् कार्य मे देश के हरएक बुद्धिमान आदमी की बुद्धि लगने के लिए अवकाश है एव वही व्यापक बुद्धिदान है। देहाती इन्जीनियर की जरूरत है, शिक्षक की जरूरत है वैद्य की जरूरत है, कानून जाननेवाले की जरूरत है। इन सब लोगो की

बुद्धि का दान भी बुद्धिदान में आ जाता है। बुद्धिदान मे बुद्धि-जीवी और श्रमजीवी के भेद-निराकरण का सकेत है।

इस महान् कार्य के लिए अपना पूरा जीवन लगाने को कहते है **जीवनदान** । इसकी विशेष जानकारी के लिए पाठक श्री जयप्रकाश नारायण की "जीवनदान" नाम की पुस्तिका अवश्य पढें।

## भूमि-वितरण

किसी प्रदेश मे जब भूमिदान-यज्ञ मे काफी मात्रा मे जमीन मिल जाती है, तब उसके बॅटवारे का काम हाथ मे लिया जाता है। आम तौर पर जिस प्रदेश में एक ही स्थान पर ज्यादा जमीनें मिली हो, वहाँ बॅटवारा पहले किया जाता है। आज तक भूदान-आन्दोलन में प्राप्ति की ओर अधिक ध्यान दिया गया था। अब बंटवारे की ओर भी उतना ही ध्यान दिया जायगा। जिस गाँव मे जमीन बाँटनी होती है वहाँ पर वितरण से एक सप्ताह पहले वितरण की सूचना दी जाती है। वितरण से पहले प्राप्त जमीनें भी देख ली जाती है। वितरण के काम मे भूदान समिति-सदस्य का काम मुख्यत सारी विधि में साक्षी रहने का ही होता है। निर्णय लेने का सारा काम ग्रामजनो पर ही छोडा जाता है। पहले यह तय किया जाता है कि एक परिवार के लिए उस गाँव की कम से कम कितनी जमीन देना आवश्यक समझा जाय। उसके बाद भूमि-वितरण के नियमो के अनुसार (जो आगे दिये गये है) भूमिहीन लोग छाँटे जाते है। जमीन जहाँ कम हो और भूमिहीन अधिक हो वहाँ जमीन किसे दी जाय, इसका निर्णय भूमिहीन

लोग करते है। कभी निर्णय न किया जा सकता हो, तो चिट्ठी डालकर तय किया जाता है। भूमि-वितरण के समय सेवको को अनेक पावनकारी प्रसगो के अनुभव होते है। जमीन कम हो और भूमिहीन अधिक हो तो उनको देखकर लोग नयी जमीने दान मे देते है। भूमिहीन लोग स्वयप्रेरणा से दूसरे भूमिहीन के लिए अपनी माँग वापस ले लेते है। प्रेम की मानो होड-सी चलती हे।

जो जमीने दी जाती है उसे नया किसान वेच नही सकता, उसे रेहन नही रख सकता, उन पर किसी प्रकार का ऋण नही कर सकता और न उसे पडती रहने दे सकता है।

भूमि-वितरण के नियम नीचे लिखे अनुसार है

(१) जिस गाँव मे जमीन वितरण करना हो उस गाँव के लिए निश्चित तारीख मुकर्रर कर उस तारीख की सूचना एक सप्ताह पूर्व ही उस गाँव के लोगो को डुग्गी के जरिये और छपे परचे के जरिये कर देनी चाहिए। घर-घर इसकी खबर पहुँचे, ऐसा प्रवन्ध अवश्य हो।

(२) वितरण-दिवस के एक दिन पहले भी उस गाँव मे सूचना कर देनी चाहिए। वितरण के कार्यक्रम की सूचना जिला-धीश तथा सबधित अधिकारियो को भी दे दी जाय, ताकि उनके कर्मचारी वितरण के समय उपस्थित रह सके।

(३) वितरण करनेवाले जमीन की पूरी जानकारी गाँव-सभा के सभापति तथा पटवारी के जरिये पहले ही प्राप्त कर ले। उस जमीन की स्थिति, किस्म और हैसियत भी मौके पर जाकर देख ले।

(४) भूमिहीन कौन-कौन लोग है, इसका पता सारे गाँव की सार्वजनिक सभा बुलाकर किया जाय।

(५) भूमि-वितरण भी गाँववालो की सार्वजनिक सभा मे हो, तहसीलदार भी उपस्थित रहे। तहसीलदार की जगह जिलाधीश किसी और अधिकारी को मुकर्रर कर सकते है। उनके अलावा पटवारी और कानूनगो का रहना उपयोगी है।

(६) भूमि-वितरण, जहाँ तक हो, सर्वसम्मति से किया जाय। मतभेद की सूरत मे किन बेजमीनो को जमीन मिले, इसका फैसला भी भूमिहीन लोग ही सर्वसम्मति से करे। अगर भूमिहीनो का एकमत न हो और हमारे प्रतिनिधि को अन्तिम निर्णय देना ही पडे, तो वहाँ गोटी या पटका डालकर वह निर्णय करे।

(७) वितरण के काम मे गाँव के सज्जनो और महाजनो का सहयोग लिया जाय, ताकि भविष्य मे नयी जमीन प्राप्त करने तथा बेजमीनो को अन्य सुविधाएं दिलाने मे उनका पूरा सहयोग हो सके।

(८) जहाँ तक हो सके प्राप्त जमीन का एक-तिहाई हिस्सा हरिजनो मे तक्सीम किया जाय।

(९) जमीन, जहाँ तक हो सके, उसी गाँव के भूमिहीनो को देनी है। अगर दान में बडे-बडे चक मिले हो और गाँव के भूमिहीनो को देकर भी भूमि बचती हो तो आसपास के गाँवो के भूमिहीनो को वह दी जा सकती है। बडे-बडे चको मे बाहर के लोगो को बसाया जा सकता है।

(१०) नये लोगो को लाकर बसाना हो या बडी बस्ती

वसानी हो, तो सौमीति उसके लिए विशेष नियम वनाये। इसमे श्री पुरुषोत्तमदास टडन की योजना, जो सक्षेप मे यह है कि हर घर के इर्दगिर्द कुछ ऐसी जमीन रहे, जिसमे साग-सब्जी, फल-फूल पैदा कर सके, घर के मल-मूत्र के लिए गढे आदि वना सके, विशेप रूप से कार्यान्वित की जाय।

(११) साधारणतया खेती के लिए जमीन ऐसे भूमिहीन को दी जाय जिसके पास कोई दूसरा धधा न हो, जो जमीन की काश्त स्वय कर सकता हो और खेती करना चाहता हो। नये गॉव वसाने को जो भूमि दी जायगी, उसमे इस वात का ध्यान विशेप रूप से रखा जाय कि गॉव सुन्दर और स्वावलम्वी वने। ऐसी हालत मे आवश्यकतानुसार नियमो मे परिवर्तन किया जा सकेगा।

(१२) पॉच मनुष्य के परिवार के लिए अक्सर एक एकड तरी या ढाई से पॉच एकड तक खुश्क जमीन दी जाय। लेकिन जमीन की किस्म देखकर, विशेष परिस्थिति मे, पॉच एकड से ज्यादा भी जमीन दी जा सकती है।

(१३) दान मे मिले हुए छोटे टुकड़ो को अदल-वदलकर यथा सभव एक चक वनाने का प्रयत्न किया जाय। छोटे टुकडे होने के कारण जहॉ भूमिहीनो को देना सम्भव न हो, या जहाँ भूमिहीन हो ही नही, वहाँ प्रथम अत्यन्त अल्प जमीनवालो को ये टुकडे दिये जा सकते है। यदि यह भी सभव न हो, तो इन टुकडो का उपयोग ग्रामोपयोगी सार्वजनिक कार्य (जैसे कम्पोस्ट के गढे, शौचालय आदि) मे किया जा सकता है।

(१४) जिन्हे जमीन दी गयी है, वे दस साल तक इसे वेच नही सकेंगे।

(१५) जमीन मे, अगर देते समय से ही काश्त हो सकती हो, तो जमीन लेनेवाले को नियमानुसार उसी समय से सरकारी लगान देना होगा।

(१६) अगर दान मे मिली जमीन की जोत न हो सके और साधारणतया दो साल तक जमीन बिना काश्त की रह जाये, तो सरकार को अधिकार होगा कि वह इस जमीन को दूसरे बेजमीन किसान को नियमो के अनुसार बाँट दे।

(१७) जहाँ जमीन तकसीम की जायगी, वहाँ के शेष बेजमीनो के लिए और नयी जमीन उस वक्त और आगे भी हासिल करने का प्रयत्न किया जाय।

(१८) जो जमीन पहले न जोती गयी हो, जैसे नव-आबाद जमीन, पडती या ऊसर जमीन, उसको आबाद करने के लिए तीन साल तक का समय होगा।

## भूदान-कानून

भूमि-वितरण के काम में सुविधा देने की दृष्टि से कई राज्यो मे भूमिदान-यज्ञ कानून भी बने है। इन कानूनो मे विभिन्न परिस्थितियो के अनुसार थोडा-बहुत अन्तर है। लेकिन आम तौर से इन कानूनो के जरिये नये भूमिहीनो को नियत्रित मालिकी हक की मान्यता दी जाती है। जमीन के हस्तान्तर में लगनेवाले सरकारी टिकट आदि के खर्च माफ किये जाते है। इसकी व्यवस्था करने के लिए भूदान-कानून में किसी बोर्ड की व्यवस्था होती है, जिसके सदस्य विनोबा नामजद करते है। आज तक हैदराबाद, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, विंध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उडीसा

और सौराष्ट्र में भूदान-कानून बन चुके हैं । अन्य राज्य ऐसे कानून बनाने की तैयारी कर रहे हैं ।

## देश में भूदान अन्दोलन

क्रांति अपने साथ ही कार्यकर्ताओ को खींच लाती है । जमाने की माँग जब पूरी होने लगती है, तब उसकी प्रतिध्वनि कोने-कोने मे सुनाई देने लगती है । जिस विनोबा को आज से चार साल पहले इने-गिने लोग ही जानते थे, उसके साथ पदयात्रा करने के लिए आज देश-विदेशो से लोग आते है । हमारे देश के दुर्भाग्य से अभी उतने लोग इसमें कूद नही पडे है, जितने कूदने चाहिए थे, लेकिन फिर भी प्राय सारे राजनीतिक पक्षो ने प्रस्तावो के द्वारा भूदान-आन्दोलन का समर्थन किया है। जो लोग इस आन्दोलन मे आये है उन्होने तो जी-जान से इसे सफल बनाने की कोशिश की है । देश का कोई भी सूबा ऐसा नहीं है जहाँ भूदान-यज्ञ की हलचल न हो । आइये, देश के भूदान-आन्दोलन का सरसरी निगाह से अवलोकन कर ले ।

भूदान-यज्ञ का तत्र संभालने की जिम्मेवारी अखिल भारत सर्व-सेवा-सघ ने उठा ली है । उसके मार्गदर्शन मे देश भर की प्रान्तीय भूदान-समितियाँ काम कर रही है, जिनकी नियुक्ति विनोबा ने स्थानीय कार्यकर्ताओ की सलाह से की है। इन भूदान-समितियो मे से अधिकाश का खर्च सर्व-सेवा-सघ को गाधी स्मारक निधि से मिलता है । विनोबा के अतिरिक्त जिन लोगो ने अखिल भारतीय क्षेत्र मे भूदान-यज्ञ का काम किया है उनमें से कुछ के नाम विशेष उल्लेखनीय है । श्री शकरराव देव ने सर्व-

सेवा-सघ के मत्री पद के दो वर्ष (१९५२ से '५४) तो अपनी पूरी ताकत भूमिदान-यज्ञ मे लगा दी। देश के अधिकाश प्रान्तो का उन्होने दौरा किया। अक्सर वे प्रान्त का दौरा पैदल ही करते थे। इनके प्रवास से कई प्रान्तो को, विशेपकर दक्षिण भारत के लोगो को, गाधो-विचार की नयी प्रेरणा मिली। श्री जयप्रकाश नारायण भूदान-आन्दोलन मे कुछ देर से आये, लेकिन वे जहाँ गये उन्होने नयी क्रान्ति का शख फूंक दिया। राजनीति को छोडकर सर्वोदय के काम के लिए उन्होने अपना जीवन समर्पण किया। यह घटना तो देश के इतिहास मे अपना विशिष्ट स्थान लेगी।

देश के कोने-कोने में फैले हुए कार्यकर्ताओ को सर्वोदय-विचार की सैद्धान्तिक भूमिका समझाने का काम दादा धर्माधिकारी के दौरो ने किया। और विमला ताई ठकार की यात्राओ ने देश के कई प्रान्तो मे और प्रमुख शहरो मे नयी जान-सी ला दी। श्री श्रीकृष्णदास जाजू के दौरो ने यह सिद्ध किया कि भूदान-यज्ञ में बूढो को भी जवान करने की कैसी सजीवनी-शक्ति है।

लेकिन इस पुस्तिका की मर्यादा में रहकर हम यहाँ उन सव प्रमुख व्यक्तियो के नाम का उल्लेख भी नही कर सकते, जो अपनी पूरी शक्ति इस काम मे लगा रहे है। इन सवने अपने-अपने क्षेत्रो मे भूदान यज्ञ का रग लगा दिया है और साथ ही साथ भूदान के काम के जरिये अपनी शक्ति भी वढा ली है।

यह वताने की जरूरत नही कि इस काम में सर्व-सेवा-सघ के अध्यक्ष श्री धीरेन्द्र मजूमदार तथा मत्रो श्री अण्णा सहस्रवुद्धे तथा वल्लभ स्वामी कार्यकर्ताओ के लिए अखड प्रेरणा के स्थान रहे है।

भूदान आन्दोलन की जडे कम-अधिक परिमाण मे हर प्रान्त

घूमे। हिमाचल प्रदेश मे एक पूरी जागीर विनोबाजी को श्री धर्मदेवजी शास्त्री के प्रयत्नो से मिली और उत्तर प्रदेश मे एक पूरा का पूरा गाँव ही श्री दीवान शत्रुघ्न सिंह जी के प्रयत्नो से मिला। उत्तर प्रदेश ने अपना पाँच लाख का कोटा पूरा किया और अब वह वितरण में लगा है। उत्तर प्रदेश के हर जिले मे विनोबा घूमे, जगह-जगह भूदान सदेश सुनाया और लाखो एकड जमीन प्राप्त की। उत्तर प्रदेश के राजनीतिक नेताओ ने भी पूरा योग दिया। यहाँ की प्रसिद्ध रचनात्मक सस्था, गाधी आश्रम ने पूरे प्रान्त में जगह-जगह व्यवस्था में, प्राप्ति मे मदद की और अपने कार्यकर्ता इसमें दिये। समाजवादी पक्ष ने भी मदद की। बाबा राघवदास और अक्षयकुमारजी करण जैसो की तपश्चर्या इस प्रान्त मे चमक रही है। इस प्रान्त मे साहित्यिको ने भी काफी योग दिया। विनोबा के यहाँ से चलते समय प्रात के तत्कालीन मुख्य मत्री श्री पतजी ने कहा था, "इस प्रात की आबोहवा ही आपने बदल दी है।"

उत्तर प्रदेश से चलकर विनोबा विहार में एकाग्र प्रयोग के लिए पहुँचे। बिहार ने विनोबा का हार्दिक स्वागत किया और रचनात्मक कार्यकर्ता इसमें जुट गये। बिहार में आज करीब २२ लाख एकड जमीन मिली है, सैकडो का सपत्तिदान मिला है, हजार के करीब जीवनदानी मिले है, कुछ गाँव पूरे-के-पूरे मिले है और अब वितरण भी हो रहा है। बिहार की भूमि-समस्या हल करने की चाभी लक्ष्मी बाबू जैसे सर्व सग परित्यागी के हाथो मे देकर विनोबा ने बगाल मे प्रवेश किया।

बगाल में वैसे भूमि प्राप्ति तो कम हुई, पर विचार बीज

अच्छी तरह बोया गया। वहाँ के निष्ठावान् सेवक लगन के साथ काम मे लगे और किसी प्रकार से निरुत्साही न होकर सरकारी सहानुभूति के अभाव मे भी उन्होने अच्छी तरह काम शुरू किया है। चारु बाबू जैसों ने ३-३ हजार मील की यात्रा करके विचार-बीज बोया है। अब विनोबा उत्कल मे घूम रहे है। उत्कल मे नेता और कार्यकर्ता सबके सब जुट गये है। यहा भूमि-क्रान्ति का अलख विनोबा ने जगाया है। एक तीन सौ के करीब कार्यकर्ता पूरा समय देकर काम कर रहे है करीब तीन सौ गाँव तो मिल चुके हैं और दिन-पर-दिन मिलते ही जा रहे है। इसके पीछे कोरापुट के मूकसेवक श्री विश्वनाथ पटनायक की तपस्या है। भूमिदान के इतिहास मे उत्कल क्रान्ति करके रहेगा, ऐसे आसार नजर आ रहे है। विनोबा ने कहा ही है कि यह वही वीर प्रदेश है, जिसने चड-अशोक को धर्म-अशोक बना दिया था। प्रात के तपे हुए नेता श्री गोप बाबू, श्री रमादेवी, श्री आचार्य हरिहरदास, श्री मालती देवी चौधरी आदि जी-जान से इस काम मे मदद कर रहे है। शेष प्रातो मे से त्रावणकोरकोचीन प्रात और गुजरात प्रात गहरे काम की दृष्टि से काफी आगे बढ चुके है। दोनो जगह तरुण कार्यकर्ताओं का जो सघ है, वह अपने ढग का अनोखा सघ है और पूरे जोर से प्रातो मे क्रान्ति का अलख जगा रहा है। श्री टामस चेरियन और राजम्मा बहन उधर त्रावणकोर-कोचीन मे है। गुजरात का नाम तो रविशकर महाराज जैसा उजागर कर रहे है, उनका सानी किसी प्रात मे नही है। प्रेममूर्ति महाराज इस वृद्धावस्था मे जो कुछ पैदल घूम-घूम कर काम कर रहे है, उसके फल गुजरातवासियो को मिले बिना रह नही सकते।

पजाव में भी भूदान का काम लाला अचिंतराम काफी लगन से कर रहे है। और वहन सत्यबाला भी देश की उन तरुणियो मे से है जिनका कार्य विशेष उल्लेखनीय है। उनकी अपनी पदयात्राओ द्वारा विचार-बीज वोये जा रहे है। काम भले ही कम हुआ हो, क्राति का अलख जगाने में पजाव पीछे नही रह सकता, इसका हमे यकीन है।

महाराष्ट्र के वारे मे इतना ही कहना काफी होगा कि जहाँ अप्पा साहव पटवर्धन जैसे अनन्य सेवक पडे है, जहाँ शकररावजी की तपस्या परिपक्व हुई है, जहॉ साने गुरुजी की भावना वातावरण मे भरी हुई है, ऐसे प्रात में विचार-प्रसार के द्वारा भूमि-क्राति गहराई से जड पकड रही है। यह सही है कि भूमि-प्राप्ति अभी यहाँ कम हुई है। परतु महाराष्ट्र के अनन्य सेवको ने पीछे न रहने का सकल्प कर लिया है। असम और आध्र-प्रात में वैसे वहुत काम नही हुआ है। परतु निष्ठावान् कार्यकर्ता अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार काम किये जा रहे है। कर्नाटक प्रात में तरुण कार्यकर्ता वडे उत्साह से काम कर रहे है। पद-यात्राएं निकाल रहे है और वितरण भी साथ-साथ कर रहे है। मैसूर, कर्नाटक का ही एक भाग है, वहाँ भी अच्छा काम हो रहा है।

तमिलनाड के उत्साही जनसेवक श्री जगन्नाथन् ने एकाकी हालत में वहाँ काम शुरु किया और अव प्रात के दो ज्येष्ठ नेता, श्री राजाजी के आशीर्वादपूर्ण प्रोत्साहन से एव श्री कामराज नादर के सक्रिय सहयोग से तेजी से काम वढाते जा रहे है। जिस निष्ठा और लगन से इस प्रात मे काम हो रहा है, कई प्रातो के लिए वह एक मिसाल वन सकती है।

सौराष्ट्र यो तो गुजरात ही का अग माना जायगा, लेकिन राजनैतिक दृष्टि से उसे अलग प्रात माना है। वापू की पावन भूमि सौराष्ट्र और कच्छ ने अपना पहला लक्ष्याक पूरा कर लिया है। आज तक भिन्न-भिन्न प्रातो में मिली हुई जमीन के ऑकडे परिशिष्ट में दिये गये है।

यह स्वाभाविक है कि जहाँ-जहाँ विनोवा की पदयात्रा हुई है, वहाँ जमीन अधिक मिली, लेकिन इसका मतलव यह नही कि जहाँ विनोवा नही गये, वहाँ काम नही हुआ है। उत्कल केरल, गुजरात आदि प्रातो के काम से यह साफ दीखता है कि वहाँ जमीने भले ही अपेक्षाकृत कम मिली हो, किन्तु विचार की नीव गहरी पैठ गई है।

: ८ :

# सबको निमंत्रण

भारतमाता की आज बुलाहट है, हम सबको अपने ३६ कोटि भाई-बहनो की सेवा के लिए। भूदान-यज्ञ एक ऐसा आन्दोलन है जिसमें हर कोई अपना हाथ बंटा सकता है। यह एक ऐसी क्रान्ति है जिसमें अमीरी-गरीबी खतम करने के लिए अमीरो का सहयोग और गरीबो का पुरुपार्थ चाहिए। यह एक ऐसा आन्दोलन है जिसमें कूद पडने की प्रेरणा जो कोई भी विचारक है और जो कोई भी भावनावान है, उसे होनी चाहिए। भूदान-यज्ञ का आज हम सबको निमत्रण है, इसमे जुट जाने का।

## भूमिवानों से

देश के कई प्रदेशो में आज ऐसी परिस्थिति आ गयी है कि यह आन्दोलन अब भूमिवानो का आन्दोलन बन जाना चाहिए। याने, भूमिवान लोग स्वय अपना हिस्सा तो दे ही और इसके अलावा दूसरो से दिलाने में भी वे मदद करे। भूमिवानो को यह समझ लेना चाहिए कि यह आन्दोलन उनके हित की चिन्ता करता है। जमाने की माँग को तो हममें से बहुतेरे समझ गये है, लेकिन फिर भी अक्सर हमसे जमीन दी नही जाती। हमें एक चीज समझ लेनी चाहिए कि इस आन्दोलन से मालिकी तो खत्म

होती है, लेकिन इज्जत से वढकर वड़ी कौन सी चीज है जिसकी हम दुनिया मे कदर कर सकते है ? क्या हमारे कोटि-कोटि भूखे-नगे भाइयो की आवाज हमारे कानो तक नही पहुँचेगी ? एक वार जरा विश्वासपूर्वक देखिये तो सही कि त्याग मे क्या लुत्फ है। शिवि, दधीचि, हरिश्चन्द्र जैसो का खून आपकी रगो मे वह रहा है। वह आपको इस आन्दोलन मे कूदे विना चैन नही लेने देगा। आप आइये विहार, उत्तर प्रदेश तथा अन्य कई प्रदेशो के भूमिवानो की तरह भूदान की सेना मे भरती हो जाइये। विनोवा तो कई दफा कहते है कि मै उदार सज्जनो की सेना खड़ी कर रहा हूँ। मेरे यज्ञ के कारण दो तरह के लोग अलग-अलग दीख पडेगे। एक उदार और दूसरे कजूस। आप क्या सज्जनो की सेना मे भरती होना नही चाहेगे ?

आप इस आन्दोलन मे कई प्रकार से मदद कर सकते है :

(अ) अपनी जमीन का योग्य हिस्सा दान दे।

(आ) अपने मित्र, रिश्तेदार या सवधी से जमीन दिलवाइये।

(इ) खुद यात्रा करे या अन्य भूदान-सेवको की यात्रा मे शामिल हो।

(ई) रोज एक आदमी को इतना समझा दीजिये कि आपने अपनी जमीन भूदान-यज्ञ मे क्यो दी।

(उ) भूमि-वितरण के समय आपकी जमीन जिसे दी जाय उसे साधन-दान दे या दिलाये।

(ऊ) जिसे जमीन दी गयी हो उसे कृपि के वारे मे योग्य

सलाह देते रहे। उसकी खेती न बिगडे, यह आपका जिम्मा होना चाहिए।

जमीनवालो को सजीवन देने के आरोप का उत्तर देते हुए विनोवा ने एक बार कहा था कि मै जमीनवालो को सजीवन दे रहा हूँ, न कि उनकी जमीन की मालकियत का। वास्तव में विधायक क्राति का यही लक्ष्य होता है। रोग तो नेस्तनाबूद हो जाय पर रोगी बच जाय। विनोवा ने जमीनवालो से बार-बार कहा है कि अगर उन्हें इज्जत-पूर्वक जीवन जीना है तो वे इस आन्दोलन को अपना लें। कत्ल की क्राति और कानून की क्राति, दोनो मे जमीनवालो की जमीने छीनी जायँ या न छीनी जायें, जमीन-वालो की तो बेइज्जती ही होती और फिर या तो वे प्रतिक्रियावादी वनकर वदला लेने का मौका ढूंढते है या खतम हो जाते है। जनतत्र मे जमीनवालो की वात आखिर अधिक चलनेवाली नही है, परन्तु भूमिदान-यज्ञ उनसे जमीनें लेकर भी उन्हें वाइज्जत रखना चाहता है। उनके हृदय को, उनके मस्तिष्क को परिवर्तित करके वह भूदान लेता है, जिसमे उसकी निजी मालकियत तो छूटती है पर निजी इज्जत वढती है, प्रतिष्ठा कायम रहती है। विधायक क्राति का यह परिणाम अन्य किसी मार्ग से सम्भव नही है। इसलिए इस आन्दोलन को अव भूमिवान लोग पूरी तरह उठा लें तो उसमे देश का और उनका दोनो का लाभ है। आने-वाला जमाना निजी मालकियत के ही खिलाफ रहेगा। क्राति की छाया जगत् पर तेजी से पडती जा रही है। ऐसी हालत में निजी स्वामित्व छोडने का कौन सा मार्ग श्रेयस्कर है, यह देखना जरूरी है और भूदान-यज्ञ भू-स्वामियो को इसके लिए आवाहन करता है

कि वे इसे परखे और इसमें कूद पडे। अपनी शक्ति, अकल और अपनी जमीन वे इसमे अर्पित कर दे और फिर नेतृत्व भी ले। व्यक्ति को हल्का या जलील बनाकर नही, उसे इज्जतदार बनाकर, उसे नेतृत्व देकर जो क्रांति उससे प्रेम से जमीन लेना चाहती है, वह कानून के बनिस्बत हर हालत मे श्रेष्ठ क्रांति है। इसलिए युग-प्रवाह को पहचानकर छोटे-बडे सब जमीनवाले, निजी मालकियत स्वेच्छा से छुडानेवाले इस आन्दोलन का नेतृत्व ले, ऐसी उनसे विनोबा की हार्दिक अपील है।

## श्रमिकों से

इस क्रांति मे आपको भी बडा हिस्सा लेना है। केवल निष्क्रिय प्रेक्षक बनकर बैठे नही रहना है। विनोबा जब जमीन माँगते है तब भूमिवानो से कहते है कि मै भूमिहीनो के हक की माँग कर रहा हूँ। हमे अपने सात्विक आचरण से अपना यह हक व्यक्त करना होगा, तथा इसके लिए लायक बनना पडेगा। श्रमिको के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम है —

(अ) अपने बाजुओ के जोर से दूसरो को मदद दे अर्थात् श्रमदान करे। भूमिहीनो को जो भूमि दी जाय उसे तोडने या खेती के लिए तैयार करने मे मदद करे। उनके लिए कुएँ खोदने मे मदद करे।

(आ) अपना जीवन शुद्ध करने के लिये व्यसन त्याग की प्रतिज्ञा ले।

(इ) भूमिदान-साहित्य पढे और अपने अनपढ भाई-बहनो को नियमित रूप से पढ सुनावें।

(ई) गाँव-गाँव भूमिहीनो के घर-घर में यह सवाद पहुँचा दे कि अव भूमि उसीकी होकर रहेगी जो उसे जोतेगा।

(उ) अपने गाँव के भूमिवानो के पास जाकर नम्रतापूर्वक प्रेम से पूछे कि आपने भूदान-यज्ञ में कितनी जमीन दी है। उन्हे यह भी कहे कि हमें विश्वास है कि भगवान् आपको जमीन देने की प्रेरणा देगा।

(ऊ) भूदान के गाने सीख ले। मौका पाने पर उन्हे गावे। अपने नृत्य आदि कार्यक्रमो में भी भूदान-गीत शामिल कर मकते है।

(ए) भूदान की जन्मतिथि (१८ अप्रैल), भूमि-जयन्ती (११ सितम्बर) आदि नये उत्सव मनावें।

(ऐ) गाँव के भूमिवानो की निन्दा न करने का निश्चय करें। मजदूरी के काम मे तनिक भी आलस्य न करें।

(ओ) आपमे से किसीको यदि वेदखल किया जाता हो, तो वह अपनी जमीन पर डटा रहे।

(औ) जहाँ भूमि-वितरण हो वहाँ अपने मे से योग्य से योग्य भूमिहीनो को स्वयम् एकमत से चुने। 'पहले उसे, वाद में हमें' का सूत्र न भूलें।

## विद्यार्थियों से

दुनिया भर मे शायद ही कोई देश ऐसा होगा जिसमे शान्ति के आन्दोलनो मे युवको का वडा हिस्सा न रहा हो। हमारे देश के स्वातन्त्र्य सग्राम मे भी विद्यार्थियो ने उत्साह से भाग लिया है। किशोरो ने हँसते-हँसते गोलियाँ झेली है, लाठियाँ खायी है, सजाएं

भुगती है। लेकिन क्रान्ति के अब तक के सारे आन्दोलनो मे और इस आन्दोलन मे एक अन्तर है। अब तक के सारे आन्दोलन मारने या मरने के आन्दोलन थे। यह आन्दोलन जीने और जिलाने का है। इसलिए इसमे जो छात्र हिस्सा लेना चाहेगे, उन्हे केवल लडाई और प्रतिकार के कार्यक्रम नही मिलेगे, उन्हे गहराई मे जाना होगा। आज तक हजारो विद्यार्थियो ने इस आन्दोलन मे जो हिस्सा लिया है, वह सभी भूदान-सेवको को प्रेरणा देने वाला किस्सा बन सकता है। विहार का वह दस साल का लडका निकल पडा भूमि माँगने। पहले उसने अपने पिताजी के पास जाकर जिद्द पकडी कि आप छठा हिस्सा दीजिये, तब दूसरो से मांगूंगा। ऐसे पुत्र के पिता भला ऐसी माँग कैसे ठुकरा सकते थे? वह बच्चा कुछ ही दिनो मे सैकडो एकड ज़मीन के दान-पत्र ले आया था। नन्ही-सी सघमित्रा ने न सिर्फ अपने, लेकिन अपनी माँ और नानी के भी सोने के अलकार इस यज्ञ मे दिलवा दिये और इनसे आगे खुद सोने के गहने न पहनने का सकल्प किया। उसे लिखना-पढना नही आता था, लेकिन भूदान-साहित्य बेचते-बेचते उसने पैसे का हिसाब करना सीख लिया। गुजरात का वह किशोर हर सप्ताह एक भूमिवान के पास अदब से जाता था। पहले सप्ताह उसने सिर्फ गाली सुनी। दूसरे सप्ताह वह अपनी पत्रिका पढने के लिए छोड आया। तीसरे सप्ताह उसने एक आने की पुस्तिका बेची। होते-होते उस भूमिवान ने २५ बीघे जमीन दी। इस आन्दोलन से बहुतेरे छात्रो के जीवन पर भी असर पडा। जब नन्हे-नन्हे वानरो मे समुद्र लाँघने की ताकत आयी थी तब क्रांति हुई थी, जब नन्हे-नन्हे गोपो ने पर्वत उठाया तब क्रांति हुई

थी, जब वानर-सेना ने नमक पकाया था तव क्राति हुई थी। जब नन्हे बालक ऐसे काम करने लगते है कि जो आम तौर पर बडे भी नही कर सकते तब क्रान्ति होती है। आज छोटे-छोटे विद्यार्थी भी विचार-प्रवर्तन का काम कर रहे है, इसलिए आज क्राति हो कर ही रहेगी।

विद्यार्थियो के लिए कार्यक्रम नीचे लिखा है

(अ) स्वय भूमिदान-साहित्य का अध्ययन करे।

(आ) भूदान-साहित्य बेचे तथा भूदान-समर्थको को ग्राहक बनाये।

(इ) अपने जीवन में श्रमनिष्ठा लाने का ध्यान रखे। कपडे धोना, वरतन साफ करना आदि वहुतेरे काम अपने हाथो से करने का आग्रह रखें।

(ई) बडे विद्यार्थी १९५७ तक कालेज छोड कर इसी काम में पूर्ण रूप से जुट जायं।

(उ) अन्य लोग छुट्टियो मे भूदान-यात्रा मे शामिल हो, जहां वे भूदान-गीत गाना, भूमिहीनो की फेहरिस्त बनाना आदि काम कर सकते है।

(ऊ) भूमिदान-कला-पथक वना कर गाँव-गाँव में प्रचार करें।

(ए) सर्वोदय-विचार-मडलो की स्थापना कर सर्वोदय-विचार का अध्ययन करें।

(ऐ) भूदान से सबध रखने वाले अन्य कार्यक्रमो में योग दें। जैसे—स्वच्छ भारत-आन्दोलन, खादी-ग्रामोद्योग आन्दोलन आदि।

## बहनों से

हमारे देश के संविधान ने हमारी बहनो को भी नागरिकता के अधिकार दिये है। अब वे केवल पुरुषो की अर्धाङ्गना या वीर पुत्रो की माताएं नही रही। वे स्वयम् भी यदि चाहे तो देश के निर्माण में उतना ही हिस्सा ले सकती है, जितना पुरुष लेते है। बापू ने भारतीय नारी को जागृत कर दिया है। विनोबा ने अब उसके लिए पराक्रम का क्षेत्र खोल दिया है। जो बहने आज तक इस दुनिया मे शामिल हुई है उनके काम को जब हम देखते है, तब दग रह जाते है। हृदय परिवर्तन के प्रसगो की उन्होने मानो गगा-सी बहाई है। समाज-जीवन में स्त्री का हिस्सा बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसलिए हम मानते है कि यह क्रान्ति तभी सफल होगी जब बहने इसमे बडी सख्या मे जुट जायेगी।

बहनो के लिए कार्यक्रम निम्न प्रकार है

(अ) अपनी जमीन दे, या अपने कुटुम्बियो या सबधियो से दिलावे।

(आ) अलकार दान दे।

(इ) भूदान यात्राएं करे। विशेषत घर-घर जा कर स्त्रियो को भूमिदान का विचार समझाने की कोशिश करें।

(ई) अपने घर मे पुरुषो से कह दे कि हमारे लिए सग्रह मत बढाइये, हमे कम खर्च का और श्रमनिष्ठ जीवन जीना है।

(उ) भूमिहीन-परिवारो में जा कर उनकी स्त्रियो से मिले तथा स्नेह बढावे।

(ऊ) भूदान-साहित्य का प्रचार करे। ऐसा पाया गया है कि इसमे वे अक्सर पुरुषो से अधिक सफल हो सकती है।

## पक्षों और संस्थाओं से

भारत के राजनीतिक पक्ष के जो प्रमुख लोग है, उनमें काग्रेस और समाजवादी पक्ष ऐसे है, जिन्हे बापू की कुछ-न-कुछ महान् परम्पराएं विरासत में मिली है। उन पक्षो के लोगो ने बापू के नेतृत्व मे कधे से कधा लगा कर आजादी के सग्राम में भाग भी लिया है। ऐसी महान् परम्पराओ के बीच पले इन राजनीतिक पक्षो से सहायता पाने का पूरा हक भूदान-आन्दोलन को है। क्योकि इस आन्दोलन के नेता और कार्यकर्ता भी बापू की रहनुमाई में उसी ध्येय-पथ पर चल रहे है। वे भी अभी-अभी तक इन राजनीतिक पक्षो के नेताओ के साथ एक ही क्षेत्र मे काम करते थे। ऐसे एक परिवार-भावना से जुडे हुए बन्धुजन भूदान-यज्ञ के निमित्त फिर आज एक मच पर आ रहे है। बीच का सत्ता-प्राप्ति के बाद का एक समय ऐसा गुजरा, जब हम सब लोग, विशेषत ये दोनो पक्ष, एक-दूसरे से इतने बिछुड गये थे और बीच मे इतनी गहरी खाई पड चुकी थी कि कभी ये लोग साथ थे भी—ऐसा नही महसूस होता था। आज यह खाई पूरी तो नही पट सकी है, लेकिन स्वराज्य के बाद पहली बार भूदान के मच पर सब एकत्र होने लगे। हर प्रदेश मे अब ऐसे पावन दृश्य दिखायी देते है। लक्ष्य की समानता ने अब उन्हे और भी नजदीक ला दिया है। इन पक्षो ने जो क्रातिकारी ध्येय समाजवादी रचना का प्रस्तुत किया है, उस ध्येय की ओर जनशक्ति द्वारा पहुँचने का अमली रास्ता भी भूदान-यज्ञ बता रहा है। इसलिए परस्पर मिलने, विचार-विनिमय करने और एक दूसरे के सहयोग की भूमिका तैयार होने लगी है।

बन्धुत्व और ध्येय-सिद्धि का सत्पथ प्रस्तुत कर के भूदान-यज्ञ इन राजनीतिक पक्षो से प्रत्यक्ष सहयोग का हार्दिक आवाहन कर रहा है। कांग्रेस के महान् नेताओ ने इसमे हार्दिक सहानुभूति बतलायी है, सहयोग भी किया है। प्रजा-समाजवादी पक्ष के प्रमुख नेता तो इस काम को अपना ही काम मानते है।

अब इन पक्षो के अधिकाधिक सहयोग की आवश्यकता भूदान-यज्ञ-आन्दोलन महसूस कर रहा है। सन् '५७ का समय निकट आ रहा है। सारी शक्ति इसमे लगाने से इन पक्षो के आर्थिक क्रांति के ध्येय की पूर्ति भी हो सकती है। राजसत्ता द्वारा जो भी करना हो, उसमे किसी का प्रतिबन्ध नही है, परन्तु लोकशाही द्वारा जो करना है, उसके लिए यही एक ऐसा कार्यक्रम है जो स्वराज की लडाई के दिनो के समान कधे से कधा लगा कर कर सकते है। ऐसा करते-करते जो समान ध्येय वाले पक्ष है, वे अधिक निकट आवेगे और पक्षातीत राजतंत्र की बुनियाद मजबूती से डाली जायगी।

आज हमारे देश की आन्तरिक स्थिति इतनी क्षोभजनक है कि यदि हम सब लोग कधे से कधा लगाकर देश-हित का कार्य नही करते है, तो भविष्य अधकारमय दिखायी देता है। सब पक्ष इस दिशा से मार्ग खोज रहे है। परन्तु ध्येयमत्र के साथ-साथ यदि हम शान्तिमय कार्यक्रम भी जनता को न दे तो परिस्थिति मे अधिक उलझने पड सकती है। सत्ता द्वारा जो कार्यक्रम चल रहे है वे जनशक्ति को विधायक शान्तिकारी रूप देने वाले नही है। भूदान-यज्ञ ने शुरू से यह दावा किया है और इसी आधार पर सबसे सहयोग की मांग भी की है। विनोबा

ने इसीलिए कॉंग्रेस-अध्यक्ष से सत्याग्रही भाषा मे मार्मिक अपील की है। हम आशा करते है कि य दोनो महान् पक्ष इस अपील का साथ देंगे।

उत्तर प्रदेश मे राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ ने भी भूदान मे मदद की है। भूदान-आन्दोलन भारत की सस्कृति के पुनरुत्थान का आन्दोलन है। इससे भारतीय सस्कृति की अस्मिता अधिकाधिक चमकेगी। इस हालत मे भारतीय सस्कृति की उद्घोषक राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ जैसी सस्था को भी इसमे भाग लेने का आवाहन यह आन्दोलन कर सकता है।

कम्युनिस्ट पार्टी गरीबो के लिए काम करने का दावा करती है। गरीबी यदि विना किसीको कत्ल किये मिट सकती है तो क्या उसे कम्युनिस्ट भाई नही चाहेगे ? भूदान-आन्दोलन अहिंसक ढग से गरीबी मिटाने का दावा करता है। इसलिए गरीबो का हित चाहनेवाले कम्युनिस्ट भाइयो को भी यह आन्दोलन आवाहन करता है।

पक्षो तथा सस्थाओ के लिये कार्यक्रम निम्नलिखित है

अ अपने हरएक सदस्य से षष्ठाश भूमि का सपत्ति की माग करे।

आ हरएक सदस्य के लिए कुछ न कुछ समय भूमि दान में देना अनिवार्य करे।

इ इर्द गिर्द जो भूमिदान सेवक हो उन्हे पूरी सहायता देने की सूचना अपने सदस्यो को दें।

ई साल में कम-से-कम अमुक समय भूदान के काम मे लगाने का तय करे।

उ अपने कार्य-प्रदेश मे भूमि प्राप्ति और वितरण की पूरी जिम्मेदारी उठा ले।

ऊ निश्चित लक्ष्याक तय कर उसे पूरा करने तक अपनी अधिकाश प्रवृत्तियाँ स्थगित कर दे।

ऋ. सन् '५७ तक अपनी सस्था को काम मे लगा दे।

इन सारे राजनीतिक और सामाजिक पक्षो वाली सस्थाओ मे सहयोग की अपील करते हुए भूदान-आन्दोलन यह माँग करता है कि वे इस आन्दोलन मे कूदे, मदद करे। देश के हित मे साथ दे, परन्तु पक्ष-दृष्टि रखकर नही। पक्ष-भावना से दूर रहकर ही वे इसमे भाग ले। क्योकि गरीबो के हित के कार्य मे, क्रान्ति के काम मे जैसे जाति, वर्ण, धर्म नही देखा जाता वैसे ही पक्ष भी नही देखे जाते। गाँव मे आग लगने पर जब सब लोग उसे बुझाने दौडते है,तो यह नही देखते कि हम अमुक पक्ष के बनकर आग बुझा रहे है। भूदान-यज्ञ देश मे जो विधायक क्रान्ति लाना चाहता है, उसकी यही शर्त है कि सब बन्धुत्व मे बंधकर इसमे भाग ले। भूदान-आन्दोलन सत्ताकाक्षी आन्दोलन नही है, अत यह शर्त किसी पक्ष के लिए बाधक नही हो सकती। इसकी एक ही हार्दिक अपील है कि गरीबो के हित के काम में सब लोग पक्षभेद भूलकर पूर्ण सहयोग दे और जबतक लक्ष्य पूरा न हो, सहायता देते रहे। यह काम अब विनोबा का नही, सारे देश का है।

## कार्यकर्ताओं से

किसी आन्दोलन को जीवित रखकर चलाने की शक्ति कार्यकर्ताओ में ही होती है। भूमि लेनेवाले और देनेवाले दोनो

तैयार है। पर कार्यकर्ता माँगने और बाँटने को तैयार नही, तो क्रान्ति फेल हो जायगी। कार्यकर्ता आन्दोलन की रीढ होता है। भूदान-आन्दोलन जब तक भूमि-प्राप्ति का आन्दोलन था, तब तक तो गनीमत थी, परन्तु जब वितरण और निर्माण का कार्य सिर पर आया है तब कार्यकर्ताओ की आवश्यकता भी तीव्र रूप से महसूस होने लगी है। जब तक प्राप्ति का काम था, कार्यकर्ताओ से एक वर्ष की माँग की गयी थी, फिर परधाम आश्रम की सस्था को इस यज्ञ में अर्पित कर विनोबा ने रचनात्मक कार्य-कर्ताओ से ज्यादा वक्त की माँग की। कुछ ही दिनो बाद इस माँग को सर्व-सेवा सघ ने अपने ऊपर उठा लिया और सबका आवाहन किया। अन्त में बोधगया-सम्मेलन के अवसर पर श्री जयप्रकाश नारायण ने जीवनदान की प्रेरणा देकर पूरा समय देनेवाले कार्यकर्ताओ का आवाहन किया। श्री जयप्रकाश नारायण की माँग पर श्रीयुत रविशकर महाराज जैसे साधु-पुरुषो ने अपना जीवन-दान किया।

विनोबा ने तेलगाना मे कहा था—वामनावतार के तीन चरण है, जिसमे से एक भूदान-यज्ञ का है। दूसरा चरण सम्पत्ति-दान के रूप मे शुरु हुआ और तीसरा चरण यह जीवनदान आरम्भ हुआ है। तीसरे चरण के रूप मे "मै सब को गरीबो की सेवा में लगानेवाला हूँ" ऐसी उनकी माँग थी जो जीवनदान के रूप में प्रकट हुई। बिहार में इस्लामपुर की सभा में विनोबा ने कहा 'भूदान-यज्ञ-आन्दोलन अब उस दशा पर पहुँच गया है जो अभिमन्यु की हुई थी। इस चक्रव्यूह को या तो तोडना है या खत्म हो जाना है।' निःसन्देह अब तो कार्यकर्ताओ को इस

आन्दोलन मे साल, छह मास के लिए नही आना है। साल-दो साल की अपील तो राजनीतिक पक्षो या विद्यार्थियो से है। इस काम मे जीवन अर्पित कर देने की अपील तो वे कार्यकर्ताओ से ही कर रहे है, जो कि इसके आधार है। इसलिए वे अब इसे 'आन्दोलन' नही 'आरोहण' कहते है।

जीवनदान नाम रहे या न रहे, इस काम मे पूरा समय देनेवाले कार्यकर्ताओ की जरूरत अब आ पडी है, यह स्पष्ट है। इसके लिए उन्होने वानप्रस्थाश्रम की प्राचीन सस्था को भी पुनरुज्जीवित करने का सतत प्रयत्न किया और कर रहे है। यदि यह काम केवल भूमि-प्राप्ति और भूमि-वितरण का ही होता तो कोई बडी बात न थी, परन्तु सर्वोदय-समाज की रचनानुसार जगह-जगह जो रामराज के नमूने खडे करने है, उनके लिए ही ऐसे कार्यकर्ताओ की जरूरत है, जो इसमे अपने को खपा दे।

इसलिए वे रचनात्मक कार्यकर्ताओ से, गाधी-सेवको से विशेष अपेक्षा रखते है, क्योकि गाधीजी की तालीम मे तपे हुए महान् सेवक यदि इस काम को उठा लेते है तो आन्दोलन ऐसा प्राणवान् हो उठता है, जो गाधीजी के समय की याद दिला देगा। गाधीजी के मार्ग पर चलकर ही भूदान-यज्ञ अपने कदम आगे बढा रहा है। ऐसी हालत मे स्वभावत रचनात्मक कार्यकर्ताओ से अपेक्षा की जाती है। सत्ता-जाल से दूर रहकर जो सैकडो गाधी-सेवक रचनात्मक काम मे वर्षों से लगे है उनको अब यह आन्दोलन गाधीजी के नाम पर आवाहन कर रहा है। क्योकि गाधीजी के सिद्धान्त आज युग की समस्या की कसौटी पर चढे

हुए है। अब राजनीतिक क्रान्ति के बाद आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति यदि हम गाधीजी के ही रास्ते पर चल कर जनशक्ति के द्वारा नही लाते है तो अहिसा की विधायक शक्ति का आविष्कार हो नही सकता।

युग की आकाक्षा के साथ जब विधायक पुरुषार्थ जुटता है तब क्रान्ति होती है। इस क्रान्ति मे युग की आकाक्षा साफ दीखती है। बाकी रहा, विधायक पुरुषार्थ। इसमें तीन कडियाँ चाहिए योग्य नेतृत्व, कार्यकर्ता का सहयोग और जनता का साथ। भूदान-आरोहण में हमारे पास विनोबा का योग्य नेतृत्व है। लाखो किसानो ने अपने हृदय के टुकडे जैसी जमीनें देकर यह भी सिद्ध कर दिया है कि इस क्रान्ति में जनता का साथ है। क्रान्ति की एक ही कडी बाकी है—कार्यकर्ता का सहयोग।

क्रान्ति की बाकी रही कडी को जोडने के लिए आप आइए! फसल तैयार है, काटने वाले की कमी है। आइए, भूदान-यज्ञ की फसल काटने के लिए हम अपनी पूरी शक्ति लगा दे।

परिशिष्ट—१

# भूदान प्राप्ति, वितरण, जीवनदानी तथा सपत्तिदान के
## अखिल भारतीय आँकड़े
( अप्रैल, '५५ तक )

| प्रदेश | एकड़ प्राप्त | दानपत्र सख्या | एकड़ वितरित | परिवार सख्या | जीवनदानी सख्या | सम्पत्तिदान दाता | सम्पत्तिदान रकम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बिहार | २३२६३१८ | २८८८८४ | १५६८५ | ६३७७ | १०६६ | ३२४ | २४८३४॥-) |
| बंगाल | ६४१६ | ४४४६ | १०४७ | ८४८ | २४ | ३५६ | २४१६३॥) |
| पंजाब व पेप्सू | १२५१० | २६१० | ३२५ | ६६ | १२ | २७७ | ७३६६४।॥-)४ |
| हैदराबाद | १०६८६८ | ४०१० | ३२०१६ | ६८६२ | १३ | ५ | ४२६६॥) |
| मैसूर | ६३८२ | २५५१ | — | — | ८ | — | — |
| विन्ध्य प्रदेश | ६१९८ | १२०६ | ६५० | २५५ | २६ | ७ | ३५०) |
| उत्तर प्रदेश | ५३६४३४ | १२६१२ | ६०४३६ | २२८३० | १०२ | ५२ | २७६८२।=)॥। |
| राजस्थान | ३४५८१६ | ५२८१४ | २५६२ | १५११ | ४६ | १८५ | १६१३८।-)॥ |
| उत्कल | १२८४६४ | ४०५८ | ६४५ | १०५ | ११२ | ४ | २१६३॥।) |
| मध्य प्रदेश | ८५६६६ | १५३६२ | २७७२० | ४००५ | ६१ | ३६५ | १७६२४॥।)७ |

# संपत्ति-दान-यज्ञ का दानपत्र

पू० विनोबाजी ने भारतीय परपरा के अनुसार आर्थिक क्राति की अहिंसक प्रक्रिया को सपूर्ण रूप देने की दृष्टि से लोगों से भूमि के अलावा अपनी सपत्ति की आय का छठा हिस्सा देते रहने की माँग की है। भूमि न होने के कारण जो लोग भूमिदान-यज्ञ में हिस्सा नही ले सकते, उनके लिए भी अब इस पवित्र काम में शामिल होने का रास्ता खुल गया है। दरिद्रनारायण की सेवा के लिए किये गये उनके आवाहन पर मै सपत्ति-दान-यज्ञ मे शरीक होता हूँ और सपत्तिदान-यज्ञ की योजना के अनुसार उसमें अपना हिस्सा अर्पण कर उसका विनियोग करता रहूँगा तथा उसके खर्च का वार्षिक हिसाब सर्व-सेवा-सघ को भेजता रहूँगा।

अपने इस सकल्प का अतर्यामी रूप मे मै ही साक्षी हूँ और अपनी अतरात्मा से वफादार रहूँगा। ईश्वर मुझे बल दे।

मेरी वर्तमान आय का अदाज रुपये $\frac{\text{वार्षिक}}{\text{मासिक}}$

फिलहाल हिस्से का परिमाण आय का हिस्सा वाँ

तारीख ____________________

हस्ताक्षर

पूरा नाम और पता ____________________

____________________

____________________

____________________

[ सूचना · दानपत्र भरकर प्रातीय भूदान-समिति के दफ्तर में भेज दिया जाय। ]

# सर्वोदय के सप्त ग्रंथ

**सत्य के प्रयोग**

गाधीजी—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, पूज्य गाधीजी की आत्मकथा।

**मंगल प्रभात**

गाधीजी—नवजीवन अहमदाबाद-१४ आश्रमजीवन के व्रतो पर गाधीजी के मूलग्राही विचार।

**हिन्द स्वराज्य**

गाधीजी—नवजीवन अहमदाबाद-१४ स्वराज का गाधीजी का यह चित्र १६०८ में खीचा गया था, लेकिन आज भी क्रान्तिकारी युवक उससे प्रेरणा पा सकते है।

**जड मूल से क्रान्ति**

किशोरलाल मशरूवाला—नवजीवन अहमदाबाद-१४ इस किताब मे कुछ ऐसे मौलिक विचार है जो बडे बडे महारथियो को भी अन्त निरीक्षण की प्रेरणा देंगे।

**गीता प्रवचन**

विनोबा—सस्ता साहित्य मण्डल—नई दिल्ली, विनोबा का पूरा जीवन दर्शन इसमे मनोरम शैली में पाया जाता है।

**स्वराज्य शास्त्र**

विनोबा—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली आधुनिक राजनीति पर विनोबा के गहरे विचार जिसमें पक्षरहित लोक नीति के विचार का मूल है।

**सर्वोदय**

गाधीजी तथा अन्य लेखक—नवजीवन अहमदाबाद-१४ सर्वोदय सम्बन्धी सब सकलित लेख।

[ ये किताबें जिसने नही पढी उसने सर्वोदय के बारे में कुछ नही पढा। ]

# सर्वोदय-स्वाध्याय-योजना

कार्यकर्ताओ, जिज्ञासुओं और जनता मे सर्वोदय-विचार के प्रचार की दृष्टि से 'सर्वोदय-स्वाध्याय-योजना' शुरू की गयी है, जिसके अनुसार लोगो को कम से कम मूल्य मे स्वाध्याय योग्य उत्तम और नवीनतम साहित्य नियमित रूप से मिलता रहेगा। योजना की सक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है—

१ **सभासद**—सस्था या व्यक्ति हर कोई सभासद बन सकेगा।

२ **शुल्क**—इसका वार्षिक शुल्क दस रुपये है।

३ **सुविधाएँ**—(अ) वर्ष भर तक भूदान-यज्ञ, गया (हिन्दी) या उसके बदले भूदान सबधी विभिन्न प्रांतों से निकलनेवाले साप्ताहिको या पाक्षिको मे से एक भाषा का एक पत्र दिया जा सकेगा, जिसका शुल्क प्राय तीन रुपया रहेगा। तीन रुपया से कम शुल्क की पत्रिका लेने पर शेष रुपयों का साहित्य उसी भाषा का मिलेगा और अधिक शुल्क की लेने पर तीन रु० से जितना अधिक शुल्क होगा वह सदस्यों से लिया जायगा।

(आ) बाकी सात रुपये मे हिन्दी भाषा का साहित्य दिया जायगा जिसकी पृष्ठ-सख्या लगभग २५०० क्राउन-साइज (२० × ३० × १६) की होगी।

४ **योजना का वर्ष**—योजना का वर्ष १ जनवरी से ३१ दिसबर तक माना गया है। सदस्य चाहे जब बन सकते है। साहित्य सब सदस्यो को समान रूप से दिया जायगा। भूदान पत्रिका सदस्य बनने के माह से वर्ष भर मिलती रहेगी।

५ पूरी जानकारी प्राप्त करने का तथा शुल्क भेजने का पता—

**सचालक, अ० भा० सर्व-सेवा-सघ-प्रकाशन**

राजघाट, काशी (बनारस)

**नोट :** जो सज्जन दूसरो को अपनी ओर से शुल्क देकर योजना का सदस्य बनावेंगे उनका पूरा शुल्क दस रुपया और जो स्वय सदस्य बनेंगे उनका आधा यानी पाँच रुपया सपत्तिदान माना जायगा।